वर्ष : 7, अंक : 29-30 (संयुक्तांक)

जनवरी-जून 2024

हिन्दुस्तानी भाषा भारती

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका)

"हिंदी है हम"

विशेषांक

भारतीय भाषा उत्सव

6 दिसम्बर 2023

विशेष :

ओड़िशा की साहित्य परम्परा

हिन्दुस्तानी भाषा भारती (त्रैमासिक पत्रिका) के प्रकाशित अंक

क्षेत्रीय भाषा, साहित्य, संस्कृति और लोक कलाओं पर केंद्रित विशेषांक

वर्ष : 7, अंक : 29-30 (संयुक्तांक)

हिन्दुस्तानी भाषा भारती

मूल्य : 30 रुपये

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित त्रैमासिक पत्रिका)

सम्पादक
सुधाकर बाबू पाठक

प्रबन्ध सम्पादक : **विजय कुमार शर्मा**
परामर्श सम्पादक : **सुरेखा शर्मा**
संयुक्त सम्पादक : **राजकुमार श्रेष्ठ**
सह सम्पादक : **सागर समीप**
उप सम्पादक : **सरोज शर्मा**
: **सुषमा भण्डारी**
: **डॉ. सोनिया अरोड़ा**
: **शशि प्रकाश पाठक**
सम्पादकीय सलाहकार : **डॉ. वनीता शर्मा**
: **गरिमा संजय**
: **विनोद पाराशर**
वित्तीय सलाहकार : **राम सिंह मेहता**

कार्यालय :
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034
ई-मेल : info@hindustanibhashaakadami.com
hindustanibhashabharati@gmail.com
वेबसाइट : www.hindustanibhashaakadami.com
सम्पर्क सूत्र : 09873556781, 09968097816

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के अपने विचार हैं । प्रकाशक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

सभी विवादों का निपटारा दिल्ली/नई दिल्ली की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में ही किया जाएगा ।

सम्पादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक है ।

प्रकाशक, सम्पादक व मुद्रक सुधाकर बाबू पाठक द्वारा स्वामी हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी ट्रस्ट, 3675, राजा पार्क, शकूर बस्ती, दिल्ली-110034 के लिए प्रकाशित और सन्नी प्रिन्टर्स, बी-234, नारायणा इन्डस्ट्रियल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110028 से मुद्रित ।

विषय सूची

शुभकामना संदेश 04

सम्पादकीय : 05
बच्चों को उच्च शिक्षा और प्राविधिक ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी दीजिए

रिपोर्ट : 'भारतीय भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में 'भारतीय भाषा उत्सव' का आयोजन सम्पन्न 06

एक भारत-श्रेष्ठ भारत -डॉ. सच्चिदानन्द जोशी 09

माँ, मातृभूमि और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं -प्रो. रामदेव भारद्वाज 10

रिपोर्ट : 'हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान' एवं 'गुलदस्ता-ए-गजल' पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न 14

रपोर्ट : 'भारतीय भाषा उत्सव' के सफल आयोजन की खुशी में स्वयं सेवकों के सम्मान में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 'आभार ज्ञापन एवं सम्मान कार्यक्रम' सम्पन्न 15

भारतीय भाषाओं का विकास एवं सम्मान -डॉ. महावीर सरन जैन 17

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय भाषाएँ -अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी 18

चमत्कार लोक भाषाओं का :
ओड़िशा की साहित्य परम्परा -अरुण कुमार उपाध्याय 19

हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं की अस्मिता -नीरज कृष्ण 27

भारत, भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय विकास -प्रेमपाल शर्मा 29

भाषा आक्रमण आपत्ति और इष्टापत्ती -विजय प्रभाकर नगरकर 32

पूर्वोत्तर राज्यों का भाषा संसार और हिन्दी -संगीता कुमारी सहाय 33

पवारी बोली भाषा : इतिहास, वर्तमान तथा भविष्य -डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे 35

बच्चों में मातृभाषाओं का हस्तांतरण -डॉ. दीनदयाल साहू 37

भारतीय अस्मिता की प्रतीक हिन्दी -माणक तुलसीराम गौड़ 39

'भाषा-विमर्श : माटी के शब्द बचें तो बचें कैसे!' -डॉ. रघुनाथ पाण्डेय 41

युवाओं में पनपती हिंगलिश की मानसिकता -अमित कुमार कौशल 44

रिपोर्ट : वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार पद्मश्री डॉ. शीला झुनझुनवाला की पुस्तक 'पतझड़ में बसंत' का हुआ भव्य लोकार्पण -सुषमा भण्डारी 46

रिपोर्ट : यूँ ही साथ-साथ चलते, कविताओं पर आधारित श्रुति नाट्य शैली का सफल मंचन -विजय शर्मा 47

रिपोर्ट : भारतीय परिवारों की चहेती लेखिका एवं कथाकार श्रीमती मालती जोशी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन -डॉ. वनीता शर्मा 49

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी-एक परिचय -राजकुमार श्रेष्ठ 51

वयोधर्म -मारकण्डेय शारदेय 56

शुभकामना संदेश

श्री नरेन्द्र मोदी

माननीय प्रधान मंत्री

भारतीय भाषा दिवस के उपलक्ष्य में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली में 'भारतीय भाषा उत्सव' के आयोजन के बारे में जानकर प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर स्मारिका का प्रकाशन सराहनीय है।

विविधतापूर्ण संस्कृति व विभिन्न भाषाओं के पुष्पित-पल्लवित होने की पावन धरा के रूप में भारत की समृद्ध विरासत गौरवशाली है। भारतीय भाषाओं में समाहित ज्ञान का विपुल भंडार सदियों से हमारी निरंतर प्रगति का आधार रहा है। जन-जन के भावों व विचारों को व्यक्त करने का माध्यम और एक दूसरे से जुड़ाव को मजबूती देती हमारी भाषाएं देशवासियों की एकता व एकजुटता को सशक्त करती है।

यह देखना सुखद है कि आज भारतीय भाषाएं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना रही हैं और इन्हें सीखने-बोलने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। भारत की प्रगति के साथ ही हमारी पहचान और परंपराओं में दुनिया की रुचि बढ़ रही है। विश्व की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की दिशा में ज्ञान, कला, संगीत, साहित्य और संस्कृति से जन-जन को जोड़ने में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी जैसे संस्थानों का योगदान उल्लेखनीय है।

अमृत काल में हम एक भव्य व विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तेजी से अग्रसर हैं। बदलते भारत में हमारे होनहार युवाओं को अपनी भाषा में सीखने और स्वयं को अभिव्यक्त करते हुए आगे बढ़ने का भरपूर अवसर मिले इस दिशा में हमने कई अहम् कदम उठाए हैं। इस कर्तव्य काल में अपनी विरासत पर गर्व के भाव को और मजबूत करने में भारतीय भाषाओं की बड़ी भूमिका होगी।

मुझे विश्वास है कि 'भारतीय भाषा उत्सव' के दौरान लोगों में अधिक से अधिक भारतीय भाषाओं को सीखने, भाषाई सौहार्द विकसित करने और देश के युवाओं को निज भाषा उन्नति के भाव के साथ देश व समाज के लिए निरंतर कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

'भारतीय भाषा उत्सव' के आयोजन से जुड़े सभी लोगों, भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह में सम्मानित हो रहे सभी साथियों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

श्री रामबहादुर राय

अध्यक्ष, इ. गां. रा. कला केन्द्र

यह अत्यंत ही हर्ष का विषय है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय भाषा दिवस' के अवसर पर 6 दिसंबर 2023 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में एक दिवसीय 'भारतीय भाषा उत्सव' के अंतर्गत 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

यह कार्यक्रम विकसित भारत तथा आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को मूर्त रूप देने वाला है। एक देश का सामाजिक और आर्थिक विकास उस देश की भाषाओं पर निर्भर है। भाषाएं हमारी सृजनशीलता और रचनात्मकता की द्योतक हैं। यह हमारी सांस्कृतिक चेतना और उन्नति का मूल आधार हैं। भारतीय भाषाओं प्रोत्साहित करने की दिशा में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का यह प्रयास सराहनीय है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'भारतीय भाषा उत्सव' के माध्यम से केन्द्र संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में अग्रसर है। इस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली "स्मारिका" अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सार्थक सिद्ध होगी । मैं अपनी ओर से इस कार्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा उनके सहयोगियों की सराहना करता हूं तथा उन्हे हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

श्री धर्मेन्द्र प्रधान

माननीय शिक्षा; कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्री

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर 6 दिसंबर 2023 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, नई दिल्ली में एक दिवसीय 'भारतीय भाषा उत्सव' के उपलक्ष्य में भारतीय भाषाओं के 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

भारत एक सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता वाला देश है। अनेक भाषाओं के सह-अस्तित्व में होने के कारण, भाषाई विविधता हमारी प्राचीन सभ्यता की आधारशिला भी है। भाषाएं हमारी सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी' तथा सामूहिक ज्ञान और बुद्धिमत्ता का भंडार' भी हैं जिसे संरक्षित करना हमारा परम कर्तव्य है।

भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति-2020 के तहत भारतीय भाषाओं में शिक्षा को विशेष महत्व दिया है। भारतीय भाषा उत्सव भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं छात्रों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

यह कार्यक्रम निश्चित रूप से भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण आयाम है। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली "स्मारिका" का कार्य प्रशंसनीय है। मैं इस पुनीत कार्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा उनके सहयोगियों को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

श्री जी. किशन रेड्डी

माननीय केंद्रीय पर्यटन, संस्कृति और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी संयुक्त तत्त्वावधान में भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर 6 दिसंबर 2023 को तालकटोरा इंडोर स्टेडिय नई दिल्ली में एक दिवसीय 'भारतीय भाषा उत्सव' के उपलक्ष्य में भारतीय भाषाओं के 'मेधावी छात्र एवं भा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

भारत एक बहुभाषी देश है इसकी सांस्कृतिक विविधता ही इसकी पहचान है। नई शिक्षा नीति-2020 में भी भारतीय भाषाओं को विशेष महत्व दिया गया है। "भाषाई सद्भाव" एवं भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए अनुकूल वातावरण विकसित करने की दिशा में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की यह पहल सराहनीय है। यह उत्सव भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं छात्रों के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह हम सबके लिए गौरव एवं हर्ष का विषय है कि केन्द्र भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संरक्षण के लिए कटिबद्ध है।

मुझे विश्वास है कि इस प्रयास के माध्यम से केन्द्र संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन की दिशा में अग्रसर है। इस अवसर पर प्रकाशित की जाने वाली "स्मारिका" अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय प्रयास है। मैं अपनी ओर से इस कार्य के लिए इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र तथा उनके सहयोगियों को शुभकामनाएं देता हूं।

बच्चों को उच्च शिक्षा और प्राविधिक ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार भी दीजिए।

सुधाकर पाठक
सम्पादक एवं अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

बच्चे स्वाभाविक रूप से बहुत चंचल, जिज्ञासु और नई चीजों को सीखने के अभिलाषी होते हैं । उनमें अनुकरण करने और विषयों को ग्रहण करने की तीव्र क्षमता होती है । घर और आसपास का वातावरण जितना संयमित, मर्यादित और व्यवस्थित होगा बच्चे उतने ही अनुशासित, नियंत्रित, जिम्मेदार और संस्कारित होंगे । बच्चों को अच्छे संस्कार और जीवन-मूल्यों का ज्ञान देना हर अभिभावक की नैतिक जिम्मेदारी है । संस्कार रटने-रटाने का विषय नहीं है अपितु यह एक व्यवहारिक ज्ञान पद्धति है । हम पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर कैसे पेश आते हैं, कैसे शब्दों को बरतते हैं, लोगों के बीच कैसा आचार-विचार करते हैं, ये सभी बातें हमारे संस्कार में ही निहित होती हैं । साधारणतया लोग छोटे बच्चों को गंभीरता से नहीं लेते और यह धारणा बना लेते हैं कि बच्चे हैं, कोई फर्क नहीं पड़ता । किन्तु, बच्चे घर-परिवार के बड़े-बुजुर्गों को गंभीरता से लेते हैं और बहुत बारीकी से उन्हें देख-सुन रहे होते हैं तथा उनका अनुकरण कर रहे होते हैं । हमारे बोलने का ढंग, उठने-बैठने और खाने-पीने का तौर-तरीका, लोगों के साथ घुलने-मिलने का मर्यादित दायरा और शिष्टाचार व्यवहार बच्चों के मानसिक विकास और व्यक्तित्व निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते हैं ।

बचपन बहुत छोटा होता है, किन्तु मनुष्य के जीवन का सबसे संवेदनशील समय होता है । बच्चों के चरित्र निर्माण और नैतिक मूल्यों का सृजन इसी अवस्था से शुरू हो जाता है इसलिए, बचपन बहुत बहुमूल्य होता है । बचपन में जो संस्कार बच्चे प्राप्त करते हैं वही जीवनपर्यंत उनके संबल और जीने का एक आदर्श सिद्धांत बन जाते हैं । सूचना और प्रौद्योगिकी के इस दौर में बच्चों को उच्च शिक्षा और प्राविधिक ज्ञान अवश्य दीजिए, किन्तु इसके साथ ही उन्हें अच्छे संस्कार भी दीजिए । संस्कार संस्कृति का एक अभिन्न अंग है । संस्कार ही हमारे आदर्शों, विचारों, सोचने-समझने की क्षमता, मानवीयता, करुणा, सेवा भाव तथा देश और समाज के प्रति हमारी जिम्मेदारी को निर्देशित, नियंत्रित और कार्यान्वित करते हैं । आज समाज में जिस तरह का असंयमित और अमर्यादित वातावरण पनप रहा है, उसे देखते हुए बच्चों को संस्कारित करना और भी जरूरी हो जाता है । बचपन आने वाले समय का दर्पण होता है । भविष्य में हम देश की सूरत को किस रूप में देखना चाहते हैं, यह बात बच्चों को दिए जाने वाले संस्कारों पर निर्भर करता है । अभिभावक होने के नाते हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती है कि हम अपने बच्चों को केवल यांत्रिक मानव संसाधन बनाकर तैयार न करें, जो अच्छे पैकेज वाली नौकरी करते रहें, बल्कि एक चरित्रवान मनुष्य और जिम्मेदार नागरिक भी बनाएँ ।

'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' पत्रिका के आगामी अंकों में बाल-संस्कार, चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों और संस्कृति पर केंद्रित लेखों को भी सम्मिलित करने जा रही है, अतः प्रबुद्ध लेखकों, साहित्यकारों और शोधार्थियों से इन विषयों पर केंद्रित लेख/निबन्ध आमंत्रित हैं ।

इति शुभम् ...

रिपोर्ट

'भारतीय भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में 'भारतीय भाषा उत्सव' का आयोजन सम्पन्न

अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने और भाषाई सौहार्द विकसित करने के उद्देश्य से 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार' एवं 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, दिल्ली' के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में बुधवार, 6 दिसम्बर, 2023 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में 'भारतीय भाषा उत्सव' के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ । इस विहंगम सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रपति माननीय राम नाथ कोविन्द जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री, माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी की गरिमामयी उपस्थित थीं । अन्य विशिष्ट अतिथियों के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य-सचिव डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, डॉ. अजीत कुमार, निदेशक (रा.भा.) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक मंचासीन थे । मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सामूहिक राष्ट्रगान द्वारा कार्यक्रम का विधिवत रूप से शुभारम्भ किया गया ।

चार सत्रों में विभाजित कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में अपने स्वागत वक्तव्य में श्री सुधाकर पाठक ने कहा कि छात्रों को भारतीय भाषाओं की जानकारी देने, अन्य भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करने और भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के उद्देश्य से शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने वर्ष 2022 में भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर जोर देने के लिए गठित भारतीय भाषा समिति की सिफारिशों के बाद प्रत्येक वर्ष 11 दिसम्बर को 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने देश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को चिठ्ठी लिखकर निर्देश दिया था कि उत्तर-दक्षिण के सेतु के नाम से प्रसिद्ध महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती की जयंती के अवसर पर स्कूलों और कॉलेजों में 11 दिसम्बर को भारतीय भाषा दिवस मनाया जाएगा । सरकार द्वारा घोषित 'भारतीय भाषा दिवस' का यह दूसरा संस्करण है और इस दिवस की महत्ता और उदेश्यों को देखते हुए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के कार्यों को रेखांकित किया है, साथ ही इस भव्य आयोजन में अकादमी को विशेष योगदान के रूप में जोड़ा है । हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी पिछले सात वर्षों से बोर्ड परीक्षा में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी छात्रों और उनके भाषा शिक्षकों को सम्मानित करती आ रही है । अकादमी के इस महत्त्वपूर्ण वार्षिक आयोजन का उद्देश्य सभी भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार और उन्नयन करना है । प्रत्येक आयोजन में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों की संख्या में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिला है । अब तक के आयोजन में इस सम्मान समारोह ने शैक्षिक, साहित्यिक एवं अकादमिक क्षेत्र में अपना विशिष्ट छाप छोड़ा है । अपनी मातृभाषा को लेकर समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है । जिस तरह से छात्रों, शिक्षकों, विद्यालयों, अभिभावकों ने इस आयोजन को सराहा है उससे हमारा हौसला और बुलन्द हुआ है ।

सुरेखा शर्मा

इ.गाँ.रा. कला केन्द्र के सदस्य-सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने अपने आधार वक्तव्य में कहा कि भारतीय भाषाओं को लेकर यह अब तक का सबसे महत्त्वपूर्ण आयोजन है । आज इस सभागार में वे सभी विद्यार्थी उपस्थित हैं, जिन्होंने भारतीय भाषाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं । इनमें से बहुत से विद्यार्थी ऐसे भी हैं, जिन्होंने 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि जब भी भाषा की बात या भाषा के सम्मान की बात आती है, तो अक्सर ऐसे लोगों का सम्मान किया जाता है, जो कॉलेजों में पढ़ाते हैं, विश्वविद्यालयों में पढ़ाते हैं या भाषा पर किताब लिखते हैं । यह संभवत: अपने आप में अनूठा उदाहरण है, जिसमें हम उन शिक्षकों को सम्मानित कर रहे हैं, जिन्होंने विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों को प्रेरित कर भाषा की के प्रयोजनार्थ अग्रसर किया है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो वह कोई भाषा नहीं जानता । वह सबसे पहली भाषा वही सीखता है, जो उसकी माँ उसे सिखाती हैं, इसीलिए उसे मातृभाषा की संज्ञा दी

गई है । उन्होंने कहा कि विदेशों में भारतीय भाषाओं को सिखाया जा रहा है । सबसे अनूठी बात यह है कि देश-दुनिया में भारतीय भाषाओं के प्रति रूझान बढ़ा है । हमारी भाषाएँ बहुत प्राचीन हैं, जिन्होंने हमारी युवा पीढ़ी को जोड़ने का काम किया है । हमें अपनी भाषा को बढ़ावा देना होगा, तभी गुलामी की जंजीरे टूटेंगी । भाषा वह माध्यम है जिससे कोई भी समाज अपना ज्ञान, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता है । किसी भी व्यक्ति की सोचने, अनुसंधान करने, तर्क व निर्णय करने की प्रक्रिया मातृभाषा में ही होती है इसीलिए सरकार ने नई शिक्षा नीति में तकनीकी, उच्च व चिकित्सा शिक्षा को मातृभाषा में पढ़ाये जाने का प्रावधान किया है। हमारी नई शिक्षा नीति सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण, विकास व उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में भारत सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है ।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्रों और भाषा शिक्षकों को देखकर मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है । इतना विराट, विशाल और वैभवशाली भारत आज मेरे सामने है । इस विहंगम दृश्य को देखकर कौन मुग्ध और मोहित नहीं होगा । मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आज माली और फूल एक साथ बैठे हैं । शिक्षक के रूप में आप सभी गुरूजन माली और शिष्यों के रूप में उपस्थित सभी फूल हैं। मैं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा देश के भविष्य और भविष्य के निर्माताओं को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने हेतु भारतीय भाषा उत्सव आयोजित करने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ । हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है । सचमुच भाषा हमें गढ़ती है और अपनी मिट्टी से जोड़ने का काम भी करती है । भारत केवल प्राचीन सभ्यता के लिए ही नहीं, अपितु अपनी संस्कृति और भाषाई संस्कृति के लिए भी जाना जाता है । भाषा ही हमारे भीतर आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन का विकास करती है । हमें संस्कारित करने के साथ मानवीय मूल्यों और मान्यताओं से भी जोड़ती है ।

उद्घाटन सत्र के समापन में इ.गाँ.रा. कला केन्द्र के राजभाषा विभाग के निदेशक डॉ. अजीत कुमार ने सभी का आभार ज्ञापन करते हुए कहा कि चिन्नास्वामी सुब्रह्मण्यम भारती जी की जयंती को 'भारतीय भाषा उत्सव' के रूप में मनाने से राष्ट्रीय एकता मजबूत होगी और आने वाले वर्षों में इससे भी वृहत कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा । कार्यक्रम में उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का शुभकामना सन्देश पढ़कर सुनाया । भाषा उत्सव के दूसरे सत्र में 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में भारतीय भाषाओं में 90 प्रतिशत या इससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले दिल्ली एवं गुरुग्राम के प्रतिष्ठित 268 विद्यालयों 8166 मेधावी छात्रों को 'भाषा दूत सम्मान', शत-प्रतिशत (100%) अंक प्राप्त करने वाले 145 मेधावी छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' एवं 9 भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिन्धी और उर्दू) के 742 भाषा शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया । अपने-अपने विद्यालयों की बर्दी में सु-सज्जित छात्रों और शिक्षकों की उपस्थिति से ऑडिटोरियम शोभायमान था और यह दृश्य अपने आप में बहुत अद्भुत और अप्रतिम रहा ।

कार्यक्रम के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में नई दिल्ली नगर निगम के उपाध्यक्ष श्री सतीश उपाध्याय जी, विशिष्ट अतिथियों के रूप में शिक्षाविद् एवं जेल सुधारक डॉ. वर्तिका नंदा, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. गिरीश नाथ झा, राजभाषा, गृह मंत्रालय के उप संपादक डॉ. धनेश द्विवेदी, शिक्षाविद एवं लेखक डॉ. पवन विजय, डॉक्टर जीतराम भट्ट, निदेशक, डा.गो.गि.ला.शा प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, दिल्ली, डॉ. नमिता राकेश, वरिष्ठ साहित्यकार, किशोर श्रीवास्तव, लेखक, कवि व रंगकर्मी, श्री अनिल जोशी पूर्व राजनीतिक एवं पूर्व उपाध्यक्ष केंद्रीय हिन्दी शिक्षण मंडल उपस्थित थे ।

'भारतीय भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में 'भारतीय भाषा उत्सव' का आयोजन के कुछ चित्र

एक भारत-श्रेष्ठ भारत

डॉ. सच्चिदानन्द जोशी

मनुष्य के सर्वांगीण विकास में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है । सोचने, समझने और कल्पना करने की शक्ति के अतिरिक्त मनुष्य के पास अपनी विशिष्ट भाषा होने के कारण वह अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है । आज भाषा के जिस व्यावहारिक स्वरूप को हम अपने सामाजिक जीवन में अपनाते हैं, उसके विकासक्रम में कई करोड़ वर्षों की निर्मिती लगी हुई है । भाषा लोकाचार का माध्यम होती है । किसी विशेष समुदाय में बोली जाने वाली भाषा उस समुदाय की पहचान होती है । भाषा के समानान्तर उस समुदाय की संस्कृति, लोक कला, परम्परा, पर्व, साहित्य, सामाजिक मूल्य-मान्यताएँ भी साथ-साथ चलती हैं, अत: भाषा के क्षय होते ही इन सभी तत्वों का भी ह्रास होता है । भाषाविदों का मानना है कि भाषा का विलुप्तिकरण केवल भाषा तक सीमित नहीं होता बल्कि उस भाषा के प्रभुत्व क्षेत्र में आने वाले सभी कारकों का भी विलुप्तिकरण होता है । किसी भी भाषा का विलुप्त होना विश्व की सबसे दु:खद घटना है, क्योंकि भाषिक सम्पदा की क्षति को करोड़ों रूपए खर्च करके भी अर्जित नहीं किया जा सकता । किसी एक भी भाषा का मरना एक पूरी सभ्यता और संस्कृति का मरना होता है, इसीलिए मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताओं के साथ-साथ भाषाई संरचना का विकास भी होना अनिवार्य है ।

भारत विश्व में भाषाई विविधता से सम्पन्न एक अनुपम देश है । अनेक आँचलिक बोलियाँ और प्रांतीय भाषाएँ भारत को विश्व में पृथक सौन्दर्य से अभिभूत करती हैं । आज भारत विश्व में चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है । कई क्षेत्रों में भारत ने वैश्विक कीर्तिमान स्थापित किया है । औद्योगिक और वैज्ञानिक सोच के विकास के साथ भारत शिक्षा, स्वास्थ्य, साहित्य, कला, संस्कृति, आयुर्वेद, खेल, सैन्य शक्ति, पुरातात्विक सम्पदा, योग और दर्शन के लिए भी जाना जाता है । आज विश्व भारत को पूर्ण सम्मान की दृष्टि से देखता है । भूमंडलीकरण और औद्योगिक क्रान्ति के इस दौर में हम उन्नति के चरम उत्कर्ष में तो पहुँच गए, किन्तु बहुत कुछ अमूल्य धरोहरों को खोते भी जा रहे हैं । वैश्वीकरण और बाजारवाद की गलाकाट प्रतिस्पर्धा की चपेट में हमने कई भारतीय भाषाओं को खोया है । विश्व के कई भाषाई सर्वेक्षण के अनुसार भारत में दो सौ से अधिक भाषाएँ विलुप्त हो चुकी हैं और कई विलुप्त होने की स्थिति में हैं । कई भाषाएँ गम्भीर संकटग्रस्त भाषाओं की श्रेणी में हैं । भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह कोई सामान्य घटना नहीं है । सूचना एवं तकनीकी युग में भारतीय भाषाओं के क्षरण को रोकना भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती बनकर उभरी है, किन्तु इस भाषाई संकट से उबरने के लिए भारत सरकार योजनाबद्ध रूप से कार्य भी कर रही है । भाषाओं का संरक्षण भाषा के हस्तांतरण पर निर्भर करता है । हम अगली पीढ़ी को भाषा का हस्तांतरण किस हद तक और किस स्तर तक कर रहे हैं इसी पर हमारी भाषा का अस्तित्व टिका हुआ होता है । शिक्षाविदों के अनुसार किसी भी देश की उन्नति उस देश की शिक्षा नीति पर निर्भर करती है ।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 भारत सरकार की एक महत्त्वपूर्ण पहल है जहाँ सभी भारतीय भाषाओं के संरक्षण और प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए अनेक निर्णय लिए गए हैं । इसी तरह राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के अंतर्गत देश के छात्रों को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं से जोड़ने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' का अभियान भी चलाया जा रहा है । इस प्रकार की परियोजना से विद्यालय जीवन से छात्रों को प्रमुख भारतीय भाषाओं की उल्लेखनीय एकता के बारे में जानने में मदद मिलेगी, जिससे वे अन्य भारतीय भाषाओं की सामान्य व्याकरणिक संरचनाओं, लिपियों, वर्णमाला, शब्दावलियों के स्रोत और व्युत्पत्ति आदि से परिचित हो पाएँगे । इसके साथ ही छात्र अपनी मातृभाषा और अन्य भाषाओं के बीच के अन्तर और समानताओं को भी सीख पाएँगे । अन्य प्रांतीयों भाषाओं के समृद्ध इतिहास, साहित्य, संस्कृति, लोक कलाओं और पर्वों से भी परिचित हो पाएँगे । इन गतिविधियों से छात्र बृहत रूप में भारत की भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विरासत तथा वैविध्यता को जान पाएँगे और देश के अन्य भू-भाग के लोगों से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित कर पाएँगे ।

इस अभियान को प्रभावकारी और उद्देश्यपरक बनाने के लिए पिछले वर्ष 2022 में भारत सरकार द्वारा 'भारतीय भाषा दिवस' मनाने की घोषणा की गई थी । भारतीय भाषा दिवस भारतीय भाषाओं का उत्सव है जिसका उद्देश्य भाषाई सौहार्द को

शेष पृष्ठ संख्या 13 पर

माँ, मातृभूमि और मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं

मातृभाषा मात्र संवाद ही नहीं अपितु संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका है । भाषा और संस्कृति केवल भावनात्मक विषय नहीं, अपितु देश की शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान और तकनीकी विकास से जुड़ा है । मातृभाषा के द्वारा ही मनुष्य ज्ञान को आत्मसात करता है, नवीन सृष्टि का सृजन करता है तथा मेधा, पौरूष और ऋतम्भरा प्रज्ञा का विकास करता है । किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है । विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति तो मूलत: मातृभाषा से ही होती है । मातृभाषा सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना की पूर्ति का महत्त्वपूर्ण घटक है । संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट का मानना है कि अधिकांश बच्चे स्कूल जाने से इसलिए कतराते हैं क्योंकि उनकी शिक्षा का माध्यम वह नहीं है, जो भाषा घर में बोली जाती है । बाल अधिकार घोषणा पत्र में कहा गया है कि बच्चे को उसी भाषा में शिक्षा दी जाए, जिस भाषा में उसके माता-पिता, दादा-दादी, भाई-बहन व परिवार के सदस्य बातें करते हैं । भाषा भावनाओं और संवेदनाओं को मूर्त रूप दिए जाने का माध्यम है न कि प्रतिष्ठा का प्रतीक । विश्व के अन्य देशों में मातृभाषा की क्या स्थिति है, इसका वैचारिक और व्यावहारिक विश्लेषण करते हैं तब ज्ञात होता है कि विविध राष्ट्रों की समृद्धि और स्वाभिमान की जड़ें मातृभाषा से सिंचित हो रही है ।

राष्ट्र की क्षमता और राष्ट्र के वैभव के निर्माण में मातृभाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान है । आयातीत भाषाएँ न तो राष्ट्र के वैभव की समृद्धि करती है और न ही राष्ट्रत्व-भाव को जागृत करती है । संस्कार, साहित्य-संस्कृति, सोच, समन्वय, शिक्षा, सभ्यता का निर्माण, विकास और उसका वैशिष्ट मातृभाषा में ही संभव है । मातृभाषा के प्रति समर्पण और अनुराग-भाव की दृष्टि से विचार करें तो यह स्पष्ट होता है कि आज विश्व के अधिकांश देशों का इतिहास और प्रमाण यह दर्शाता है कि ये देश अलग-अलग कालखंडों में औपनिवेशिक शक्तियों के गुलाम रहे हैं परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्होंने अपनी-अपनी मातृभाषाओं को स्थापित किया । श्रीलंका, ब्राजील, मैक्सिको, चिली, कोलम्बिया, क्यूबा, जापान, चीन, इंडोनेशिया, म्यांमार, मलेशिया आदि ने मातृभाषा अपनाकर ही विकास के मार्ग प्रशस्त किए हैं । सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी, वैज्ञानिक एवं अन्य समसामायिक ज्ञान का विस्तार मातृभाषा में ही किया । चीन और जापान तो ऐसे अनुकरणीय उदहारण हैं, जिन्होंने मातृभाषा के माध्यम से विकास कर वैश्विक शक्ति के रूप में खुद को स्थापित किया । इस यथार्थ को स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि 1949 तक भूखमरी की प्रताड़ना भोग रहा चीन आज विश्व की प्रमाणिक अर्थव्यवस्था के रूप में स्थापित हुआ है तो इसका श्रेय चीन की मातृभाषा में ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन और शोध कार्यों को जाता है ।

आज भारत में मातृभाषा की उपेक्षा कर शिक्षा के माध्यम से उसे पृथक रखकर जिस प्रकार के भाषा संस्कार डाले जा रहे हैं वे घातक हैं । इस कारण शिक्षार्थी न तो अंग्रेजी भाषा जान पा रहा है और न ही मातृभाषा । मातृभाषा और लोक भाषाओं के समृद्ध भण्डार सूखते जा रहे हैं । हम भाषा संस्कार से न सिर्फ विमुख हैं अपितु उसे भ्रष्ट भी कर रहे हैं । ऊँची-ऊँची नौकरी पाने की लालसा, अंग्रेजी भाषा में ज्ञान अर्जित कराने की हठधर्मिता, बालकों के कान ऐंठकर माता-पिता एवं अध्ययन संस्थाओं द्वारा बच्चों पर दबाव डाला जाता है । स्कूल में मातृभाषा न बोलने और अंग्रेजी में संवाद और अध्ययन के लिए प्रताड़ित भी किया जाता है । फलत: बालक स्कूल में अंग्रेजी पढ़ता है, परन्तु परिवार और समाज में अपनी-अपनी मातृभाषा में संवाद करता है । उसका आधे से अधिक जीवन मानसिक रूप से अनुवाद करने, दोहरा जीवन जीने और मातृभाषा से कटकर एक कृत्रिम वातावरण में गुजर जाता है ।

इस प्रकार भाषाई साम्राज्यवाद और भाषाई उपनिवेशवाद आज न सिर्फ फल-फूल रहा है, अपितु इसे बनाए रखने और इसके सतत प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए यह मिथ्या प्रसार भी किया जा रहा है कि रोजगार और प्रतिष्ठा की भाषा अंग्रेजी ही है । इस भ्रम के परिणामस्वरूप भारत में एक भाषाई अभिजात्य वर्ग पैदा हुआ है जो अन्रेजी के माध्यम से अपने हितों का साधन करता है और शेष भाषाई समाज का शोषण करता है । शिक्षा-संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी के अनुसार, यह तर्क आधारहीन है कि अंग्रेजी के बिना व्यक्ति और देश का विकास संभव नहीं है ।

विश्व के आर्थिक एवं बौद्धिक दृष्टि से सम्पन्न देशों- अमेरिका, रूस, चीन, जापान, कोरिया, इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इजरायल में गणित एवं विज्ञान की पढ़ाई, शिक्षा एवं शासन-प्रशासन की भाषा उनकी मातृभाषा ही है । इजरायल में 16 विद्वानों ने नोबल पुरस्कार मातृभाषा हिब्रू भाषा में ही कार्य करने के आधार पर प्राप्त किया है । यह भी प्रमाणिक तथ्य है कि विश्व में सकल घरेलू उत्पादन में प्रथम पंक्ति के 20देशों का समग्र कार्य उनकी अपनी मातृभाषा में ही होता है तथा साथ ही सकल घरेलू उत्पाद में सबसे पिछड़े 20 देशों में अध्ययन-अध्यापन एवं शोध कार्य आयातीत विदेशी भाषा में होता है । आज हमें इस अभिप्रमाणित तर्क और सत्य को स्वीकार करना चाहिए कि किसी भी राष्ट्र की उन्नति और विकास का स्रोत मात्र पूंजी और तकनीकी ही नहीं, अपितु उस राष्ट्र की संकल्प शक्ति होती है और संकल्प शक्ति मातृभाषा से आती है किसी आयातीत भाषा के ज्ञान से नहीं । विश्व के अनेक राष्ट्रों के विकास और उनकी संकल्प शक्ति का मूल्यांकन करें तो यही तथ्य उभरकर सामने आता है कि मातृभाषा की अद्‌भुत शक्ति और क्षमता का कोई विकल्प नहीं।

ऐसे कई उदाहरण हैं जिनमें मातृभाषा के प्रति अनुराग और समृद्धि ने राष्ट्र के सम्मान को अभिवृद्ध किया है । दस लाख से लेकर बीस-बीस लाख की आबादी वाले देशों ने मातृभाषा में ही ज्ञान-विज्ञान-तकनीकी, शोध एवं अध्ययन-अध्यापन का आधार बनाकर अंतर्राष्ट्रीय उपलब्धियां प्राप्त की हैं । उदाहरण के लिए डेनमार्क, फिनलैण्ड, स्वीडन, नार्वे इत्यादि अनेक देश हैं जिन्होंने मातृभाषा को ही जीवन का अंग बनाया है और उनकी भाषाओं को विश्व में सम्मान के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ में भी एक सम्मानित स्वतंत्र देश का प्रतिनिधित्व करने का ओहदा प्राप्त हुआ है । उन्होंने अपनी मातृभाषा को अपने जीवन में अपनाया है । मातृभाषा को विज्ञान और तकनीकी की भाषा बनाया है । मातृभाषा को ही विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालयों और अकादमिक शोध संस्थानों की भाषा बनाया है । मातृभाषा ही शोध और अभिव्यक्ति की भाषा है। यदि चीन अन्य किसी आयातीत भाषा अर्थात् अंग्रेजी भाषा में ही खोया रहता तो आज विश्व की आर्थिक शक्ति एवं वैश्विक प्रतिस्पर्धी राष्ट्र के रूप में स्थापित नहीं हो पाता । इसी प्रकार जापान का भी उदाहरण लिया जा सकता है । द्वितीय विश्वयुद्ध में नागासाकी और हिरोशिमा की घटना के बाद जापान पूरी तरह ध्वस्त हो चुका था, टूट चुका था । उसके बाद जापान की तरक्की का आधार उसकी मातृभाषा और जापानियों द्वारा मातृभाषा को दिया गया सम्मान है । प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय, अभियांत्रिकी, चिकित्सकीय और सभी अनुसंधान एवं शोध संस्थानों में होने वाला अध्ययन-अनुसंधान जापानी मातृभाषा में होना ही जापान की तरक्की और विकास का मूलमंत्र है ।

भारत के सन्दर्भ में जब विचार करते हैं, तब हमें अत्यधिक दु:ख और निराशा का सामना करना पड़ता है । क्योंकि विश्व में सर्वाधिक आबादी वाले देश चीन से लेकर, अपेक्षाकृत अत्यन्त कम आबादी वाले देशों ने मातृभाषा के साथ-साथ राष्ट्रभाषा को न सिर्फ सुरक्षित, संरक्षित और सम्मानजनक स्थिति तक पहुँचाया है, अपितु वहाँ के नागरिकों में भी आत्मसम्मान की वृद्धि हुई है । इन राष्ट्रों के निवासी भाषा, विकास और विश्वास के लेकर किसी असमंजस्य में नहीं हैं । परन्तु 125 करोड़ से अधिक आबादी वाला देश भारत मातृभाषा में अध्ययन-अध्यापन और शोध की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक गरीब और कमजोर है । अपनी आजादी के सात दशक बाद भी भारत अपनी मातृभाषा को स्थापित नहीं कर पाया है, न ही मातृभाषा को राष्ट्रभाषा बना पाया है । परिणामस्वरूप भारत में आयातीत भाषाओं में अध्ययन-अध्यापन एवं शोध कार्य ही प्रमाणिकता का स्थान प्राप्त किए हुए है । यद्यपि भारत के संविधान में 22 भाषाओं को स्वीकृत किया गया है, फिर भी कोई भी राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई है । यह तो निर्विवाद तथ्य है कि राष्ट्र, राष्ट्रभाषा के बिना पंगु है । वह अपनी क्षमताओं को सम्पूर्ण रूप से विकसित नहीं कर सकता । एक युग था जब संस्कृत भाषा राष्ट्रभाषा रही और उस कालखण्ड में भारत विश्व में सर्वोच्च स्थान पर रहा । सातवीं-आठवीं शताब्दी तक शिक्षा, व्यापार, तकनीकी, विज्ञान, दर्शन तथा ज्ञान की विविध विधाओं में भारत सर्वोच्च था और "सोने की चिड़िया" कहलाता था । यह तभी संभव हुआ जब भारत की एक राष्ट्रभाषा रही ।

जैसे-जैसे संस्कृत और राष्ट्रभाषा का पराभव हुआ, विदेशियों के आक्रमण भी बढ़ते गये । मुहम्मद बिन-कासिम, महमूद गजनवी, तैमूरलंग, नादिरशाह, बाबर से लेकर ब्रिटिश, फ्रांस औपनिवेशिक शक्तियों के कालखण्ड तक भारत

पराधीनता की स्थिति में रहा । इस कालखण्ड में भारत में संचालित 7 लाख 32हजार गुरुकुल जहाँ संस्कृत भाषा के अध्ययन केन्द्र थे, ध्वस्त कर दिये गए । औपनिवेशिक कालखण्ड में स्वाधीनता संघर्ष के दौरान मातृभाषा के महत्त्व और उसकी भूमिका सर्वत्र स्थापित रही । क्रांतिकारियों के घोषण पत्रों से स्पष्ट होता है कि नाना साहेब पेशवा चाहते थे कि स्वाधीनता के बाद भारत में सारे काम-काज मातृभाषा में हों । शिक्षा और न्याय की मातृभाषा में मिले । बाल गंगाधर तिलक के घोषण पत्र में स्पष्ट लिखा है कि राष्ट्रभाषा का स्थान तो सिर्फ हिन्दी को ही मिल सकता है । दयानन्द सरस्वती मानते थे कि हिन्दी भाषा पूरे देश को एकता के सूत्र में बांध सकती है । सावरकर मानते थे कि स्वाधीनता के बाद अंग्रेजी भाषा का स्थान अगर कोई ले सकता है तो वह मातृभाषा हिन्दी ही है । महात्मा गाँधी तो हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने के लिए सत्याग्रह तक करने को संकल्पित थे । परन्तु स्वतंत्रता के बाद ऐसा क्या हुआ कि महात्मा गाँधी ने यह बोलना आरम्भ किया कि भारत में विज्ञान आर तकनीकी विकास अंग्रेजी के बिना संभव नहीं । यह भी तर्क दिए जाने लगे कि अंग्रेजी विश्व की भाषा है, वैज्ञानिक भाषा है, प्रतिष्ठा की भाषा है । परिणामत: हिन्दी राष्ट्रभाषा नहीं बन पाई और आजादी के बाद अंग्रेजी स्थापित हो गई । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में अंग्रेजी को 15 वर्षों के लिए संघ सरकार की भाषा के रूप में स्वीकार किया और कहा कि 1965 में संसदीय समिति की अनुशंसा से संसद में विधेयक पारित कर राष्ट्रपति की अनुशंसा द्वारा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को स्थापित किया जाएगा । परन्तु अनुच्छेद 348 में स्पष्ट किया गया कि हिन्दी भले ही आम बोलचाल की भाषा रहे परन्तु सर्वोच्च और उच्च न्यायालय में अंग्रेजी ही प्रामाणिक भाषा रहेगी । हिन्दी राष्ट्रभाषा बनाने के नाम पर विवाद, आन्दोलन और दंगे भड़कने लगे, तब 1967 में एक विधेयक पारित कर अंग्रेजी की स्थिति को बरकरार और 1968 में आंशिक संशोधन कर कहा गया कि भारत में जितने राज्य हैं, उनमें से एक भी राज्य अगर अंग्रेजी का समर्थन करेगा तब तक भारत में अंग्रेजी लागू रहेगी ।

क्या यह स्थिति ऐसी ही बनी रहेगी अथवा इसमें कुछ बदलाव भी होगा ? इस दृष्टि से यदि विचार करें तो विश्व की अन्य भाषाओं और राष्ट्रों की तरह भारत भी उन्नयन कर सकता है । यह तब जब भारत में राजभाषा हिन्दी सहित अन्य प्रादेशिक भाषाओं में ही प्राथमिक स्तर से लेकर स्नातकोत्तर अध्ययन एवं शोध कार्य होना सुनिश्चित हो, तभी मातृभाषा संपुष्ट होगी । इतना ही नहीं इन भाषाओं की, इस कार्य की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए पाठ्यपुस्तकों, पाठ्यक्रम व पाठ्यसामग्री का लेखन और अनुवाद कार्य भी विभिन्न भाषाओं के मानक स्तर तथा गुणवत्तापूर्ण होना चाहिए । इस कार्य में तकनीकी शब्दावली आयोग एवं अन्य क्षेत्रीय आयोग भी अपनी रचनात्मक भूमिका निर्वाह कर सकते हैं । तभी मातृभाषा का कुल विकसित एवं सम्पन्न होगा । भारत के विभिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली विभिन्न भाषाएँ सुदृढ़ तभी होंगी जब मातृभाषाओं में परस्पर सम्पर्क, सम्प्रेषण, समन्वय, सहयोग तथा विचारों एवं भावनाओं का विनिमय आदान-प्रदान होगा । तभी भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकेगी । हमें मातृभाषा के प्रचलन को व्यापक रूप में व्यवहार में लान होगा । भारत में 65 फीसदी से अधिक बोली जाने वाली मातृभाषा हिन्दी में विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं को एकता के सूत्र में पिरोने की क्षमता है । हिमालय से कन्याकुमारी तथा असम से सौराष्ट्र तक सम्पूर्ण सांस्कृतिक और आर्थिक विनिमय के साथ-साथ प्रशासन, व्यापार और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमता हिन्दी भाषा में है । बहुभाषिक संस्कृति को जोड़ने, उनको नेतृत्व प्रदान करने तथा भारतीयता की अवधारणा को व्यवहारिकता के धरातल पर अवतरित करने का सामर्थ्य हिन्दी भाषा में है ।

नि:संदेह न सिर्फ भारत और उप-महाद्वीपों में अपितु सम्पूर्ण विश्व में भारत के गौरव एवं ज्ञान सम्पदा और ज्ञान परम्परा को संप्रेषित करने तथा संवर्धित करने की क्षमता हिन्दी भाषा में है । तभी तो विश्व के 170 देशों में किसी न किसी रूप में हिन्दी भाषा पढ़ाई जाती है । आज विश्व के 32 से अधिक विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा का अध्ययन हो रहा है और इंगलैंड के सेंट जेम्स विद्यालय में तो 6 वर्ष तक संस्कृत भाषा पढ़ना अनिवार्य है । क्यों नहीं हम भी इस दिशा में सोचें, विचार करें और हो सके तो अनुकरण भी करें ।

-प्रो. रामदेव भारद्वाज
पूर्व कुलपति,
अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय,
भोपाल

पृष्ठ संख्या 9 का शेष

विकसित करना और नागरिकों को अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए सहज वातावरण तैयार कर प्रेरित करना है । लोगों को विभिन्न भारतीय संस्कृति, कला, भोजन, आभूषण, पहनावा आदि की विविधता का उत्सव मनाने के लिए भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता, सद्भाव और देश की अखंडता का अनुभव कराना भी इस महोत्सव का प्रमुख लक्ष्य है। भारतीय भाषा दिवस एक भारत श्रेष्ठ भारत की नींव को और भी सुदृढ़ और मजबूती प्रदान करेगा । इससे समाज में सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ने के साथ समावेशी चिंतन को भी बढ़ावा मिलेगा और भारतीय भाषाओं में प्रौद्योगिकी के नए-नए आयाम भी खुलेंगे । इससे नागरिकों में यह चेतना फैलेगी कि राष्ट्र के समग्र विकास के लिए भारतीय भाषाओं का भी विकास होना अपरिहार्य है और निज भाषा की उन्नति से ही राष्ट्र की समुन्नति अधिक गौरवमय है । 'एक भारत' के रूप में हमारी सुदीर्घ संकल्पना यह होनी चाहिए कि, भले ही हमारे बीच भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक, जातीय और भाषिक अन्तर हों, किन्तु राष्ट्र के विकासोन्मुख कार्य हेतु हम सभी एकजूट हों । राष्ट्रीयता और राष्ट्रबोध की भावना को लेकर हमारे बीच कभी भी वैमनस्यता न हों । वृहत बहुभाषी समाज में रहते हुए आपसी सौहार्द और भाईचारे की भावना को बनाए रखें और खुले हृदय से इस विचार को अंगीकार करें कि भारत हम सबकी एक साझा फुलवारी है और यही हमारा आदर्श नागरिक धर्म भी होना चाहिए । जब तक 'सबका साथ सबका विकास' की भावना समाज में नहीं पनपेगी तब तक भारत की श्रेष्ठता सम्भव नहीं है । हमारी श्रेष्ठता भारत के सर्वांगीण विकास में निहित होनी चाहिए । सभी भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार होना चाहिए, सभी भाषाओं का संरक्षण और विकास होना चाहिए । वैयक्तिक, सामाजिक और राजनैतिक स्तर पर सभी जाति, धर्मों, आस्थाओं और मान्यताओं के प्रति समभाव और आदर होना चाहिए । अपनी मौलिकता और अस्तित्व के संवर्धन के साथ-साथ दूसरों के अस्तित्व की चिंता करना ही भारतीयता होने का द्योतक है । यह भावना ही 'श्रेष्ठ भारत' के निर्माण की नींव है । राष्ट्र के विकास और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के उदेश्यों को साकार करने के लिए भारतीय भाषाओं की आवश्यकताओं को रेखांकित करना भारतीय भाषा उत्सव की विशिष्टता है ।

-डॉ. सच्चिदानंद जोशी
सदस्य सचिव,
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, दिल्ली

आगामी आयोजन

'तृतीय हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान' एवं 'साझा दोहा संग्रह' के निःशुल्क प्रकाशन योजना-2024 के संदर्भ में ।

महत्त्वपूर्ण सूचना

प्रिय मित्रो,

अकादमी ने प्रथम और द्वितीय 'हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान' का आयोजन क्रमशः 'गीत' तथा 'गजल' विधा पर किया था । अकादमी ने यह निर्णय लिया है कि इस वर्ष 'तृतीय हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान' साहित्य की 'दोहा' विधा को केन्द्र में रखकर आयोजित किया जाए और चयनित दोहों का एक साझा संग्रह प्रकाशित किया जाए ।

- योजना में सम्मिलित होने के लिए कोई सहयोग राशि, पंजीकरण शुल्क, प्रकाशन शुल्क अथवा सदस्यता शुल्क नहीं है।
- योजना में सम्मिलित होने के इच्छुक रचनाकारों से उनके 15 दोहे, संक्षिप्त परिचय और एक पासपोर्ट आकार का फोटो आमंत्रित है ।
- इस योजना में प्राप्त प्रविष्टियों में से कुल 50 श्रेष्ठ दोहाकारों का चयन निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा ।
- इनमें से चयनित सर्वश्रेष्ठ दोहाकार को एक भव्य समारोह में कुल रूपये 5100/- नगद सम्मान राशि, सम्मान-पत्र एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया जाएगा ।
- योजना में चयनित अन्य प्रतिभागियों को भी सम्मान समारोह में अंगवस्त्र एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया जाएगा । इसी अवसर पर 'साझा दोहा संग्रह' पुस्तक का लोकार्पण किया जाएगा, जिसकी एक-एक प्रति सभी रचनाकारों को भेंट की जायेगी ।
- इच्छुक रचनाकारों से आग्रह है कि अपने स्वरचित व मौलिक 15 दोहे, 15 अगस्त, 2023 तक (यूनिकोड फॉण्ट, वर्ड फाइल के रूप में) अकादमी के निम्नलिखित ई-मेल पर भेजें- hindustanibhashaakadami@gmail-com

हमें अपनी भाषाई विविधता पर गर्व होना चाहिए, हमारी भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं ।
-एम. वेंकैया नायडू (पूर्व उपराष्ट्रपति)

रिपोर्ट

'हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान' एवं 'गुलदस्ता-ए-गजल' पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रम सम्पन्न

भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार एवं सवर्धन को समर्पित संस्था 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' द्वारा रविवार, 5 नवम्बर, 2023 को एन.डी. तिवारी भवन, जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय युवा केन्द्र, आई.टी.ओ के सभागार में 'हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान' एवं 'गुलदस्ता-ए-गजल' (साझा गजल संग्रह) पुस्तक का लोकार्पण कार्यक्रम का आयोजन सम्पन्न किया गया । मंचासीन अतिथियों के रूप में मशहूर उस्ताद शायर सीमाब सुल्तानपुरी जी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा 'गुलदस्ता-ए-गजल' पुस्तक को मूर्त रूप देने में निर्णायक की महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले श्री देवेंद्र मांझी जी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वभाषा ट्रस्ट के निदेशक श्री केशव मोहन पाण्डेय जी इस सम्मान समारोह में सम्मिलित थे। हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक जी ने अपने स्वागत वक्तव्य में मंचासीन अतिथियों सहित सभी आमंत्रित अतिथियों का आभार ज्ञापित किया और अकादमी की कार्यपद्धति और इसकी भावी योजनाओं के बारे में जानकारी दी ।

'हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान' एवं नि:शुल्क पुस्तक प्रकाशन योजना हेतु अखिल भारतीय स्तर पर साहित्य की गजल विधा पर प्रविष्टियाँ आमंत्रित की गई थी । इस योजना हेतु पूरे भारत वर्ष से लगभग 175 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई थीं जिनमें से श्रेष्ठ 50 गजलकारों का निर्णायक द्वारा चयन किया गया । अकादमी का हमेशा प्रयास रहा है कि उसकी सभी योजनाएं हमेशा पारदर्शी रहें । इस योजना में भी पारदर्शिता और निष्पक्षता का पूरा ध्यान रखा गया । एक लम्बी प्रक्रिया द्वारा 175 गजलकारों में से 50 गजलकारों का चयन और उनमें से एक सर्वश्रेष्ठ गजलकार का चयन किया गया है।

विनोद पाराशर

सर्वश्रेष्ठ गजलकार के रूप में निर्णायक द्वारा मेरठ, उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ गजलकर श्री ब्रृज राज किशोर 'राहगीर' को चुना गया । इस योजना के अंतर्गत चयनित 50 गजलकारों के बेहतरीन 2-2 गजलों को संकलित किया गया है, जिसे 'गुलदस्ता-ए-गजल' के नाम से प्रकाशित किया गया है । सम्मान समारोह में मेरठ के वरिष्ठ साहित्यकार श्री बृजराज किशोर 'राहगीर' को हिन्दुस्तानी भाषा काव्य प्रतिभा सम्मान-2023 से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें शाल, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, पुस्तक 'गुलदस्ता-ए-गजल' की प्रति तथा नगद सम्मान राशि भेंट की गई । इसके साथ ही समारोह में सम्मिलित अन्य चयनित सभी गजलकारों को भी स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र और पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया गया । इस अवसर पर सभी गजलकारों ने अपनी एक-एक प्रतिनिधि गजल का पाठ भी किया ।

रिपोर्ट

'भारतीय भाषा उत्सव' के सफल आयोजन की खुशी में स्वयंसेवकों के सम्मान में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 'आभार ज्ञापन एवं सम्मान कार्यक्रम' सम्पन्न

भारतीय भाषा दिवस के उपलक्ष्य में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा बुधवार, 6 दिसम्बर, 2023 को तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत आयोजित 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' एक भव्य, सफल और अद्‌भुत कार्यक्रम रहा, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी, विशिष्ट अतिथि माननीया केंद्रीय संस्कृति एवं विदेश राज्यमंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी उपस्थित थीं। 268 विद्यालयों के 9 भारतीय भाषाओं के 8166 छात्र और 742 भाषा शिक्षकों के इस सम्मान समारोह के विहंगम दृश्यावलोकन को लेकर भारत सरकार के अनेक मंत्रालयों, शैक्षिक संस्थानों एवं मिडिया से लगातार सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं।

सीमित संसाधनों के बावजूद इतनी बड़ी संख्या में आयोजित सम्मान समारोह कार्यक्रम को सुव्यवस्थित, अनुशासित और गरिमामयपूर्ण बनाने के पीछे कई लोगों एवं स्वयंसेवकों का विशेष योगदान जुड़ा हुआ है। कार्यक्रम को आकर्षक और रोमांचक बनाने के लिए जो लोग पर्दे के पीछे काम कर रहे होते हैं, सामान्यतया उनका कहीं कोई जिक्र एवं सम्मान नहीं होता। इस परम्परा को तोड़ते हुए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के यशस्वी सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानन्द जोशी जी के मार्गदर्शन में कल वृहस्पतिवार, 21 दिसम्बर, 2023 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के बोर्ड रूम में भारतीय भाषा उत्सव कार्यक्रम की भव्यता और अपार सफलता की खुशी में स्वयंसेवकों एवं कार्यक्रम से जुड़े लोगों के श्रमदान का सम्मान करते हुए 'आभार ज्ञापन एवं सम्मान कार्यक्रम' सम्पन्न हुआ।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग के लिए आभार प्रकट करते हुए हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक जी ने कहा कि हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी जैसी एक स्ववित्तपोषित संस्था के लिए इतने बड़े स्तर पर इस सम्मान समारोह को आयोजित कर पाना बहुत मुश्किल काम था। जब योजना में सम्मिलित सभी विद्यालयों की प्रविष्टियों को एकत्रित कर सूचीबद्ध किया गया तो हमारी कल्पना से भी परे प्राप्त प्रविष्टियों की संख्या ने हमारी चिंता को बढ़ाया। एक तरफ तो खुशी भी हो रही थी कि इस वर्ष अधिक प्रविष्टियाँ प्राप्त हुई हैं, तो वहीं आयोजन कैसे और कहाँ किया जाए की चिंता भी खाए जा रही थी। हम निर्णय नहीं ले पा रहे थे कि कहाँ जाएँ और किससे कहें ? ऐसी स्थिति में डॉ. सच्चिदानन्द जोशी जी का सक्रिय सहयोग और मार्गदर्शन मिलना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। जब हमने आदरणीय जोशी को अपनी स्थिति से अवगत कराया तो उन्होंने कहा, "पाठक जी, आप भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर कार्यक्रम करिए।" उनके इतने कहने भर से मुझे जो हौसला और ऊर्जा मिली, वो क्षण मेरे लिए बहुत भावुक क्षण था। डॉ. जोशी जी लम्बे समय से अकादमी के कार्यों को देखते आ रहे हैं और अनेक कार्यक्रम में उनका सहयोग मिलता रहता है। उन्होंने हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की कार्यशैली पर इतना बड़ा विश्वास जताया इसके लिए हम उनके प्रति बहुत आभारी हैं। उन्होंने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के राजभाषा विभाग के निदेशक श्री अजीत कुमार जी सहित सभी पदाधिकारियों का भी आभार ज्ञापित किया।

डॉ. गरिमा संजय

आभार ज्ञापन के क्रम में बोलते हुए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के यशस्वी सदस्य-सचिव डॉ. सच्चिदानन्द जोशी जी ने कहा कि भारतीय भाषा उत्सव के इस अभूतपूर्व आयोजन से हमने बहुत कुछ सबक लिया है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने इतना भव्य और अद्‌भुत कार्यक्रम इससे पहले कभी नहीं देखा था जहाँ 8000 से भी अधिक बच्चे और शिक्षकों की उपस्थिति हों। कई मायनों में यह कार्यक्रम हमारी परिकल्पना से भी अधिक सफल रहा है। उन्होंने अकादमी के पदाधिकारियों एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रों की सराहना करते हुए कहा कि इतने कम समय में और कम संसाधन में भी एक स्तरीय और उत्कृष्ट आयोजन किया जा सकता है, हमें यह बात हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी से सीखने को मिली। यदि हमारे उद्देश्य सही हों, नियत सच्ची हो और हम अपने काम को लेकर समर्पित हों तो कठिन परिस्थितियों में भी बड़े-बड़े कार्य किए जा सकते हैं। सामान्यतया छोटे-छोटे आयोजनों में भी हमें कई तरह की अव्यवस्था और समस्या देखने को मिलती है। विद्यालयों के वार्षिक आयोजन में भी, जहाँ कुछ ही बच्चों का सम्मान होना होता है; ऐसे आयोजनों में भी अव्यवस्था बनी रहती है। लेकिन हम इतने बड़े स्तर के कार्यक्रम में जिस तरह की असुविधा और अव्यवस्था होने की आशा कर रहे थे, वो सब देखने को नहीं मिला। सबकुछ व्यवस्थित और नियत समय पर ही हुआ था। इतना अनुशासन, व्यवस्थापन और प्रबंधन वास्तव में ही सराहनीय है।

इस अवसर पर हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका के नवीन अंक का लोकार्पण भी किया गया। डॉ.अजीत कुमार, निदेशक (राजभाषा) को स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र भेंट

करके उन्हें सम्मानित किया गया । राजभाषा विभाग के अन्य सहयोगियों को भी स्मृति चिन्ह एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किए गए । इसी तरह दिल्ली विश्वविद्यालय के विभिन्न कॉलेजों के छात्रों को स्मृति चिन्ह, मेडल्स और प्रमाण-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया । हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की वरिष्ठ पदाधिकारी श्रीमती सरोज शर्मा जी को भाषा, शिक्षा, साहित्य और कला के क्षेत्र में किए गए उनके आजीवन सेवा और कार्यों को रेखांकित करते हुए हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की ओर से उन्हें 'सुदीर्घ सेवा सम्मान' से विभूषित किया गया । अकादमी के अन्य पदाधिकारियों सर्वश्री विजय कुमार शर्मा, राजकुमार श्रेष्ठ, विनोद पाराशर, मनोज जिन्दल, श्रीमती सुरेखा शर्मा, सुषमा भण्डारी, डॉ. वनीता शर्मा और गरिमा संजय को उनके सेवाभाव और समर्पण भाव को सम्मान देते हुए अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया ।

भारतीय भाषाओं का विकास एवं सम्मान

डॉ. महावीर सरन जैन

राजतंत्र में, प्रशासन की भाषा वह होती है जिसका प्रयोग राजा, महाराजा और रानी, महारानी करते हैं।लोकतंत्र में, राजभाषा शासक और जनता के बीच संवाद की माध्यम होती है। लोकतंत्र में, हमारे नेता चुनावों में जनता से जनता की भाषाओं में जनादेश प्राप्त करते हैं।वे भाषाएँ देश के प्रशासन की माध्यम होनी चाहिए एवं उनको लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं का माध्यम भी बनना चाहिए। भारत सरकार ने सिद्धांत के धरातल पर बीसवीं शताब्दी के आठवें दशक में, यह निर्णय ले लिया था कि जनतंत्र को सार्थक करने के लिए विभिन्न राज्यों में वहाँ की भाषा को तथा संघ के राजकार्य के लिए हिन्दी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्रशासकों को जनता के बीच काम करना है और जनता से संपर्क स्थापित करने के लिए उनकी भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है। भाषा का ज्ञान है अथवा नहीं- इसका पता किस प्रकार चलेगा। लोक सेवा आयोग परीक्षाओं का संचालन किस उद्देश्य से करता है। यह किस प्रकार पता चलेगा कि परीक्षार्थी को जनता की भाषा का समुचित ज्ञान है अथवा नहीं। जब सरकारी अधिकारी बनने की इच्छा रखने वाले परीक्षार्थी लोक सेवा आयोग की परीक्षाएँ जनता के लिए बोधगम्य भाषओं के माध्यम से देकर परीक्षा पास करेंगे तभी तो उनकी भाषिक दक्षता प्रमाणित होगी। उन भाषाओं के माध्यम से परीक्षा पास करने वाले सक्षम अधिकारी ही तो उन भाषाओं के माध्यम से प्रशासन चला पाएँगे तथा जनता सेसंवाद स्थापित कर सकेंगे।

लेखक ने सन् 1984 से लेकर सन् 1988 तक यूरोप में एक यूनिवर्सिटी में, विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। लेखक को यूरोप के 18 देशों में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यूरोप के सभी उन्नत विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषाओं के संकाय हैं। संकाय में लगभग 40 विदेशी भाषाओं को पढ़ने और पढ़ाने की व्यवस्था होती है। विदेशी भाषा का ज्ञान रखना एक बात है, उसको जिंदगी में ओढ़ना अलग बात है। यूरोप के जिन 18 देशों की लेखक ने यात्राएँ कीं, उसने पाया कि 18 देशों में से 17 देशों का सरकारी कामकाज अंग्रेजी में नहीं होता था।

भारत में 29 राज्य हैं। हर राज्य का सरकारी कामकाज उस राज्य की राज्यभाषा में होना चाहिए। संघ की राजभाषा हिन्दी है। सह राजभाषा अंग्रेजी है। संघ के राजकाज में सह राजभाषा से अधिक महत्व मुख्य राजभाषा को मिलना चाहिए।

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता बनाए रखने का मतलब क्या है। क्या परीक्षार्थी की अभिक्षमता(एपटीट्यूड) को नापने वाला प्रश्न पत्र मूलत: अंग्रेजी में ही बन सकता है। क्या भारत में ऐसे विद्वान नहीं हैं जो भारतीय भाषाओं में मूल प्रश्न-पत्र का निर्माण कर सकें। मूल अंग्रेजी के प्रश्न पत्र का अनुवाद जटिल, कठिन एवं अबोधगम्य हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में कराया जाना क्या जरूरी है। संघ लोक सेवा आयोग चाहता क्या है? क्या उसकी कामना यह है कि देश के प्रशासनिक पदों पर केवल अंग्रेजी जानने वाले ही पदस्थ होते रहें। परीक्षाओं में प्रश्न पत्र का निर्माण मूल रूप से भारतीय भाषाओं में होना चाहिए। वर्तमान स्थिति में बदलाव जरूरी है। इस साल की परीक्षा में, मूल अंग्रेजी के प्रश्न पत्र का जैसा अनुवाद भारतीय भाषाओं में हुआ है- वह इस बात का प्रमाण है कि लोक सेवा आयोग भारतीय भाषाओं को लेकर कितना गम्भीर है। हमने प्रश्न पत्र का हिन्दी अनुवाद टी. वी. चैनलों पर सुना है। हम कह सकते हैं कि हमारे लिए प्रश्न पत्र की हिन्दी बोधगम्य नहीं है। क्या लोक सेवा आयोग यह चाहता है कि जो अमीर परिवार अपने बच्चों को महँगे अंग्रेजी माध्यम के कॉन्वेन्ट स्कूलों में पढ़ाने की सामर्थ्य रखते हैं, केवल उन अमीर परिवारों के बच्चे ही आईएएस और आईएफएस होते रहें। समाज के निम्न वर्ग के तथा ग्रामीण भारत के करोड़ों-करोड़ों किसान, मजदूर, कामगार परिवारों के बच्चे कभी भी यह सपना न देख सकें कि उनका बच्चा भी कभी उन पदों पर आसीन हो सकता है।

भविष्य में, संसार में वे भाषाएँ ही टिक पाएँगी जो भाषिक प्रौद्योगिकी की दृष्टि से इतनी विकसित हो जायेंगी जिससे इन्टरनेट पर काम करने वाले प्रयोक्ताओं के लिए उन भाषाओं में उनके प्रयोजन की सामग्री सुलभ होगी।

सूचना प्रौद्यौगिकी के संदर्भ में भारतीय भाषाओं की प्रगति एवं विकास के लिए मैं एक बात की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। व्यापार, तकनीकी और चिकित्सा आदि क्षेत्रों की अधिकांश बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अपने माल की बिक्री के लिए सम्बंधित सॉफ्टवेयर ग्रीक, अरबी, चीनी सहित संसार की लगभग 30 से अधिक भाषाओं में बनाती हैं मगर वे हिन्दी, बांग्ला, तेलुगु, मराठी, तमिल जैसी भारतीय भाषाओं का पैक नहीं बनाती। मेरे अमेरिकी प्रवास में, कुछ प्रबंधकों ने मुझे इसका कारण यह बताया कि वे यह अनुभव करते हैं कि हमारी कम्पनी को हिन्दी, बांग्ला, तेलुगु, मराठी, तमिल जैसी भारतीय भाषाओं के लिए भाषा पैक की जरूरत नहीं है। हमारे प्रतिनिधि भारतीय ग्राहकों से अंग्रेजी में आराम से बात कर लेते हैं अथवा हमारे भारतीय ग्राहक अंग्रेजी में ही बात करना पसंद करते हैं, उनकी यह बात सुनकर मुझे यह बोध हुआ ।

हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है ।

-सुमित्रानंदन पंत

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं भारतीय भाषाएँ

अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी

बहुप्रतीक्षित राष्ट्रीय शिक्षा नीति के केंद्रीय मंत्रिमंडल से अनुमोदन के साथ ही एक बेहतर, समसामयिक एवं समेकित शिक्षा नीति के व्यवहार में आने की उम्मीद की जानी चाहिए । यह इसलिए भी कि यह नीति लगभग 5 वर्षों की तैयारियों के बाद सामने आई है, जिसमें यह देखना महत्त्वपूर्ण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह पहला राष्ट्रीय प्रयास है, जिसमें भारतीय भाषाओं के बारे में समग्रता से विचार किया गया है । नीति में भाषा की केंद्रीयता को इस बात से भी समझा जा सकता है कि 66 पृष्ठ के इस प्रारूप में 206 बार भाषा शब्द आया है, जिनमें से 126 बार बहुवचन के रूप में और 80 बार एकवचन के रूप में । यहां बहुवचन रूप के आधिक्य का होना इस बात को स्थापित करता है कि किसी एक भाषा और संस्कृति की बात न करके सभी भाषाओं पर केंद्रित बहुलता पर जोर दिया गया है। शिक्षा नीति में यह आत्म-स्वीकृति कि विगत वर्षों में भाषाओं के प्रति यथोचित ध्यान नहीं दिया गया है एक महत्त्वपूर्ण प्रस्थान-बिन्दु की तरह दिखता है ।

देश में भाषाओं के भी कई स्तर हैं, जिसमें राजभाषा, शास्त्रीय भाषा, आठवीं अनुसूची की भाषा जैसी कोटियाँ तो अब तक अपना स्थान बना पाईं थीं, लेकिन संकटग्रस्त भाषा का एक समेकित रूप नीतिगत दस्तावेज में पहली बार सामने आया है, जिसमें यूनेस्को द्वारा घोषित 197 भाषाओं की चर्चा के साथ लिपिहीन और संकटग्रस्त भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन की चिंता दिखती है । यद्यपि यूनेस्को की सूची से इतर देखें, तो भाषाई संकटग्रस्तता एक अवस्था है, जो भारतीय बहुभाषिकता की अधिक्रमिकता में अधिक स्पष्ट दिखती है । ऐसा नहीं है कि भाषाई संकटग्रस्तता का दबाव सिर्फ सुदूर की जनजातीय भाषाओं पर है, बल्कि यह कमोबेश सभी भारतीय भाषाओं पर है । इसमें आठवीं अनुसूची की भाषाएँ तो हैं, वे भाषाएँ भी हैं, जिसे शास्त्रीयता का दर्जा मिला चुका है । यदि जनगणना के आँकड़ों के आधार पर देखें तो विगत 30-40 वर्षों में प्राय: बड़ी भाषाओं के बोलने वालों की संख्या क्रमश: कम हुई है, जबकि देश और उस क्षेत्र की आबादी तेजी से बढ़ रही है । ऐसे में यह उचित ही है कि आठवीं अनुसूची सहित सभी भाषाओं में शिक्षण एवं अध्ययन की भाषाओं के रूप में विकसित किए जाने के प्रावधान इस शिक्षा-नीति में दिखते हैं । जिसमें उच्च गुणवत्ता की मुद्रण-सामग्री के निर्माण के साथ पाठ्यपुस्तकें, वीडियो-निर्माण, नाटक, कहानी, कविताएँ, कोश, उपन्यास, पत्रिकाएँ, वेब-सामग्री आदि के सृजन एवं प्रसार पर जोर दिया गया है, साथ ही शब्द-संपदा को अनवरत अद्यतित करने और उनके प्रसार का प्रस्ताव है, जिससे हमारी भाषाएँ अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, हिब्रू, कोरियाई और जापानी भाषाओं के समक्ष खड़ी हो सकें । इसके साथ ही मातृभाषा या प्रथम भाषा में न्यूनतम प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के व्यवस्था की परिकल्पना की गई है । बच्चों में समझ विकसित करने एवं आगे की शिक्षा के लिए क्षमता का निर्माण करने की बात तो निहायत सराहनीय है ।

शिक्षा-मनोविज्ञान और भाषाई संवर्धन की दृष्टि से मातृभाषा या प्रथम भाषा में न्यूनतम कक्षा पाँच तक की पढ़ाई का भी प्रस्ताव सन् 2030 तक ;समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना और सभी के लिए आजीवन सीखने के अवसरों को बढ़ावा देना जैसे लक्ष्यों को पाने के लिए ऐसे प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं, लेकिन चुनौतियाँ बहुत हैं। देश में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति दयनीय है । छात्र-शिक्षक का अनुपात, ढाँचागत सुविधाएं, प्रयोगशाला, पुस्तकालय, खेल के सामान आदि की स्थिति दयनीय है । जबकि शिक्षकों के प्रबंधकीय कौशल का बढ़ा हिस्सा मध्याह्न भोजन की व्यवस्था में चला जाता है। अभी एक स्थिति ऐसी भी आएगी, जिसमें मातृभाषा के चिह्नांकन के प्रश्नों से प्रशासन को गुजरना पड़े, साथ ही एक बहुभाषिक कक्षा का प्रबंधन हमेशा से चुनौती पूर्ण रहा है । सघन बहुभाषिकता वाले अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम या नागालैंड जैसे राज्यों में किसी प्राथमिक विद्यालय की एक कक्षा में मातृभाषा में शिक्षण निसंदेह बड़ी चुनौती होगी । ऐसे में भाषा शिक्षकों का समूह तैयार किए जाने पर जोर दिया जाना भी महत्त्वपूर्ण है । इसके साथ ही बचपन से ही बच्चों में कला, साहित्य, संगीत, शिल्प के साथ आगे के अध्ययनों अनुवाद एवं निर्वचन, संग्रहालय प्रशासन, पुरातत्व, कला संरक्षण, ग्राफिक डिजाइन और वेब-डिजाइन में उच्च गुणवत्ता वाले कार्यक्रम के विकास के साथ छात्रों में रचनात्मक क्षमता का निर्माण किए जाने का प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण है । साथ ही इनको सीधे रोजगार से जोड़े जाने की भी बात है, जिससे न सिर्फ स्थानीय संस्कृति, ज्ञान एवं भाषाओं का विकास होगा, बल्कि रोजगार के नए क्षेत्र सृजित होंगे । त्रिभाषा सूत्र और बहुभाषिकता को स्थानीय शिक्षा प्रणाली में सहेजने पर जोर दिया गया है । इस क्रम में मानव एवं तकनीक का समुचित उपयोग हो, सभी भाषाओं और उनसे जुड़े कला एवं संस्कृति को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से संरक्षित किया जाए, जिसमें वीडियो-निर्माण, कोश, कहानी, लोक-संगीत, नृत्य आदि को बढ़ावा दिया जाए । इस क्रम में कृत्रिम मेधा के साथ सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने का प्रयास किए जाने का भी प्रस्ताव है ।

यह पाया गया है कि देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के भाषा विभाग सिर्फ साहित्य पढ़ाने में संलग्न है और पूरे पाठ्यक्रम के ढांचे में भाषा की प्रयोजनमूलकता, भाषा-शिक्षण एवं व्यवहार, व्याकरण, कोश, भाषा-शास्त्रीय आलोचना या पाठ-विश्लेषण की प्रवृत्ति से अपने आपको दूर रखे हुए हैं । यही कारण है कि भाषा में पीएच.डी किया हुआ छात्र भी तत्भाषा की भाषा वैज्ञानिक मान्यताओं, व्याकरण, वर्तनी आदि से वंचित रह जाता है । ध्यान रहे कि इन्हीं विश्वविद्यालयों में यदि विदेशी भाषा में पढ़ाई हो रही हो, तो उनमें

शेष पृष्ठ संख्या 26 पर

चमत्कार लोक भाषाओं का

ओड़िशा की साहित्य परम्परा

अरुण कुमार उपाध्याय

अंग्रेजी काल की पुस्तकों में पढ़ाया जाता है कि ओड़िया एक स्वतन्त्र जनजातीय भाषा थी जिसका बाद में आर्यों ने संस्कृतीकरण कर दिया। पर यह भारतीय संस्कृति के केन्द्र में था, जिसके कारण यह जगन्नाथ क्षेत्र है। आज भी ओड़िया का उच्चारण शुद्ध संस्कृत जैसा ही होता है। ओड़िशा के पश्चिम में अन्तिम अक्षर का हलन्त जैसा उच्चारण होता है, यहां सभी अक्षरों का समान उच्चारण होता है। ओड़िशा के पूर्व में प्रथम अ का ओ जैसा उच्चारण होता है जैसे असमी और बंगला में। वर्तमान भारत के बाहर थाईलैण्ड, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया में भी ऐसा ही है-जैसे थाइलैण्ड के राजा भूमोबल अतुल्यतेज को भूमिबोल ओतुल्यतेज कहते थे। कम्बोडिया के राजकुमार नरोत्तम को नोरोतोम कहते थे। इण्डोनेसिया में सुकर्ण को सुकर्णो कहते थे। ओड़िशा के उत्तर में ऋ को रि तथा दक्षिण में रु जैसा पढ़ते हैं। ओड़िशा में ऋ को रि, रु, र-3 प्रकार से पढ़ते थे जैसा अपभ्रंशों से स्पष्ट है। अमृत -अमिय, गृह-घर, पृच्छति-पूछता है (हिन्दी में भी)। विश्व की सभी भाषाओं में 4 पाद के छन्द होते हैं। पर गायत्री मन्त्र में अर्थ के लिये 3 पाद हैं। गायत्री की व्याख्या के रूप में जगन्नाथ दास का भागवत होने के कारण उसमें प्रायः 3 पाद के छन्दों का प्रयोग है।

तीन प्रकार के वैदिक शब्द केवल ओड़िया में प्रयुक्त होते हैं- (1) इन्द्र पूर्व दिशा के लोकपाल थे, अतः इन्द्र के शब्द ओड़िशा से इण्डोनेसिया, वियतनाम तक प्रयुक्त होते हैं। (2) समुद्र सम्बन्धी शब्द-ओड़िशा के अतिरिक्त दक्षिण भारत के अन्य तटीय भागों में भी, (3) जगन्नाथ सम्बन्धी शब्द। बाकी शब्द पूरे भारत में वही हैं।

इन्द्र के शब्द-(1) पति अर्थ में बलमा, सजना, पराक्रमी अर्थ में चुतिया, बड़ा-

यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते।

यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत स जनास इन्द्रः॥ (ऋग्वेद 2/12/9) = जिसके बिना लोगों की विजय नहीं होती, जिसको युद्ध के समय हवि दी जाती है, जो विश्व के लिये प्रतिमान हुआ (भाषा, माप-तौल, व्यवहार के प्रमाण निर्धारित करने वाला), जो अभी तक अच्युत या अपराजित थे, उनको भी च्युत या पराजित करनेवाला व्यक्ति (सजना) इन्द्र ही है। बाद में राजा अत्याचारी हो गये, अतः चुतिया शब्द गाली हो गया। राजा, पति, गुरु आदि को सम्मान के लिये बिना नाम लिये कहते हैं-स जनः (वह व्यक्ति) अतः पति के लिये सजना प्रचलित हुआ। इन्द्र को बलम् कहते थे अतः, बलमा का अर्थ पति है। महान् अर्थ में बड़ा शब्द भी इन्द्र के लिये ही था-

बड्-महान-बण् महाँ असि सूर्य बळादित्य महाँ असि।

महस्ते महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ असि। (ऋग्वेद 8/101/11)

(2) कार्त्तिकेय के स्थान-कार्त्तिकेय ने 6 शक्ति-पीठ बनाये थे जिनको उनकी 6 माता कहते थे। इसी प्रकार बाद में शंकराचार्य तथा गोरखनाथ ने 4-4 पीठ बनाये। कार्त्तिकेय के पीठों के नाम और स्थान हैं- 1. दुला-ओड़िशा तथा बंगाल, 2. वर्षयन्ती-असम, 3. चुपुणीका-पंजाब, कश्मीर (चोपड़ा उपाधि), 4. मेघयन्ती-गुजरात राजस्थान-यहां मेघ कम हैं पर मेघानी, मेघवाल उपाधि बहुत हैं। 5. अभ्रयन्ती-महाराष्ट्र, आन्ध्र (अभ्यंकर), ६. नितत्नि-तमिलनाडु, कर्णाटक। अतः ओड़िशा में कोणार्क के निकट बहुत से दुला देवी के मन्दिर हैं। दुलाल = दुला का लाल कार्त्तिकेय।

अत्र जुहोति अग्नये स्वाहा, कृत्तिकाभ्यः स्वाहा, अम्बायै स्वाहा, दुलायै स्वाहा, नितत्न्यै स्वाहा, अभ्रयन्त्यै स्वाहा, मेघयन्त्यै स्वाहा, चुपुणीकायै स्वाहेति। (तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/1/4/1-9)

(3) शुनः इन्द्र-आकाश में शून्य में भी इन्द्र अर्थात् विकिरण है। उसी प्रकार पृथ्वी पर जिस सम्पत्ति का कोई मालिक नही होता है, वह राजा की होती है। जमीन के नीचे की खनिज सम्पत्ति भी राजा की है। वह देश के उपयोग के लिये है, विदेश भेजने के लिये नहीं। शून्य सम्पत्ति का अधिकारी होने के कारण इन्द्र शुनः है। उसकी भूमि रूपी जो सम्पत्ति है वह भुआसुनी है, जिसके भुवनेश्वर में कई मन्दिर हैं।

नेन्द्रात् ऋते पवते धाम किञ्चन। (ऋक् 9/69/6) = ऐसी कोई जगह नहीं है, जहां इन्द्र नहीं हो। वह मेघ की तरह पूरे आकाश या देश में छाया हुआ है अतः मघवा है-शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रम। (ऋक् 3/30/22)। जैसे इन्द्र शून्य में भी है उसी प्रकार कुत्ता खाली घर देख कर उसमें घुस जाता है, अतः उसे श्वान कहते हैं। अकेली स्त्री को देखकर युवक (युवन) भी उसके पीछे लग जाता है, अतः श्वन, युवन्,ा मघवन-इन 3 शब्दों के रूप एक जैसे चलते हैं- श्वयुवमघोनामतद्धिते (अष्टाध्यायी 6/1/33)

शंकराचार्य जब कश्मीर जा रहे थे तो एक लड़की एक ही माला में मणि, पत्थर और गुंजा गूंथ रही थी, आचार्य ने पूछा कि ऐसी विचित्र माला क्यों बना रही हो? लड़की ने कहा कि पाणिनि जैसे विद्वान् ने भी एक ही सूत्र में श्वन् (कुत्ता), युवन् (युवक) और मघवन् (इन्द्र) को लगा दिया था।

गुंजा मणिं काञ्चनमेकसूत्रे गन्थांसि बाले किमिदं विचित्रम।
विचारवान् पाणिनिरेक सूत्रे श्वानं युवानं मघवानमाहुः।
(शंकर दिग्विजय)

(4) छिन्नमस्ता-इन्द्र का मुख्य अस्त्र वज्र था। वज्रशक्ति को वज्र वैरोचनीये = छिन्नमस्ता कहते थे। इन्द्र की सैन्य छावनी (सम्बल) का क्षेत्र सम्बलपुर अतः छिन्नमस्ता का वह क्षेत्र है। सम्बलपुर में होने

से उनको समलेश्वरी कहते हैं। इसको वेद में वीर और श्रेष्ठ (पुरा) नारी कहा गया है जो युद्ध में साथ जाती थी-

संहोत्र स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति। वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तर:॥ (ऋक् 10/86/10)

(5) बुढ़ाराजा-शासन में बड़े-छोटे का क्रम (बपअपस सपेज) को श्रवा (रेखा, जिस दिशा में श्रवण होता है) कहते हैं। राजा के रूप में सबसे उच्च स्थान पर इन्द्र था, अत: उसे वृद्धश्रवा कहते थे, जो सम्बलपुर के स्थानीय देवता के रूप में बुढ़ाराजा हैं।

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवा ङ्क (वाजसनेयी यजुर्वेद 25/19)

(6) आखण्डल मणि-एक खण्ड का स्वामी खण्डायत है। सभी खण्डों को मिला कर उनका मालिक आखण्डल = इन्द्र है, जिनका स्थान भद्रक में है। इन्द्र का क्षेत्र होने से यहां के क्षत्रिय खण्डायत हैं, बाकी भारत में क्षत्रिय कहे जाते है।

(7) बीर-जो भूमि का उपभोग करता है, वह वीर है-वीरभोग्या वसुन्धरा। अत: इन्द्र ने जिनको जमीन की जागीर दी थी, या जो उपभोग करते थे (अत्ता), वे वीर थे। वीर राजा का दाहिना हाथ होने के कारण दक्षिण भाग में रहता था। अत: सम्बलपुर के बुढ़ाराजा के दक्षिण में अत्ताबिरा है। केवल ओड़िशा में ही जागीर भूमि को वीर कहते हैं, जैसे वीरमहाराजपुर, बीरहरेकृष्णपुर, बीररामचन्द्रपुर।

अत्ता ह्येतमनु । अत्ता हि वीर: । तस्मा दाह.. दक्षिणार्धे (दक्षिण भागे) सादयति । (शतपथ ब्राह्मण 4/4/1/9)

राज परिवार में केवल बड़ा भाई अन्न (सम्पत्ति) का उत्तराधिकारी होता है, अत: उत्तर पश्चिमी भारत में वीर का अर्थ बड़ा भाई है। अन्न को भोगने वाला अन्नाद है अत: दक्षिण भारत में अन्ना = बड़ा भाई। जिसको कुछ नहीं मिला वह स्तम्ब (सूखा वृक्ष) है अत: तमिल में तम्बी = छोटा भाई।

(8) गोजा-सूर्य से जो तेज निकलता है, वह गोजा है। विन्दु से प्रकाश शंकु के आकार में निकलता है, अत: गोजा = शंकु आकार। हर किरण सरल रेखा में जाती है, अत: गोजा या गोजी = लाठी। सूर्य किरणों का जहां तक दबाव होता है, वह ईषा-दण्ड है। यह सूर्य से उसके 3000 व्यास दूरी तक अर्थात् यूरेनस कक्षा तक है, जिसका पता पहली बार 2007 में यूरेनस तक पहुंचने वाले कासिनी अन्तरिक्ष यान से हुआ।

ईषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवस्थ:। (वाजसनेयी यजुर्वेद 1/1)=तुम ईषा या वायवस्थ (गतिशील उर्जा) हो।

विष्णु पुराण (2/8/2)-योजनानां सहस्राणि भास्करस्य रथो नव। ईषादण्डस्तथैवास्य द्विगुणो मुनिसत्तम॥ = भास्कर रथ का चक्र 9000 योजन (1 योजन = सूर्य व्यास) है। इसका 2 गुणा उसका ईषा-दण्ड है। ईषादण्ड की परिधि 18000 योजन होने से उसकी त्रिज्या या सूर्य से दूरी प्राय: 3000 योजन होगी।

गोजिता बाहू अमितक्रतु: सिम: कर्मन्कर्म्मञ्छतमूति: खजङ्कर: ।

अकल्प इन्द्र: प्रतिमानम् ओजसाथा जना वि ह्वयन्ते सिषासव: । (ऋक् संहिता 1/102/6)= गोजा हाथ वाले इन्द्र की अप्रतिम शक्ति है, उसके महान् कार्य तथा सैकड़ों साधन हैं। शक्ति के लिये इन्द्र की आराधना करते हैं।

यह शक्ति गो = किरण से उत्पन्न होती है, अत: गोजा है। इस गोजा शक्ति द्वारा विश्व का वयन होता है अत: विश्व निर्माण की शक्ति गोजा बयानी है। गोजा बयानी का क्षेत्र सूर्य क्षेत्र कोणार्क तथा भद्रक (आखण्डलमणि) के बीच केन्द्रापड़ा में है। प्राय: इसी अक्षांश पर गुजरात है।

(9) टोका-इन्द्र रुद्र के रूप में तीव्र तेज वाला है अत: इन्द्र की शिव रूपों में बुढ़ाराजा और आखण्डलमणि में पूजा होती है। रुद्र सूक्त में तोक: का प्रयोग पुत्र अर्थ में है अत: पश्चिम ओड़िशा में टोका = पुत्र। अक्षत दान मन्त्र-मा नस्तोके मा न आयौ ... (ऋक्संहिता 1/114/8, वाजसनेयी यजुर्वेद 16/16, तैत्तिरीय संहिता 3/4/11/2, 4/5/१10/3)

(10) घनघन-इन्द्र कई शत्रुओं को एक साथ पराजित करता था। इस के लिये वह घन-घन (वर्षा की बून्दों की तरह बाण छोड़ता था। अत: ओड़िया में घन-घन का अर्थ है लगातार।

आशु: शिशानो वृषभो न भीमो घनाघन: क्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रंदनोऽनिमिष एक वीर: शतं सेना अजयत साकमिन्द्र: ॥ (ऋक् संहिता 10/103/1, सामवेद 1849, अथर्व संहिता 19/13/2, वाजसनेयी यजुर्वेद १७/३३, तैत्तिरीय संहिता ४/६/४/१, निरुक्त 1/15)

(19) जगन्नाथ के 2 रूप-गीता में जगन्नाथ का 2 रूपों में वर्णन है। योगमार्ग के अनुसार भगवान की सभी विभूतियों को क्रमश: योगसाधना द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। योग मार्ग द्वारा क्रमश: उन्नति कर जिस स्थिति की मनुष्य कल्पना करता है वह महापुरुष रूप है। इस रूप में जगन्नाथ को गीता में महा बाहु कहा गया है। इस रूप में अच्युतानन्द ने उनका वर्णन किया, अत: उनका नाम भी महापुरुष हुआ। जो जैसी आराधना करता है, भगवान् भी उसे वैसे ही पूजते हैं-

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम्। (गीता 11/23) ये यथा मां प्रपद्यन्तेतांस्तथैव भजाम्यहम् (गीता 4/11)

विश्व के स्रोत के रूप में भगवान् हमारी कल्पना से परे हैं। यह पुराण पुरुष हैं जिसका भागवत में वर्णन है। यह अति-बड़ा (महा पुरुष से बड़ा) है, अत: इस रूप में वर्णन करने वाले जगन्नाथ दास को अतिबड़ी कहा गया-

त्वमादिदेव: पुरुष: पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
(गीता 11/38)

(12) प्रथम राम-धान आदि वजन करने के लिये एक के बदले हम राम कहते हैं, उसके बाद 2, 3, आदि गिनते हैं। इसका कारण है कि

जगन्नाथ अव्यय पुरुष रूप में क्षर तथा अक्षर दोनों से बड़े हैं अत: उनको उत्तम-पुरुष या पुरुषोत्तम कहते हैं। जगन्नाथ का पुरुषोत्तम रूप राम है, जो प्रथित है अत: एक का विशेषण प्रथम है। प्रथित से अंग्रेजी में फर्स्ट हुआ है। अत: प्रथम के लिए हम राम कहते हैं। कृष्ण पुरुष मर्यादा में नहीं थे, उन्होंने सदा ऐसे चमत्कार किये जो मनुष्य की कल्पना से परे हैं।

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तम: ।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथित: पुरुषोत्तम:। (गीता 15/18)

(13) इन्द्र काल- इन्द्र ने मरुत् की सहायता से देव-नागरी लिपि आरम्भ की। आज भी इसका प्रयोग इन्द्र के स्थान पूर्व में असम से मरुत् स्थान पेशावर (उत्तर-पश्चिम को मरुत् या वायव्य कोण कहते हैं) तक होता है। इसमें 33 व्यञ्जन वर्ण 33 देवों के चिह्न हैं। सभी 49 वर्ण 49 मरुतों के चिह्न हैं। चिह्न रूप में यह देवों का नगर होने के कारण देवनागरी कहा जाता है। इन्द्र ने यह लिपि आरम्भ की थी, अत: उनको लेखर्षभ कहते हैं (तैत्तिरीय संहिता 6/4/7, मैत्रायणी संहिता 4/5/8, काण्व संहिता 27/2, कपिष्ठल संहिता 42/3) तथा मार्कण्डेय पुराण का सूर्य-तनु-लेखन अध्याय। इन्द्र का क्षेत्र होने से अलेख नाम ओड़िशा में ही प्रचलित है। 1464 ईसा पूर्व में अशोक के कलिंग युद्ध के समय यहां के राजा का नाम अलेख-सुन्दर लिखा गया है (देहरादून के निकट कलसी का लेख) । पर इसे अलेक्जेण्ड्रिया का राजा माना गया था जो उस काल में नहीं था न अशोक के राज्य की सीमा वहां तक थी। समुद्र व्यापार के कारण कई नाम समुद्र तट के देशों में समान हैं-जैसे खूण्टिया (खुण्टे), नाग (नागवीथी आकाश में क्रान्तिमण्डल के उत्तर का वृत्त है, पृथ्वी पर यह विषुव के उत्तर के समुद्री मार्ग हैं), नागजाति (जापान के नागासाकी) से लेकर मेक्सिको (आस्तिक नाग = एज्टेक) तक हैं। समुद्री दस्यु को पणि कहा गया है, जिनका इन्द्र ने दमन किया था (ऋग्वेद, 8/64, 10/108 आदि) । ये वहीं होंगे जहां समुद्री व्यापार है। अत: भारत में केवल ओड़िशा में ही पणि वनवासी हैं तथा पाणि या पाणिग्रही ब्राह्मण हैं। पर भारतीय वेद पढ़ते समय केवल बाहर देखते हैं, उन्हें केवल फिनिशिअन दीखते हैं अपने देश के पणि नहीं।

समुद्री क्षेत्र सम्बन्धी शब्द-(1) खूंटिया-समुद्री जहाजों को किनारे लगाने के लिये उनको खूंटे से बान्धते हैं, तब उससे व्यक्ति या सामान उतारा जाता है या पुन: चढ़ाते हैं। तट पर भण्डार आदि रखने का दायित्व जिस व्यक्ति पर रहता था उसे खूंटिया कहते थे। महाराष्ट्र में तथा नाइजिरिया, घाना में यह खुण्टे हो गया है। (अलेक्स हेली का रूट्स)

(2) समुद्री जहाज दो प्रकार से चलते थे। जहां कोई अन्य साधन नहीं हो वहां मनुष्यों द्वारा चप्पू या बांस से चलाते थे। जहां समुद्री हवा उपलब्ध थी वहां उससे शक्ति लेकर चलाते थे। इसमें वायु शक्ति की याचना होती थी अत: इसे याचक कहते थे जो अंग्रेजी में याच हो गया है। याचक उपाधि केवल ओड़िशा तथा महाराष्ट्र में है।

(3) मार्शाघाई-समुद्र निकट की नीची भूमि घाई है। यह पानी जमा होने से चिकना (मसृण) हो जाता है अत: इसे मार्शाघाई कहते हैं (जगतसिंहपुर का एक थाना)। यह अंग्रेजी में मार्श हो गया है।

(4) इरासमा-यह भी जगतसिंहपुर का एक थाना है। इरा का अर्थ है जल का प्रवाह। अत: पंजाब तथा बर्मा की नदियों का नाम इरावती (रावी) है। जिस भूमि के दोनों तरफ समान रूप से जल हो, वह इरासमा है। यह अंग्रेजी में इरास्मस हो गया है जिसे पुन: ओड़िया, हिन्दी में जल-डमरू-मध्य अनुवादित किया गया है।

(5) मुण्ड-निर्माण का क्रम वृक्ष है उसमें मूलस्रोत को ऊर्द्ध्व कहते हैं-ऊर्ध्वमूलमध: शाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् (गीता १५/१) । मनुष्य शरीर में ऊर्द्ध्व भाग मुण्ड है अत: नदी का स्रोत भाग को मुण्ड कहते हैं। जहां तक महानदी की एक ही धारा या स्रोत है, उसे मुण्डली कहते हैं। जहां यह दो (द्वि = बाइ) धाराओं महानदी और काठजोड़ी में विभाजित हुयी, उसे बाइमुण्डी कहते हैं। यह अंग्रेजी में हेड हो गया है जिसका प्रयोग सिंचाई विभाग या द्रव-गतिकी विज्ञान में होता है। यथा बाढ़ में कहते हैं कि नराज हेड से २ लाख क्यूसेक पानी बहा।

(6) पाक-पाक का अर्थ पकाना (भोजन को) कहते हैं। इसके लिये वस्तुओं को मिलाया जाता है। ओड़िया में मिलाने को भी पकाना कहते है। समुद्र जल में सभी खनिजों का मिलन होता है अत: समुद्र तट पर पकाना का अर्थ मिलाना भी है-

एक: सुपर्ण: स समुद्रमाविवेश स इदं भुवनं वि चष्टे ।

तं पाकेन मनसापश्यमन्तितस्तं, माता रेहि स उ रेहि मातरम ।। (ऋग् वेद 10/194/4)= एक सुपर्ण (पक्षी) ने समुद्र में प्रवेश किया, उसने मन से विचार कर पाक द्वारा भुवन का निर्माण किया। उसने भूमि का माता के समान पालन (रेळ्हि) किया। भूमि ने भी उसका पुत्र समान पालन किया।

अत: जलसेना के मुख्य को सुपर्ण नायक (ओड़िशा, आन्ध्र, विजयनगर में) काहते थे। समुद्र तट पर सबसे अधिक खेती आन्ध्र में होती है अत: वहा भूमि का पालन करने वाले को रेड्डी (रेळ्हि) कहते हैं। ओड़िया में प्रेम अर्थ में रेळ्हि शब्द गेल्ह हो गया है। पाक का बहुवचन रूप है कई वस्तुओं को मिला कर नयी चीज बनाना या षड़यन्त्र करना-

यच्च स्वभावं पचति विश्वयोनि: पाच्यांश्च सर्वान् परिणामयेद्य: ।

(श्वेताश्वतर उपनिषद् 5/5) = जिस प्रकार अपने भाव से मनुष्य पकाता है, उस के परिणाम में विश्वयोनि (भगवान्) सबको उसी प्रकार पकाता है।

जगन्नाथ दास ने पाच्यांश्च को पांचे कर दिया है-जे पांचे पर र मन्द, ताहार मन्द पांचन्ति गोविन्द।

(7) अधर्म धन-अधर्म से बड़ा धन अन्त में विनाशकारी होता है-

अधर्मेणैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति।

ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति (मनु स्मृति 4/174)

= अधर्म से कुछ समय के लिए बढ़ता है (एधते = कंके), उसके बाद कुशल मंगल होता है, तब सभी शत्रुओं को जीत लेता है, किन्तु अन्त में जड़ से साफ हो जाता है।

जगन्नाथ दास ने बीच के दो क्रमों का एक शब्द में उल्लेख किया है-गला बेले-अधर्म धन बढ़े बहुत गला बेले जाये मूल सहित।

(8) कण्व शाखा के शब्द-पारम्परिक रूप से ओड़िशा में शुक्ल यजुर्वेद की काण्व शाखा का प्रचलन था। यजुर्वेद का 100 शाखा होने से उसके व्याख्या (= ब्राह्मण) ग्रन्थ को शतपथ ब्राह्मण कहते हैं। अतः यहां ब्राह्मणों की उपाधि शतपथी है। काण्व शाखा की पुस्तकों में कई विख्यात सिद्धान्त थे उनको कण्व (खना) वचन कहते हैं। शतपथ ब्राह्मण का एक और शब्द मुस्मुस् (मूढ़ी, कड़कड़ भोजन) भी केवल केन्द्रापड़ा, मयूरभंज आदि में प्रचलित है-

सर्वं च मस्मसा कुर्व्विति(शतपथ ब्राह्मण 6/6/3/10-सायणभाष्यम) मस्मसा अनुकरणशब्दोऽयं। यथा भक्षणसमये-मस्मसा शब्दं कुर्वन्ति-तथा कुर्वित्यर्थः। मृ स्मृ सा (मैत्रायणी संहिता 2/7/7) मृ स्मृ षा (पैप्पलाद संहिता 1/29/3) ये च मुटमुटा कुम्भमुष्का अयाशव (अथर्व वेद 8/6/15) सायणभाष्यम्- मुट्मुटाः = मुट्मुट् इति शब्दं कुर्वन्तः । मुट्मुट् इत्यव्यक्त शब्दानुकरणार्थे इति।

(9) राग-भारत के अन्य भागों में राग केवल संगीत के स्वरों के बारे में कहा जाता है। ओड़िया में इसका एक अलग अर्थ भी है-क्रोध। पंजाब में भजन गाने वाले को सम्मान के लिये रागी कहते हैं। ओड़िया में यह गाली है-रागी = क्रोधी। गीता में कहा है कि काम से क्रोध होता है-कामात् क्रोधोऽभिजायते (गीता 2/62)। क्रोध = राग बाद में होता है, अतः काम को अनु-राग (जिसके बाद राग हो) कहते हैं।

(10) भाव-पूरे भारत में भाव (विचार) शब्द का संज्ञा रूप में प्रयोग है, पर ओड़िया में क्रिया रूप में भी प्रयोग होता है-मूं भावुचि = मैं विचार करता हूं। गीता आदि में इसके कई प्रयोग हैं जिनका सीधा अनुवाद केवल ओड़िया में ही हो सकता है-

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः । परस्परम् भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ । 11। (गीता, अध्याय 3)

आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयम् करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि । नैतच्छठत्वं मम भावयेथा क्षुधातृषार्त्ता जननीं स्मरन्ति ।

(देवी अपराध क्षमापन स्तोत्र)

(11) भावग्रही-भावग्रही नाम केवल ओड़िशा में ही प्रचलित है। जगन्नाथ दास ने अपने भागवत में भगवान को प्रायः भावग्रही कहा है। वह भक्तों के दुःख से दुखी हो जाते हैं अतः दुखिश्याम नाम भी ओडिशा में ही है। इसका कारण है कि जगन्नाथ सभी के हृदय में रहने के कारण उनका भाव ग्रहण करते हैं तथा उनके लिये दुखी होते हैं।

(12) असना, पड़िशा-ओड़िया में असना का अर्थ बुरा या गन्दा है। यह अश्नाति = खाता है, से हुआ है। भोजन अर्थ में 3 मुख्य धातु हैं-भुज् पालनाव्यवहारयोः (पाणिनीय धातुपाठ 7/17)-पालन, रक्षण या भोजन करना (केवल शरीर रक्षण के लिये भोजन आदि लेना), अद भक्षणे (2/1) भोजन के साथ आनन्द (स्वाद), अश भोजने (9/54)-इसमे भोजन या अन्य भोग के साथ भविष्य की भी चिन्ता होती है। गीता में कहा है कि केवल वर्तमान कर्म में ध्यान होना चाहिये, भविष्य के फल की चिन्ता नहीं-कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन। (गीता 2/47)। निर्माण के बाद क्रिया रूप में सुपर्ण के 2 रूप हो जाते हैं, एक काम करता है, दूसरा उस पर नजर रखता है जिससे भूल सुधार हो सके। सभी स्वचालित यन्त्र इसी सिद्धान्त पर काम करते हैं। दोनों सुपर्ण (पक्षी) निकट में रहते हैं जिनके लिये परिषस्वजाते कहा है। ओड़िया में प्रायः मूल रूप पड़िशा है। हिन्दी में थोड़ा और बदल कर पड़ोसी बन गया। दो पक्षियों में जो कर्म में लिप्त होकर फल की चिन्ता करता है वह जीव (ईव) है। उसका आसक्ति सहित भोजन (असना) निन्दित है, अतः अन्य सुपर्ण आत्मा (आदम) अनश्नन् है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते । तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकषीति ।

(ऋक्संहिता 1/164/20, अथर्व 9/14/20, मुण्डक उपनिषद् 3/1, श्वेताश्वतर उपनिषद् 4/6

2. ओड़िशा का संस्कृत साहित्य

1. माधव निदान-आयुर्वेद के इतिहास में अति प्राचीन 3 संहिताओं चरक, सुश्रुत, वाग्भट को बृहत्त्रयी कहते हैं । इनके बाद 3 मुख्य ग्रन्थ लघुत्रयी हैं-माधवनिदान, भावप्रकाश, शाङ्र्गधरसंहिता । माधव निदान का मूल नाम रोगविनिश्चय था, पर ओड़िशा के माधव कर द्वारा रचित होने के कारण माधव निदान कहते हैं । इसकी प्रसिद्धि के कारण खलीफा हारून अल रशीद के समय इसका फारसी में अनुवाद हुआ । माधव को रोग निर्णय के कारण कर कहते थे क्योंकि हाथ की नाड़ी से रोग देखते हैं । अभी ओड़िशा में कर प्रचलित उपाधि है ।

2. कालिदास-3 मुख्य कालिदास हुए थे-एकोऽपि जीयते हन्त कालिदासो न केनचित् । शृङ्गारे ललितोद्गारे कालिदास त्रयी किमु।। (साहित्य मीमांसा-राजशेखर) । प्रथम कालिदास नाटककार थे तथा मालविकाग्निमित्र में अपने को शुंग राजा अग्निमित्र (1158-1108 ई.पू.) का समकालीन कहा है । द्वितीय कालिदास उज्जैन के विक्रमादित्य (82 ई.पू.-19 ई.) के नवरत्नों में से थे । 3 महाकाव्यों के बाद ज्योतिष ग्रन्थ ज्योतिर्विदाभरण में विक्रमादित्य तथा नवरत्नों का परिचय दिया है । इनके मेघदूत काव्य में दक्षिण ओड़िशा के स्थानों का विस्तार से वर्णन है तथा कोरापुट के रामगिरि को दण्ड के लिये स्थान कहा है, अतः इनका जन्म ओड़िशा हो

सकता है । तृतीय कालिदास मालवा के भोजवंशी राजा के समय थे तथा उनकी बल्ख विजय यात्रा में हजरत मुहम्मद से भेंट हुई थी । इनका स्थान महाराष्ट्र के पूर्णा में लिखा है ।

3. शतानन्द-इनका ज्योतिष का विख्यात ग्रन्थ है भास्वती । यह वराहमिहिर के पञ्चसिद्धान्तिका की संक्षिप्त विधि होने के कारण इसे पञ्चसिद्धान्तिका-भास्वती भी कहते हैं । ये पुरी निवासी शंकर और सरस्वती के पुत्र थे तथा कलि वर्ष 4200 (1099 ई.) में यह ग्रन्थ लिखा था । यह प्रख्यात था तथा इसके 500 वर्ष बाद रसखान के पद्मावत महाकाव्य में इसका उल्लेख है ।

4. विश्वनाथ कविराज-इनका साहित्य दर्पण अपने विषय का सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ है । यह भानुदेव (1414-1434 ई.) के आश्रित थे । इनकी अन्य पुस्तकें हैं-राघव विलास, कुवलय चरित काव्य, प्रभावती परिणय नाटिका, चन्द्रकला नाटिका, प्रशस्ति रत्नावली, काव्य प्रकाश दर्पण, नरसिंह विजय, मालती मधुकर ।

5. जयदेव-यह 12वीं सदी में हुए थे । इनका गीत गोविन्द महाकाव्य बहुत प्रसिद्ध है जिसके दशावतार स्तोत्र पर ओड़िशी नृत्य होता है । भविष्य पुराण के अनुसार इनकी एक पुस्तक निरुक्त पर भी थी । केरल के कुछ ज्योतिष ग्रन्थों ने इनकी बीजगणित पुस्तक की विधियों को उद्धृत किया है । गीत गोविन्द पर सैकड़ों टीकायें हैं जिनमें मेवाड़ के राणा कुम्भा की टीका भी है ।

6. रामचन्द्र महापात्र-इनकी उपाधि कौल भट्टारक थी । इनकी पुस्तक शिल्प प्रकाश अंग्रेजी अनुवाद के साथ 2005 में प्रकाशित हुई । बेट्टिना बाउमर, राजेन्द्र प्रसाद दास तथा एलिस बोनर ने अनुवाद किया है ।

7. संगीत नारायण-पारलाखेमुण्डी के राजा गजपति नारायण देव के आश्रित पुरुषोत्तम मिश्र द्वारा 17वीं सदी में रचित । अंग्रेजी अनुवाद सहित 2009 में प्रकाशित ।

8. विष्णु शर्मा-पञ्चतन्त्र । इनको कौटिल्य चाणक्य भी कहा जाता है जो जैन ग्रन्थों के अनुसार गोल्ल जनपद (गोलान्तरा) के थे । चणक इनके नगर का नाम था (कंस के मल्ल चाणूर का निवास) तथा इनके इलाके में कुटी में धान रखते थे अतः पारिवारिक नाम कौटिल्य हुआ । तक्षशिला में अध्यापक होने के बाद मौर्य राज्य के संस्थापक बने तथा अर्थशास्त्र लिखा ।

9. भट्ट नारायण-शैलोद्भव वंश के राजा माधवराज के काल में । वेणीसंहार काव्य ।

10. मुरारि मिश्र-अनर्घ राघव ।इसका राजशेखर द्वारा उल्लेख है ।

11. गोवर्धन आचार्य-आर्या सप्तशती ।

12. उदयन आचार्य-गोवर्धन आचार्य के अनुज । श्रीहर्ष के नैषध चरित तथा जयदेव के गीत गोविन्द पर टीका ।

13. बोपदेव का मुग्धबोध व्याकरण (13वीं सदी) ।

14. विद्याधर-एकावली, अलंकार शास्त्र की पुस्तक। नरसिंहदेव के आश्रित ।

15. श्रीधर स्वामी-गोवर्धन मठ पुरी के शंकराचार्य। भागवत पुराण की टीका ।

16. कुमारिल भट्ट-जिनविजय महाकाव्य के अनुसार इनका समय (557-493 ई.पू.) था । इनका जन्म महानदी के दक्षिण तट पर जयमंगला ग्राम में हुआ था । उज्जैन के जैन गुरु कालकाचार्य (599-527 ई.पू.) से शिक्षा ग्रहण कर वेद उद्धार कार्य आरम्भ किया तो कुछ जैनों ने इसे गुरु द्रोह कहा । इसके प्रायश्चित के लिये इन्होंने प्रयाग संगम पर आत्मदाह किया । वहां शंकराचार्य को अपने शिष्य मण्डन मिश्र (सोनभद्र तट पर निवास) की सहायता लेने को कहा । ये मीमांसा दर्शन के सबसे बड़े विद्वान् थे । इनकी पुस्तक तन्त्र वार्त्तिक की कई टीका प्रकाशित हैं ।

17. कविचन्द्र राय दिवाकर मिश्र-विजयनगर के राजा कृष्णदेवराय (1509-1530) के आश्रित । अभिनव गीत गोविन्द, भारतमाता महाकाव्य ।

18. कविचन्द्र जीवदेवाचार्य (1478-1550)-भक्ति भागवत महाकाव्य ।

19. कृष्ण मिश्र-प्रबोध चन्द्रोदय ।

20. जयदेव आचार्य-पीयूष लहरी, वैष्णवमाला ।

21. लक्ष्मीधर भट्ट-सरस्वती विजय ।

22. रामकृष्ण भट्ट-प्रतीप अलन्तम् ।

23. राय रामानन्द-प्रतापरुद्रदेव के अधिकारी । जगन्नाथ वल्लभ, गोविन्द वल्लभ । उनकी भतीजी माधवी दासी द्वारा पुरुषोत्तमदेव नाटक ।

24. जगन्नाथ मिश्र-रस कल्पद्रुम ।

25. गंगाधर मिश्र-कोसलानन्द महाकाव्य (सम्बलपुर बालांगिर के चौहान राजाओं की प्रशस्ति ।

26. वैजल देव-पटना के चौहान राजा के आश्रित । प्रबोध चन्द्रिका व्याकरण ।

27. कृष्णदास बड़जेना महापात्र- गजपति मुकुन्द देव द्वारा अकबर दरबार में दूत । गीत प्रकाश-संगीत शास्त्र ।

28. मार्कण्डेय मिश्र-दशग्रीव वध महाकाव्य, प्राकृत सर्वस्वम् ।

29. हलधर मिश्र (गजपति नरसिंहदेव काल में)-वसन्तोत्सव महाकाव्य, संगीत कल्पलता, हलधर कारिका (व्याकरण) ।

30. हरि नायक-हरि नायक रत्नमाला, विषम प्रकाश प्रबन्ध ।

31. गजपति नारायण देव (पारलाखेमुण्डी राजा)-संगीत नारायण, अलंकार चन्द्रिका ।

32. कविरत्न पुरुषोत्तम मिश्र-गजपति नारायणदेव के गुरु। यमक भागवत महाकाव्य, नीलाद्रि शतक, अनर्घराघवम् नाटक, रामचन्द्रोदय प्रबन्ध ।

33. वासुदेव रथ-गङ्गवंशानुचरितम् (1770 ई.)

34. नित्यानन्द रघुनाथ तीर्थ (17 वीं सदी)-श्रीकृष्ण लीलामृत, मुकुन्द विलास ।

35. कविचन्द्र कमललोचन खड्गराय-संगीत चिन्तामणि, गीत मुकुन्द ।

36. बलदेव विद्याभूषण (बालेश्वर के रेमुना में)-1730 में ब्रह्मसूत्र का गोविन्द भाष्य, रूपगोस्वामी की स्तवमाला पर टीका ।

37. रघुनाथ दास-काल निर्णय, श्राद्ध निर्णय, धर्मशास्त्र, न्याय रत्नावली, अमरकोष टीका, वर्धमान प्रकाश (वर्धमान व्याकरण की टीका), कारक निर्णय, उत्पल तरंगिणी, साहित्य भूषण, वनदुर्गा पूजा, कातन्त्र विस्तार आक्षेप, वैद्य कल्पलता, निगूढ़ार्थ प्रकाश आदि ।

38. योगी प्रहराज महापात्र (18वीं सदी, कोरापुट के नन्दपुर के)-विद्या हृदयानन्द, संक्षिप्त स्मृति दर्पण ।

39. राजा पुरुषोत्तम देव-त्रिकाण्ड शेष, हारावली, एकाक्षर कोष, द्विरूप कोष ।

40. शम्भुकर वाजपेयी (गंगराजा नरसिंह देव-2-1279-1303 ई. के काल में)-श्राद्ध पद्धति, विवाह पद्धति, शम्भुकर पद्धति, स्मार्त रत्नावली आदि ।

41- श्री चन्द्रशेखर सिंह सामन्त (खण्डपड़ा, 1831-1904)-ज्योतिष ग्रन्थ सिद्धान्त दर्पण (1899 में कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रकाशित, 1999 में अरुण कुमार उपाध्याय द्वारा गणितीय व्याख्या) ।

42. विश्वनाथ महापात्र-काञ्चीविजय महाकाव्य ।

आधुनिक युग के संस्कृत कवियों में चन्द्रशेखर मिश्र, प्रबोध कुमार मिश्र, सुदर्शन आचार्य, चन्द्रशेखर षडंङ्गी, प्रफुल्ल कुमार मिश्र, हरेकृष्ण शतपथी, गोपाल कृष्ण दाश आदि प्रसिद्ध हैं ।

3. पञ्चसखा कवि और पारम्परिक साहित्य

1. ओड़िया लिपि-भारत में मुख्यत: 2 प्रकार की लिपि प्रचलित थी-

(1) इन्द्र और मरुत् द्वारा देवनागरी-क से ह तक 33 व्यञ्जन वर्ण, 33 देवों के चिह्न थे । चिह्न रूप में देवों का नगर होने से इसे देवनागरी कहते थे । 16 स्वर वर्ण मिलाने से 49 मरुतों के अनुरूप 49 वर्ण हैं । इन्द्र क्षेत्र पूर्व से मरुत् कोण (उत्तर-पश्चिम) तक देवनागरी लिपि आज भी प्रचलित है, यद्यपि अक्षरों का रूप बदलता रहा है । अ से ह तक सभी वर्णों से विश्व का वर्णन होता है और उसकी प्रतिमा मनुष्य शरीर है अत: अहम् का अर्थ स्वयं है । शरीर क्षेत्र है तथा इसे जाननेवाला क्षेत्रज्ञ है, अत: क्ष, त्र, ज्ञ-ये 3 अक्षर मिलाने पर 52 सिद्ध पीठों के अनुसार 52 अक्षर हैं । इसे सिद्ध क्रम कहते हैं ।

(2) ब्राह्मी लिपि-यह स्वायम्भुव मनु (मनुष्य ब्रह्मा) या जैन परम्परा के अनुसार ऋषभ देव द्वारा आरम्भ हुई जिनको भागवत में स्वायम्भुव मनु का वंशज कहा गया है । इसमें देवनागरी लिपि के अनुसार ही अक्षरों का क्रम है, पर स्वर में ह्रस्व, दीर्घ के साथ प्लुत (3 मात्रा) भी हैं । कुछ अतिरिक्त अक्षर हैं जो देवनागरी के वर्गों में नहीं आते हैं, जिनको अयोगवाह कहते हैं । जैसे दो प्रकार के ल थे-ल तथा ळ। ळ का उच्चारण ड़ जैसा होता है । इसमें ह जोड़ने पर ळ्ह या ढ़ होता है। भारत की सभी लिपियों में ड, ढ के अतिरिक्त ड़, ढ़ का भी प्रयोग हो रहा है । ओड़िया तथा सभी दक्षिण भाषाओं में दोनों ल का व्यवहार होता है । ओड़िया में उत्तर तथा दक्षिण दोनों प्रकार की परम्परायें हैं ।

इसके अतिरिक्त विशेष कामों के लिये अन्य लिपियां हैं-ज्योतिष में नक्षत्र नाम के लिये अवकहड़ा चक्र जिसमें 20 व्यञ्जन तथा 5 स्वर हैं-अ, इ, उ, ए, ओ । इन्हीं व्यञ्जन वर्णों के साथ 25 अक्षरों की रोमन लिपि है जिसमें अतिरिक्त अक्षर एक्स है । नक्षत्र पादों के लिये अवकहड़ा में 12 अक्षर जोड़ते हैं-जिससे कुल 37 अक्षर होते हैं । वेद के सभी चिह्नों को मिला कर कुल 17x17=289 अक्षर हैं जिनमें 1, 36x3=108 स्वर तथा 36x5=180 व्यञ्जन वर्ण हैं ।

ओड़िया उच्चारण के अनुसार उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व पश्चिम दोनों दिशा में केन्द्र है । ओड़िशा से पश्चिम अन्तिम स्वर को हलन्त जैसा पढ़ते हैं, पूर्व में प्रथम अ को ओ जैसा पढ़ते हैं जैसे बंगाल में । थाइलैण्ड के राजा भूमिबल अतुल्यतेज का उच्चारण भूमिबोल ओदुल्यदेज है । या कम्बोडिया के नरोत्तम सिंहानक का उच्चारण नोरोदोम सिंहानुक है । इण्डोनेसिया में पूर्व राष्ट्रपति सुकर्ण को सुकार्णो पढ़ते हैं । उत्तर में ऋ को रि जैसा पढ़ते हैं, दक्षिण में रु जैसा। ओड़िया में दोनों प्रकार के अपभ्रंश हैं-वृद्ध-बूढ़ा, दृश्यति ख्रदिशुचि । ऋ का र जैसा उच्चारण भी पूरे भारत में है-गृह से घर । ऌ के ह्रस्व या दीर्घ वर्ण का प्रयोग संस्कृत या भारतीय भाषाओं में प्राय: नहीं है । ऌ + आकृति = लाकृति (लाकेट) । इसका केवल एक ही जैसा प्रयोग है, बंगला में नवम स्वर ऌ जैसे लिखते हैं, उसी तरह ओडिया तथा हिन्दी-मराठी में 9 अंक लिखते हैं । इससे स्पष्ट है कि भारत की लिपियों की रचना एक ही थी । सायण भाष्य को 600 वर्ष पूर्व पूरे भारत में पढ़ा जाता था । शंकराचार्य को कश्मीर, ओड़िशा या प्रयाग में लिपि के कारण कठिनाई नहीं हुई न चौतन्य को बंगाल, वृन्दावन या ओड़िशा में। पर अंग्रेजी शासन में सभी क्षेत्रों के अलग अलग टाइप चिह्न बनाये गये जिससे क्षेत्र एक दूसरे से कट गये। उसके बाद हर क्षेत्र की अलग भाषा और संस्कृति के अनुसार भाषा विज्ञान के सिद्धान्त बने और कहा गया कि भारत में बाहर से आ कर आर्यों ने संस्कृत थोप दिया । ओड़िशा प्राय: 50 विशेष वैदिक शब्द प्रचलित हैं, जो पूर्व के लोकपाल इन्द्र, जगन्नाथ, तथा समुद्र तट से सम्बन्धित हैं । इसके अतिरिक्त खनिज क्षेत्र में समुद्र मन्थन के कारण खनिजों के शब्द भी प्रचलित हैं । यदि आर्य ये वैदिक शब्द पश्चिम से लाते, तो पश्चिम के मध्य प्रदेश, राजस्थान, सिन्ध में भी ये शब्द मिलते । बौद्ध काल में संस्कृत के द्विवचन का प्रयोग बन्द हो गया

तथा आज भारत की किसी भाषा में नहीं है । इसी प्रकार स्टालिन के समय रूसी भाषा में द्विवचन का प्रयोग बन्द हो गया था । ओड़िशा में पारम्परिक वैदिक छन्दों के अनुसार अक्षर संख्या के अनुसार छन्द हैं। कुछ अनियमित छन्द हैं जिनको दण्ड कहते हैं, जैसे संस्कृत में रावण रचित शिव-ताण्डव स्तोत्र । सारलादास का महा भारत दण्ड छन्द में है । ओड़िया में छन्द को छान्द भी लिखते हैं । दण्ड अनियमित होने के कारण नियम पालन न करने वाले को भी दण्डा (बालुंगा) कहते हैं ।

सरस्वती कण्ठाभरण अलंकार (2/15) के अनुसार शालिवाहन (78-128 ई.) के काल में प्राकृत भाषा का साहित्य आरम्भ हुआ । उससे पहले भी लोकभाषा में इसका प्रयोग था पर साहित्यिक भाषा में नहीं । पर अभी गोरखनाथ काल 8वीं सदी से ही लोकभाषा का साहित्य उपलब्ध होता है जो नाथपन्थी साधुओं ने लिखा था । जैन तथा बौद्ध साहित्य भी उस समय की लोक भाषा में लिखा गया था । प्राकृत भाषाओं का रूप बदलता गया, संस्कृत ही सनातन भाषा रही । अभी पुराने जैन बौद्ध ग्रन्थों को पढ़ने के लिये अनुमान करना पड़ता है कि उनका मूल संस्कृत क्या रहा होगा । नाथ साहित्य का मुख्य ग्रन्थ शिशु वेद तथा गोरख संहिता है । शैव तथा वैष्णव सम्प्रदायों के अनुसार सम्प्रदाय तथा साहित्य का विभाजन किया जा रहा है जो उचित नहीं है । जगन्नाथ का भक्त होने का कभी यह अर्थ नहीं था कि वह राम, शिव, दुर्गा या हनुमान् की पूजा नहीं करेगा । पुरी जगन्नाथ मन्दिर में ही सबके मन्दिर हैं । नाथ काल का एक अन्य ग्रन्थ रुद्र-सुधानिधि है । कोइली गीत भी प्राचीन काल से चले आ रहे हैं । कोयल को दूत मान कर उसे सन्देश कहा जाता है । तमिल में कोइल का अर्थ मन्दिर है । यह अर्थ ओड़िया में भी प्रचलित है (वैकुण्ठ कोइलि) । दो और प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध हैं-बच्छ दास का कलसा चौतीसा-इसमें क से क्ष तक 34 अक्षरों से छन्दों का आरम्भ है । दूसरा है सिद्धेश्वर दास का विचित्र रामायण । कुछ का मत है कि सन्यास पूर्व सारला दास का ही नाम सिद्धेश्वर था। सारला दास प्राचीन कवियों में सबसे प्रसिद्ध हैं । इनका पूर्व नाम सिद्धेश्वर परिड़ा था । इनकी रचनायें हैं-सारला महाभारत, विलंका रामायण, चण्डी पुराण, लक्ष्मीनारायण वचनिका । गोपीनाथ मोहान्ती इनका समय 10वीं सदी मानते हैं ।

पञ्चसखा कवि-कुछ लोगों का विचार है कि 1509 ई. में चौतन्य महाप्रभु के आने के बाद ओड़िशा में वैष्णव साहित्य का प्रचार हुआ । पर बहुत प्राचीन काल से जगन्नाथ धाम वैष्णव मत का केन्द्र रहा है । चौतन्य काल में भी ओड़िशा में कई विख्यात विद्वान् थे जिनके कुछ ग्रन्थों का विवरण ओड़िशा के संस्कृत साहित्य में दिया गया है । इस काल के 5 मुख्य महाकवियों को पञ्चसखा कहते हैं-(मत्त) बलराम दास, (अतिबड़ी) जगन्नाथ दास, (महापुरुष) अच्युतानन्द, अनन्त दास, यशोवन्त दास । ये सन्त कवि एक काल के नहीं थे, न परस्पर मित्र थे । एक परम्परा के होने के कारण इनको पञ्चसखा कहता हैं । पञ्चशिख सांख्य दर्शन के मुख्य आचार्य थे जिन्होंने कपिल सांख्य सूत्रों की व्याख्या की थी । इनकी कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है । सम्भवत: पञ्चशिख ओड़िशा के थे या उनकी परम्परा यहां सुरक्षित रही । उनके सांख्य-योग दर्शन की व्याख्या करने के कारण इन कवियों का पञ्चसखा नाम हो सकता है । इनकी रचनायें हैं-

बलराम दास-जगमोहन रामायण, लक्ष्मी पुराण, वेदान्तसार, गुप्तगीता, नाम-माहात्म्य, भाव-समुद्र, कमललोचन चौतीसा, कान्त कोइली आदि ।

जगन्नाथ दास-इनका भागवत सबसे प्रसिद्ध है तथा ओड़िशा के प्रत्येक गांव में इसकी कथा सुनने के लिये स्थान थे जिनको भागवत-टुंगी कहते हैं । इनकी अन्य रचनायें हैं-अर्थ कोइली, दारुब्रह्म गीता, शून्य भागवत, ध्रुव-स्तुति आदि ।

अच्युतानन्द दास-इनकी मालिका बहुत विख्यात है जिसमें भविष्य की घटनाओं का वर्णन है । उसके कुछ समय बाद फ्रांस में नोस्ट्रेडामस ने इसी प्रकार की पुस्तक लिखी । इनकी 16 पोथी भी थी जो केवल खाली ताल-पत्र या ताम्बा आदि के प्लेट हैं । इनके सामने मौन प्रश्न करने पर महापुरुष अच्युतानन्द का उत्तर इन पर लिखा जाता है । इनमें 1 पोथी दुराचार के कारण नष्ट हो गयी । 15 अभी भी प्रचलित हैं । इनकी अन्य पुस्तकें हैं-शून्य संहिता, चौरासी यन्त्र, गुरुभक्ति गीता, खिल हरिवंश, गुप्त भागवत, कैवर्त गीता, काल-निर्घण्ट, तेरह जन्म शरण, ब्रह्म एकाक्षर गीता, गोपाल ओगाल, भाव-समुद्र, गरुड़ गीता, ब्रह्म शंकुलि, अनन्त वट गीता, काली कल्प गीता, अष्ट गूजरी, गूजरी रास, ब्रह्म कुण्डली, महागुप्त पद्मकल्प, चौसठी पटल, छेयालिस पटल, चौबीस पटल, दस पटल, नित्य रास, मन्मथ चन्द्रिका, शिव कल्प, अच्युतानन्द जन्म शरण, चित्त बोध, रास माला, पञ्चसखा भजन । चौरासी यन्त्र शरीर के भीतर 84 केन्द्र हैं जिनकी साधना से 84 सिद्धि होती हैं । इनकी भविष्य मालिका, आगत भविष्य लेखना, भविष्य परार्ध, जाइफूल मालिका प्रचलित हैं। अनन्त दास को शिशु अनन्त भी कहते हैं जिनके नाम पर भुवनेश्वर में एक स्थान है । पुराने शिशुनाग वंश का भी यही अर्थ था । इनकी मुख्य पुस्तकें हैं-चुम्बक मालिका, नीलगिरि चरित, हेतु उदय भागवत, अर्थ तारिणी प्रश्नोत्तर, भक्तिमुक्तिप्रदायक गीता ।

यशोवन्त दास की पुस्तकें हैं-शिव स्वरोदय, प्रेमभक्तिब्रह्म गीता, आत्मप्रत्यय गीता. गोविन्दचन्द्र । पञ्चसखा कवियों ने प्राचीन गूढ़ वैदिक शब्दों का विशिष्ट अर्थों में प्रयोग किया है तथा कई बार उनकी 1 पंक्ति की व्याख्या 10 पृष्ठों के संस्कृत भाष्य से अधिक सटीक होती है । इसके लिये स्वतन्त्र पुस्तक लिखनी पड़ेगी । केवल एक उदाहरण दिया जाता है- जगन्नाथ दास-जे पांचे पर र मन्द, ताहार मन्द पांचन्ति गोविन्द (जो दूसरे की बुराई करता है, उसकी बुराई की योजना भगवान् करते हैं)

पृष्ठ संख्या 18 का शेष

श्वेताश्वतर उपनिषद् (5/5)-यच्च स्वभावः पचति विश्वयोनिः, पाच्यांश्च सर्वान् परिणामयेद् यः। पाच्यांश्च = ओड़िया पांचे-योजना, षड़यन्त्र ।

षड्-गोस्वामी-पञ्चसखा के साथ ओलासुनी के महात्मा अरक्षित दास को जोड़ कर इनको षड्-गोस्वामी कहते हैं । अरक्षित दास की रचनायें हैं-महीमण्डल गीता, भक्तिटीका, सप्ताङ्ग अद्भुत् संहिता, तत्त्वसार गीता ।

उपेन्द्र भञ्ज पञ्चसखा के बाद के सबसे प्रसिद्ध महाकवि हैं । ये ब्रह्मपुर के भंज राजपरिवार के थे तथा इनको कविसम्राट् कहते हैं । इनकी सबसे प्रसिद्ध रचना वैदेहीश-विलास है जो रामायण की कथा है पर हर पंक्ति व (या ब) से शुरू हुई है । इनकी अन्य रचना हैं-कोटि ब्रह्माण्ड सुन्दरी, लावण्यवती । बाद के अन्य मुख्य पारम्परिक कवि थे- शिशु शंकर दास-उषाभिलाष, देव दुर्लभ दास-रहस्य मंजरी, कार्त्तिक दास-रुक्मिणी विवाह, रामचन्द्र पटनायक-हारावली, दीनकृष्ण दास-रस कल्लोल, अभिमन्यु सामन्तसिंहार-विदग्ध चिन्तामणि, कविसूर्य बलदेव रथ-चम्पू और चरित काव्य, ब्रजनाथ बड़जेना-चतुर विनोद । भीम भोई 19वीं सदी के एक प्रख्यात सन्त थे जिनकी शिक्षाओं को महिमा धर्म कहते हैं । इनके गुरु थे महिमा गोसाईं । भीम भोई अन्ध थे । इनकी शिक्षाओं को इनके शिष्यों ने लिपिबद्ध किया जिनमें अनेक लुप्त हैं । उपलब्ध ग्रन्थ हैं-स्तुति चिन्तामणि, ब्रह्मनिरूपण गीता, आदि-अन्त गीता, चौतीसा ग्रन्थमाला, निर्वेद साधना, श्रुति निषेध गीता, मनुसभा मण्डल, महिमा विनोद (4 खण्ड, अप्रकाशित), बृहत् भजनमाला, बंगला आठ भजन । महिमा का अर्थ निराकार ब्रह्म उपासना है । इस सम्प्रदाय के सन्त सदा पैदल चलते हैं ।

-अरुण कुमार उपाध्याय
सेवानिवृत्त आई.पी.एस.,
सी-47, पलासपल्ली, भुवनेश्वर-751020

सिर्फ साहित्य नहीं, बल्कि साहित्येतर प्रसंगों एवं भाषा संरचना पर भी जोर दिया जाता है । एक तरफ शास्त्रीय भाषाओं तमिल (2004), संस्कृत (2005), कन्नड़ (2008), तेलुगु (2008), मलयालम (2013), एवं उड़िया (2014) से जुड़े संस्थाओं के अकादमिक महत्त्व के देखते हुए उनको विभिन्न विश्वविद्यालयों से जोड़ने का सुझाव है, तो पालि, प्राकृत एवं फारसी भाषाओं के लिए नए संस्थान बनाने पर भी जोर दिया गया है, ताकि देश के कला, इतिहास एवं परंपरा आदि पर बेहतर शिक्षण एवं शोध हो सके । साथ ही इसमें अनुवाद के नाम पर एक अलग से संस्थान बनाने की पेशकश की गई है, जो निश्चित रूप से भारतीय बहुभाषिकता एवं इनमें निहित ज्ञान को सामने लाने का एक बेहतर प्रयास हो सकता है। हालांकि सन् 2005 में स्थापित राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के सुझाव के अनुरूप राष्ट्रीय अनुवाद मिशन पहले से कार्यरत है और इसी को एक संस्थान का रूप दिया जा सकता है, जहाँ न सिर्फ अंग्रेजी से भारतीय भाषाओं में बल्कि भारतीय भाषाओं से अंग्रेजी में भी अनुवाद हो, इसके साथ भारतीय भाषाओं से भारतीय भाषाओं में भी व्यापक अनुवाद की पहल हो । इन सब के मध्य सुदूर जनजातीय भाषाओं में निहित ज्ञान-परंपरा को किसी भी रूप में कम नहीं समझा जाना चाहिए और इन्हें राष्ट्रीय फलक पर भी स्थान दिया जाना चाहिए ।

भारत एक बहुभाषिक देश है और इस बहुभाषिकता से न्याय करना इस राष्ट्रीय नीति का एक उचित प्रस्ताव दिखता है । अब आगे देखना है कि इसका अमल किस रूप में होता है, क्योंकि इनमें से कुछ नीतियाँ जैसे मातृभाषा पर जोर देना, त्रिभाषा सूत्र आदि तो पहले से भी सामने थे, लेकिन उनके अनुपालन का कोई ठोस प्रयास नहीं हुआ है । बल्कि कई बार तो भाषाई संस्थान या तो उपेक्षा के शिकार हो जाते हैं, या दूरदर्शी एवं कुशल नेतृत्व के अभाव में यथास्थितिवाद के शिकार हो जाते हैं और निहित लक्ष्य की दिशा से विपरीत चलने लगते हैं । अब आगे से ऐसा कुछ नहीं होगा, नीति अपने उदिष्ट लक्ष्यों को पाएगी, देश अँग्रेजी आधिपत्य से मुक्त होगा और सभी भाषाएँ और उनमें निहित ज्ञान समान रूप से फले-फूले, यही इस शिक्षा-नीति की परीक्षा होगी ।

-अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी
सेंटर फॉर एनडेंजर्ड लैंग्वेज
विश्व भारती, शान्ति निकेतन,
बीरभूम, वेस्ट बंगाल-731235

हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं की अस्मिता

नीरज कृष्ण

भाषा का संस्कृति से चोली-दामन जैसा साथ है । एक तरह से भाषा ही संस्कृति की संवाहक होती है । मातृभाषा की यह भी परिभाषा दी जाती रही है कि जिस भाषा में कोई व्यक्ति सपने देखे, जिस भाषा में उसकी चिंतन- प्रक्रिया शुरू होती हो, जिस भाषा में उसके विचार जन्मते-पनपते हों, वही उसकी मातृभाषा होती है । शायद इसीलिए मानव की मातृभाषा उसकी संस्कृति की समर्थ संवाहक सिद्ध होती है । हमारी चिन्तन प्रक्रिया मौलिक भाषा से ही जन्म लेती है, आकार पाती है । सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय, सभ्यता एवं संस्कृति अपने सामासिक रूप में हिन्दी भाषा में प्रतिबिम्बित है । हिन्दी भाषा आज इतनी समृद्ध हो चुकी हैं कि वह विश्व भाषा बनने की राह में सबसे आगे है । वस्तुत: किसी भाषा का प्रवाह नदी की तरह होती है । भाषा जब प्रवाहित होती है तब वह अपने प्रभाव क्षेत्र में पड़ने वाली अनेक भाषाओं से कुछ-न-कुछ शब्द अर्जित करती रहती है । हमारे देश में जहाँ एक तरफ लोक-भाषाएँ (बोलियाँ) नदी हैं, तो हिन्दी नहर के सामान है । नहर का निर्माण किया जाता है परन्तु नदियों का स्वत: निर्माण होता है । भोजपुरी, अवधी, गढ़वाली, राजस्थानी.... इत्यादि बोलियों में हिन्दी के शब्द नहीं आए हैं, बल्कि इन बोलियों से शब्द हिन्दी में गए हैं यानी हिन्दी का निर्माण हुआ है । बोलियों का निर्माण नहीं हुआ है । अपनी इस महायात्रा के मार्ग में हिन्दी को जो कुछ भी श्रेयस्कर और विशिष्ट मिला हिन्दी ने ग्रहण करने में कभी संकोच नहीं की । सोलह भाषा रूपी नदियों का जल मिला है, तब जाकर हिन्दी ने यह रूप ग्रहण की है । हिन्दी के शब्द भंडार को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि, तत्सम, तद्भव, देशज और विदेशज चार स्त्रोतों से हिन्दी ने शब्द ग्रहण किए हैं । उर्दू जबान तो हिन्दी की सगी बहन की तरह उसकी पूरक ही रही है । हिन्दी में अरबी और फारसी के शब्दों के घुल-मिल जाने की सार्थकता पर विचार करते हुए प्रेमचंद ने कहा है- हिन्दी में हजारों शब्द, हजारों क्रियाएँ अरबी और फारसी से आयी हैं, और ससुराल में आकर घर की देवी हो गई हैं। यहाँ स्पष्टत: घर की देवी हो जाने से प्रेमचंद का तात्पर्य पूर्णत: उनके हिन्दी में विलीन हो जाने से है । अंग्रेजी शासन के प्रभाव स्वरूप हमने अंग्रेजी से अनेक शब्द लिए जो हिन्दी में इस तरह समाहित हो गए हैं जिससे लगता है कि उनका निर्माण हिन्दी भाषा के लिए ही हुआ हो । हिन्दी ने उदारतापूर्वक अनेक भाषाओं से शब्द ग्रहण किए हैं ।

भारत की जो मूल आत्मा है वो लोक-भाषाओं में बसी है । विभिन्न प्रकार के पेशों के शब्द जैसे लोहारों के शब्द, बढ़इयों के, किसानों के या चरवाहों के शब्द आपको स्थानीय बोलियों में ही मिलेंगे । संस्कृत, अंग्रेजी या दूसरी विदेशी भाषाओं में ये शब्द नहीं मिलेंगे । ऐसे में अगर लोक- बोलियाँ/भाषाएँ मरेंगीं तो हिन्दी भी मरेगी । विभिन्न बोलियां- हिन्दी शब्द भंडार की अक्षय स्रोत हैं । हिन्दी भाषा में शब्द बोलियों से ही आ रहे हैं । जब हम इन शब्दों का प्रयोग हिन्दी में करते हैं तब क्षणभर को भी यह प्रतीत नहीं होता कि वे शब्द आयातीत हैं । हिन्दी भाषा के साथ वे शब्द इस प्राकर रच-बस गए हैं कि वे हिन्दी की अपनी ही उपज लगती । भाषा का धर्म ही जल की तरह प्रवाहवान होना है । जिस प्रकार स्थिर जल दूषित हो जाता है, उसी प्रकार भाषा भी यदि प्रवाहित न हो रही हो तो वह अपनी शक्ति खो देगी, दूषित हो जाएगी । नहर में पानी नदियों से ही आती है । यदि नदियां ही सूख जाएंगी तो नहर भी सूख जायेंगे। इसलिए यदि नहर को बचाना है तो नदियों को बचाना ही होगा । यदि हमें हिन्दी को बचाना है तो बोलियों को बचाना होगा । लोक बोलियों के विकसित होने से हिन्दी का विकास होगा ।

गाँधी जी प्रांतीय भाषाओं के पक्षधर थे और उन्होंने यहाँ तक कहा कि 'प्रांतीय कामकाज प्रांतीय भाषाओं में करें और राष्ट्रिय कामकाज हिन्दी में करें'।(पृष्ठ स.- 146)। गाँधी जी ने कितना सीधा, सरल सूत्र दिया, जो आजतक हमारे देश के शासक समझ नहीं पाए । गाँधी के लिए, देवनागरी इस कारण से सबसे उपयुक्त सामान्य लिपि थी कि यह भारत के सबसे बड़े भाग के लिए जानी जाने वाली लिपि है । गाँधी ने यह भी कहा कि जबकि उर्दू और रोमन लिपि को भी प्रतिद्वंद्वी के रूप में दावा किया जा रहा था, किन्तु उनमें से किसी में भी देवनागरी की पूर्णता और ध्वन्यात्मक क्षमता नहीं थी । यह सर्वकालिक सत्य है कि कोई भी देश अपनी भाषा में ही अपने मूल स्वत्व को प्रकट कर सकता है । निज भाषा देश की उन्नति का मूल होता है । निज भाषा को नकारना अपनी संस्कृति को विस्मरण करना है । जिसे अपनी भाषा पर गौरव का बोध नहीं होता, वह निश्चित ही अपनी जड़ों से कट जाता है और जो जड़ों से कट गया उसका अंत हो जाता है । भारत का परिवेश निसंदेह हिन्दी से भी जुड़ा है । इसलिए यह कहा जा सकता है कि हिन्दी भारत का प्राण है, हिन्दी भारत का स्वाभिमान है, हिन्दी भारत का गौरवगान है ।

हम विचार करें कि जब भारत में अंग्रेजी नहीं थी, तब हमारा देश किस स्थिति में था । हम अत्यंत समृद्ध थे, इतने समृद्ध कि विश्व के कई देश भारत की इस समृद्धि से जलन रखते थे । इसी कारण विश्व के कई देशों ने भारत की इस समृद्धि को नष्ट करने का उस समय तक षड्यंत्र किया, जब तक वे सफल नहीं हो गए । किन्तु एक बात ध्यान में रखना होगा कि हम अंग्रेजी को केवल एक भाषा के तौर पर स्वीकार करें । भारत के लिए अंग्रेजी केवल एक भाषा ही है । जब हम हिन्दी को मातृभाषा का दर्जा देते हैं तो यह भाव हमारे स्वभाव में प्रकट होना चाहिए । हिन्दी हमारा स्वत्व है । भारत का मूल है । 1947 में जब भारत आजाद हुआ तो उसके सामने भाषा को लेकर सबसे बड़ा सवाल था, क्योंकि भारत में सैकड़ों भाषाएँ और

बोलियां बोली जाती थी । भारत की कौन सी राष्ट्रभाषा चुनी जाएगी, यह मुद्दा काफी अहम था । काफी सोच-विचार के बाद हिन्दी और अंग्रेजी को नए राष्ट्र की भाषा चुना गया । संविधान सभा ने देवनागरी लिपी में लिखी हिन्दी को अंग्रजी के साथ राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किया । 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने एक मत से निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी । हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में 14 सितम्बर सन् 1949 को स्वीकार किया गया । इसके बाद संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा के सम्बन्ध में व्यवस्था की गई । इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिए ही 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है । केंद्रीय स्तर पर भारत में दूसरी सह राजभाषा अंग्रेजी है । धारा 343 (1) के अनुसार, भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी है । हिन्दी के साथ विडम्बना यह है कि वह श्राजभाषाश और श्सम्पर्क भाषाश होने के बावजूद आज तक देश की श्राष्ट्रभाषाश नहीं बन सकी । यही नहीं, यह देश के विभिन्न राज्यों के साथ-साथ दुनिया के कई देशों में भी बोली जाती है । भारत के अलावा पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिन्दी बोलते-समझते हैं । हिन्दी की बोली भोजपुरी तो मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देशों के लोगों की मातृभाषा- जैसी है। एक आंकड़े के मुताबिक, पूरी दुनिया में हिन्दी बोलने वालों की संख्या लगभग सौ करोड़ है । आजादी के बाद हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' बनाए जाने के समर्थक महात्मा गाँधी और जवाहरलाल नेहरू भी थे। संविधान सभा में चर्चा के दौरान हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' बनाए जाने का विरोध भी हुआ । विरोधी गुट हिन्दी का विरोध करने के साथ अंग्रेजी को 'राज्य' की भाषा बनाए रखने के पक्ष में था । अंततः वर्ष 1949 में हिन्दी को 'राजभाषा' घोषित कर दिया गया ।

आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में हमारा समाज भाषा, संस्कृति, वेश-भूषा सभी कुछ भूल चुका है हमारे यहाँ बड़े बड़े नेता, अधिकारीगण, व्यापारी हिन्दी के नाम पर लम्बे चौड़े भाषण देते है, किन्तु अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ाते हैं और उन स्कूलों को बढ़ावा देते हैं । अंग्रेजी में बात करना या बीच-बीच में अंग्रेजी शब्द प्रयोग करना अपनी शान समझते हैं । हिन्दी के उपेक्षित होने के अनेक कारण हैं; सरकार उन विद्यालयों की सुध नहीं लेती जहाँ गरीब बच्चे पढ़ते हैं । आज संचार साधनों की बदौलत स्थानों के बीच की दूरियां बेमानी हो गई हैं या यह भी कह सकते हैं कि एक तरह से मिट गई है । संपूर्ण विश्व एक गाँव बन गया है, जिसमें कभी भी, कहीं से भी, किसी से भी तत्काल संपर्क स्थापित हो सकता है, यदि आपके पास उसके लिए अपेक्षित साधन हों । यह भी भविष्यवाणी की जा रही है कि वैश्वीकरण के इस दौर में विश्व की दस भाषाएँ ही जीवित रहेंगी, जिनमें हिन्दी भी एक होगी । हिन्दी एक विश्वभाषा है, क्योंकि वह एक देश की राष्ट्रभाषा होने के साथ-साथ अन्य देशों में भी पर्याप्त संख्या में लोगों द्वारा लिखी, बोली और समझी जाती है । वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी के प्रति सकारात्मक प्रवृत्तियां इस प्रकार दिखाई दे रही हैं - भौगोलिक आधार पर हिन्दी विश्व भाषा है क्योंकि इसके बोलने-समझने वाले संसार के सब महाद्वीपों में फैले हैं । जनतांत्रिक आधार पर हिन्दी विश्व भाषा है क्योंकि उसके बोलने-समझने वालों की सख्या संसार में तीसरी है । विश्व के 132 देशों में जा बसे भारतीय मूल के लगभग 2 करोड़ लोग हिन्दी माध्यम से ही अपना कार्य निष्पादित करते हैं । एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण हिन्दी एशियाई भाषाओं से अधिक एशिया की प्रतिनिधि भाषा है । विश्व भाषाएँ तो विश्व की उस प्रत्येक भाषा को कहा जा सकता है, जिसमें प्रयोक्ता एकाधिक देशों में बसे हुए हैं, किंतु विश्व भाषा पद की वास्तविक अधिकारिणी वे भाषाएँ हैं, जो विश्व के अधिकतर देशों में पढ़ी, लिखी, बोली, सुनी और समझी जाती हैं । वस्तुतः प्रत्येक विश्वभाषा के प्रमुख कार्य होते हैं- बोलचाल एवं जनसम्पर्क, साहित्य सृजन, शिक्षा एवं जनसंचार माध्यम, प्रशासनिक कामकाज, व्यावसायिक और तकनीकी अनुप्रयोग और विश्वबोध या वैश्विक चेतना ।

हिन्दी भाषा का प्रयोग केवल राष्ट्र के नाम रह गयी । भारत में जितनी भी किताबें हैं हिन्दी भाषा के नाम पर एक चौथाई भी उसके पाठक नहीं दिखते । हिन्दी के बारे में कुतर्कों के ऐसे जाल लगातार फैलाए जाते रहे हैं कि उन्हीं का परिणाम है कि हिन्दी आज तक ऐतिहासिक स्थान नहीं पा सकी । जब तक हिन्दी शिक्षित लोगों की अभिव्यक्ति का ताकतवर जरिया नहीं बन जाती, तब तक सत्ता की भाषा के रूप में वह अंग्रेजी की जगह नहीं ले सकती । -(के. एम. मुंशी-'नोट ऑन हिन्दी')।

दरअसल, हिन्दी की दुर्गति के लिए इसे लेकर दोहरा आचरण करने वाले ऐसे हिन्दी-प्रेमी ही जिम्मेदार हैं, जो यह समझते हैं कि अंग्रेजी बोलने वाला ज्यादा ज्ञानी और बुद्धिजीवी होता है । चूंकि मातृभाषा में ही मौलिक विचार आते हैं, इसलिए शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा ही होना चाहिए । हिन्दी किसी भाषा से कमजोर नहीं है, जरूरत है तो बस इसके प्रति आत्मविश्वास प्रदर्शित करने की, न कि मजबूरी दिखाने की । अंग्रेजी का बहिष्कार और विरोध न कर हिन्दी का परिष्कार, संस्कार और प्रयोग की सम्प्रति की आवश्यकता है । राष्ट्रभाषा का धरातल बहुत व्यापक और विशाल है। हिन्दी के विकास में प्रान्तीय भाषा के योगदान को स्वीकारते हुए महादेवी वर्मा ने कहा है- "सभी भारतीय भाषाओं ने अपनी चिन्तन तथा भावना की उपलब्धियों से राष्ट्र-भाषा को समृद्ध किया है । उनकी देशगत भिन्नता, उनकी तत्त्वगत एकता से प्राणवती होने के कारण महार्घ है ।

-नीरज कृष्ण
मकान नं. 322, नेहरू नगर
पाटलीपुत्र, पटना, बिहार-800013

भारत, भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय विकास

प्रेमपाल शर्मा

क्या सचमुच भारत और भारतीय भाषाओं का वक्त आ गया है ? पूरा तो नहीं लेकिन गाड़ी चल पड़ी है और जिस सितम्बर के महीने में भारतीय संविधान में हिन्दी को लोकतांत्रिक तरीके से उसकी पहुँच, व्यापकता, सहजता जैसे गुणों के कारण राजभाषा के रूप में अंग्रेजी के साथ-साथ सम्पर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया गया था और इसी उपलक्ष्य में हर वर्ष उत्सव के रूप में मनाया जाता है, तब यह और महत्त्वपूर्ण है कि इसका पूरा आकलन किया जाए । केवल आकलन ही नहीं उस पर कैसे निरंतर आगे बढ़कर भारत उस सच्ची आजादी को प्राप्त कर सकता है जैसे यूरोप के देश चीन, जापान और दक्षिण एशिया के देश ने अपनी भाषा और संस्कृति को बचाते हुए प्रगति की है । इसलिए सबसे पहले भारतीय भाषाओं की मोर्चे पर हाल की कुछ ऐतिहासिक उपलब्धियों पर बात करते हैं ।

जी-20 के मेजबान देश के रूप में जिस राष्ट्र को इंडिया के नाम से दुनिया जानती थी उसे भारत के रूप में जानने लगे हैं । लगभग सभी मंचों पर भारत शब्द का इस्तेमाल हुआ । चाहे वह राष्ट्रपति के भेजे हुए आमंत्रण हों या प्रधानमंत्री का सभी बैठकों में उद्‌बोधन । अंतरराष्ट्रीय स्तर पर औपचारिक कार्यवाही भी शुरू हो गई है और उसमें भी कोई दिक्कत नहीं आएगी । उसका सबसे बड़ा कारण संविधान में पहले से ही इंडिया और भारत शब्द शामिल था लेकिन बजाय भारत शब्द को आगे बढ़ाने के हमने इंडिया को आगे किया और उसके आगे करने वाले तत्कालीन सत्ता के वे लोग थे जो अंग्रेजी के दीवाने थे । अंग्रेजों से तो लड़े लेकिन अंग्रेजी उनके सपनों में रही और इन्हीं सपनों की चापलूसी करके आजादी के तुरंत बाद ऐसे लोग सत्ता पर हावी भी रहे । हाल ही में आई संजय बरू की किताब 'इंडिया' ए पावर एलिट में बहुत सिलसिलेवार अंग्रेजी और अमीरों के प्रभुत्व की जाँच-पड़ताल की है । खैर, देर आए दुरुस्त आए, हिन्दी और भारतीय भाषाओं की प्राचीन परंपराओं के अनुरूप अब यह देश भारत कहलाता है ।

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय भाषाओं के लिए बहुत ठोस कदम उठाए गए हैं । पहला युगांतरकारी परिवर्तन तो यह है की आजादी के बाद केवल हिन्दी की बात की जाती थी और इसीलिए गैर-हिन्दी प्रांतों में कुछ डर की भावना राजनीतिक स्वार्थों से उभारी गई । उसके अंजाम अच्छे नहीं रहे और अच्छा हुआ कि उस समय इस बात को बहुत तूल नहीं दिया गया । लेकिन इसका बुरा परिणाम भी निकला । सत्ता, राजनेता और अमीरों को उपलब्ध अंग्रेजी धीरे-धीरे इतने पैर पसारती गई कि भारतीय भाषाएँ लगभग हासिए की तरफ आ गई । 1991 के उदारीकरण के बाद तो अंग्रेजी को मानो खुली छूट मिल गई । यह भी आरोप है कि पश्चिमी देश अमेरिका समेत अंग्रेजी को बढ़ाने में जी जान से जुटे रहे । कभी ग्लोबलाइजेशन के नाम पर कभी ज्ञान की समृद्ध परंपरा और कभी शिक्षा को बेहतर करने के नाम पर । इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है की सन् 2000 के बाद से दुनिया भर में अंग्रेजी भाषा में छपने वाली सबसे ज्यादा किताबों की संख्या भारत में ही है । इसका कारण बहुत बड़ी जनसंख्या तो है ही जैसे-जैसे सरकारी स्कूल कम होते गए और निजी स्कूल और विश्वविद्यालय बढ़ते गए वहाँ से भारतीय भाषाएँ लगभग गायब होती गईं । हिन्दी क्षेत्र में तो अंग्रेजी का दबदबा इतना बड़ा है कि ना तो उनको अंग्रेजी आई और दूसरी ओर वे अपनी हिन्दी भाषा से भी और दूर हो गए । इसका प्रभाव हिन्दी की रचनात्मक उर्वरता और हिन्दी समाज पर भी बहुत बुरा हुआ है । बांग्ला, मराठी, मलयालम, तमिल, कन्नड़ से भी अंग्रेजी का टकराव हुआ लेकिन दक्षिण के यह राज्य अपनी भाषाओं को बचाने में हिन्दी से ज्यादा सक्षम सिद्ध हुए हैं। इसीलिए नई शिक्षा नीति में भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ने का मूल मंत्र चुना गया है और लगातार उसके लिए प्रयास हो रहे हैं ।

सितम्बर 2023 की सबसे ताजा खबर यह है कि कर्मचारी चयन आयोग जो केंद्र सरकार के 25 मंत्रालयों के लिए कर्मचारियों की भर्ती करता है और जिसमें ज्यादातर अंग्रेजी का बोलबाला यूपीएससी से भी ज्यादा होता है, वहाँ अब 23 भारतीय भाषाओं में परीक्षा की तैयारी हो रही है । पिछले 8 सालों में यह परीक्षा 13 भाषाओं में हिन्दी समेत हो रही है । 10 वर्ष पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी । याद कीजिए 2011 में तत्कालीन सरकार ने संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सेवा परीक्षा 2011 के प्रथम चरण में ही अंग्रेजी लाद दी थी । नतीजा यह हुआ की 3 वर्ष में हिन्दी और भारतीय भाषाओं में पढ़ने वाले उम्मीदवार गायब हो गए । देशभर में छात्रों ने आंदोलन किया । सबसे पहले आवाज महाराष्ट्र और तमिलनाडु के विद्यार्थियों ने उठाई । मामला न्यायालय तक भी पहुँचा। दिल्ली के मुखर्जी नगर और करोल बाग में बच्चे सड़कों पर उतरे और अंततः 2014 में यह सरकार आने के बाद प्रथम चरण में थोपी गई अंग्रेजी को हटाया गया । इसी का नतीजा है कि जून 2023 में सिविल सेवा परीक्षा के घोषित परिणामों में हिन्दी और भारतीय भाषाओं के उम्मीदवारों की संख्या बड़ी है । बहुत ज्यादा नहीं हुई लेकिन अग्रसर है । सन् 80 और 90 के मुकाबले जब लगभग 15 से 20% अपनी भाषाओं के चुने जाते थे इस वर्ष लगभग 9% बच्चे भारतीय भाषाओं के चुने गए हैं । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि सिविल सेवा परीक्षा का मौजूदा मॉडल वर्ष 1979 में शिक्षाविद् दौलत सिंह कोठारी की सिफारिश के अनुसार लागू किया गया था और पहली बार एक लंबे विचार-विमर्श के बाद भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने की शुरुआत की गई थी । आजादी के लगभग 30 वर्ष बाद कोठारी कमेटी ने इन सिफारिश को यह कहकर शामिल किया था कि क्या प्रतिभा सिर्फ अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने वालों में ही होती है ?

भारतीय भाषाओं के अधिकांश बच्चे कहाँ जाएंगे ? क्या इनका उच्च सेवाओं में जाने का कोई अधिकार नहीं है ? इसलिए एक सच्चे लोकतंत्र में आठवीं अनुसूची में उल्लेखित सभी भाषाओं को अवसर मिलना चाहिए । उन्होंने अपनी सिफारिशों में यह तक कहा था कि जिन अधिकारियों को भारतीय भाषाएँ नहीं आती उनको इस देश पर शासन करने का कोई हक नहीं है । उन दिनों मोरारजी देसाई की जनता सरकार थी और सिफारिश को लागू कर दिया गया । इसका चमत्कारिक असर देखिए कि 10 साल पहले जिस परीक्षा में बैठने वालों की संख्या सिर्फ 10000 के करीब थी, वर्ष 1979 में वह एक लाख से भी ज्यादा हो गई । यह होता है लोकतंत्र का विस्तार ! लोक की भाषा से पहली बार वे उम्मीदवार इन सेवाओं में आए जिनके मां-बाप बिना पढ़े-लिखे थे. यानी पहली पीढ़ी के पढ़े हुए लोग उच्च प्रशासनिक सेवाओं में दाखिल हुए । वर्ष 1989 में सतीश चंद्र कमेटी इस परीक्षा के समीक्षा के लिए गठित हुई और उसने माना कि सिविल सेवा परीक्षा में भारतीय भाषाओं को शामिल करने से लोकतंत्र तो मजबूत हुआ ही है, भारतीय भाषाओं को भी सम्मान मिला है । 10 वर्ष बाद संघ लोक सेवा आयोग की परंपरा के अनुसार वर्ष 2000 में जाने-माने अर्थशास्त्री योगेंद्र अलग की अध्यक्षता में जो कमेटी बनी उसने भी भारतीय भाषाओं के प्रवेश पर मुहर लगाई, लेकिन अफसोस यूपीएससी की बाकी परीक्षाएं जैसे वन सेवा, आर्थिक सेवा, मेडिकल सेवा, इंजीनियरिंग परीक्षा अभी भी सिर्फ अंग्रेजी माध्यम में होती हैं । यह पक्ष अभी भी अधूरा है और उम्मीद है कि सरकार आने वाले दिनों में इस पर ध्यान देगी ।

इस उम्मीद के पीछे भी इस सरकार ने जो कदम उठाए हैं, वे प्रशंसनीय है । इंजीनियरिंग की पढ़ाई अभी तक केवल अंग्रेजी भाषा में ही होती थी। 3 वर्ष पहले इंजीनियरिंग की पढ़ाई भारतीय भाषाओं में भी शुरू कर दी गई है । पहले वर्ष लगभग 14 कॉलेज और पाँच भारतीय भाषाओं के राज्य सामने आए थे । अब इनकी संख्या लगभग 25 कॉलेज और आठ भारतीय भाषाएँ हो चुकी हैं । संदेश हर राज्य के उम्मीदवार और उनकी भाषाओं में पढ़ने वालों के पास पहुँच गया है कि भारतीय भाषाओं में पढ़ने का भविष्य भी उतना ही उज्ज्वल है । मेडिकल की परीक्षा जो पूरी तरह से अंग्रेजी के बिना संभव नहीं मानी जाती थी, मध्य प्रदेश राज्य ने सभी मेडिकल कॉलेज में अपनी भाषा हिन्दी में पूरी तैयारी के साथ पढ़ना संभव बना दिया है । अंग्रेजी से हिन्दी में किताबें उपलब्ध कराई गई हैं और उनकी लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है । इस पहलू पर ध्यान तब गया जब रूस और यूक्रेन की लड़ाई में वहाँ पढ़ रहे 20,000 भारतीय डॉक्टर की पढ़ाई पर देश का ध्यान गया । पता लगा कि सबसे पहले वहाँ उनकी प्रांतीय, राज्य की भाषा सीखनी पड़ती है चाहे वह चीनी भाषा हो या किसी और देश की । यानी दुनिया के सारे देश मेडिकल की पढ़ाई पहले अपनी भाषाओं की समझ से शुरू करते हैं लेकिन भारत में अंग्रेजी के दीवाने हिन्दी में पढ़ने से कतराते हैं । लेकिन अंततः भारतीय भाषाओं की लड़ाई जीत की तरफ हैं । इसीलिए मेडिकल प्रवेश परीक्षा जिसे नीट नाम से जाना जाता है और जो पहले सिर्फ अंग्रेजी में होती थी, आठ भाषाओं से शुरू होकर अब 15 भाषाओं में होने लगी है ।

शिक्षा से गहरे जुड़े हुए लोग ही एहसास कर सकते हैं कि ग्रामीण अंचलों में सिर्फ प्रांतीय भाषाओं में ही बेहतर शिक्षा उपलब्ध हो सकती है । अंग्रेजी के दबाव में तो बच्चे आत्महत्या तक कर लेते हैं । स्कूल छोड़ने का सबसे बड़ा कारण विदेशी भाषा को लादना है । जून, 2023 में ही विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कुछ और क्रांतिकारी कदम उठाए हैं । यूजीसी ने आदेश जारी किए हैं कि जहाँ कुछ कारणों से केवल अंग्रेजी में ही पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं यदि वहाँ पढ़ने वाले विद्यार्थी अपनी भाषा में उत्तर लिखना चाहें तो उन्हें इसकी छूट होगी । यानी पहले ऐसा वक्त था कि अंग्रेजी भले ही टूटी-फूटी आए लेकिन लिखना अंग्रेजी में ही होता था; अब अपनी भाषाओं में लिखने की छूट दे दी गई है । इस नजरिया से दिल्ली में स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, जामिया विश्वविद्यालय, अंबेडकर आदि पर नजर डालना जरूरी है । ये सभी केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं। सबसे ज्यादा आर्थिक संसाधन इन विश्वविद्यालयों के पास हैं और सबसे ज्यादा सुविधाएं भी । लेकिन क्या कारण है कि कोठारी कमेटी ने वर्ष 1974 से 76 के बीच जब अपनी रिपोर्ट दी थी तब दिल्ली विश्वविद्यालय में लगभग 20% से ज्यादा बच्चे स्नातकोत्तर में अपनी भाषा हिन्दी में पढ़ते थे, लेकिन धीरे-धीरे अंग्रेजी के कैंसर ने ऐसा असर किया कि अपनी भाषाओं में पढ़ना ही बंद हो गया है और यह भी उस राज्य में जो हिन्दी भाषी क्षेत्रों में आता है । संविधान की धाराओं के अनुसार जिसकी भाषा हिन्दी है और इससे भी बड़ी बात कि जहाँ पढ़ने वाले 80% छात्र हिन्दी भाषी राज्य के हैं और पढ़ाने वाले भी लगभग 70% अध्यापक अच्छी हिन्दी जानते हैं, वहाँ धीरे-धीरे अपनी भाषाओं में पढ़ना क्यों बंद हुआ ? कहीं-ना-कहीं सत्ता की राजनीति और उन अंग्रेजी के गुलाम का असर था कि अंग्रेजी हावी होती गई है । इसे भारत सरकार के मंत्रालयों में नियुक्त हिन्दी अधिकारी नहीं रोक सकते । इसे रोकने के लिए पहले सरकार और फिर समाज को आगे बढ़ना होगा । सबसे सुखद स्थिति इस समय यह है कि सत्ता की सीट पर बैठे प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और सभी राजनेता अपनी बात भारतीय भाषा और हिन्दी में करते हैं । संसद में भी अधिकतर बहस हिन्दी और भारतीय भाषाओं में होती हैं । राज्य की विधान सभाओं में तो ऐसा होता ही है । इस नजरिया से देखा जाए तो राजनेता जनता की भाषा लोकभाषा के ज्यादा नजदीक हैं, बजाय नौकरशाहों के । लेकिन नौकरशाह भी गिरगिट की तरह बदल रहे हैं । यूपीएससी के इंटरव्यू बोर्ड और दूसरे मंचों पर अब वे हिन्दी और भारतीय भाषाओं को हिकारत से देखने की जुर्रत नहीं कर सकते । प्रधानमंत्री जब उनसे सीधे संवाद करते हैं तो हिन्दी बोलने

की कोशिश करते हैं । उन्हें पता है कि अंग्रेजी के नखरे उन्हें उनके पद से दूर कर सकते हैं ।

इसका असर मीडिया में भी हुआ है । अंग्रेजी के दीवाने कई एंकर, मीडियाकर्मी पिछले कुछ वर्षों में भले ही अंग्रेजी में प्रश्न पूछे लेकिन सामने वाला यदि हिन्दी और भारत की भाषा में जवाब देता है तो वे भी हिन्दी भाषा में उतर आते हैं, यानी कि परिदृश्य बदल रहा है। न्यायालय में भी हिन्दी का प्रवेश भले ही सीमित हो, किन्तु शुरू हो चुका है । सुप्रीम कोर्ट ने लगभग 1000 से ज्यादा महत्त्वपूर्ण निर्णय को भारतीय भाषाओं में अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध कराया है और इसीका अनुकरण करते हुए राज्यों के न्यायालय वकीलों की बात उनकी अपनी भाषा में सुनने लगे हैं । केरल हाईकोर्ट ने तो लगभग 6 महीने पहले पहली बार अपना निर्णय मलयालम भाषा में दिया है । तमिलनाडु की सरकार ऊपर से भले ही हिन्दी का विरोध करती रहे, लेकिन अपनी तमिल भाषाओं को पूरा महत्त्व देती है । श्री करुणा निधि की सफलता इसी बात में थी कि उन्होंने प्राथमिक स्तर पर अपनी भाषा में पढ़ना अनिवार्य कर दिया था । दक्षिण के ज्यादातर राज्यों में उनकी अपनी भाषा मैट्रिक तक अनिवार्य हैं और उससे आगे भी छात्र अपनी भाषा में पढ़ते हैं । महाराष्ट्र में मैट्रिक में पढ़ने वाले छात्रों के पास तो ज्यादातर चार भाषाएँ (मराठी, इंग्लिश, हिन्दी और संस्कृत या उर्दू) होती हैं । जुलाई 2023 में कर्नाटक के एक स्कूल में आठवीं की कक्षा में कन्नड़ पढ़ाना बंद कर दिया था । मामला मीडिया तक पहुँचा और राज्य सरकार ने तुरंत उस स्कूल को चेतावनी दी कि राज्य की भाषा पढ़ना अनिवार्य है वरना आपकी मान्यता रद्द कर दी जाएगी । अपनी भाषा में पढ़ने के लिए कर्नाटक राज्य तो सुप्रीम कोर्ट तक गया और अंततः उनकी जीत हुई । पंजाब में आई नई सरकार ने भी सबसे पहला काम यही किया कि दसवीं तक पंजाबी भाषा को अनिवार्य किया और पंजाबी माध्यम में पढ़ने को प्राथमिकता दी गई है ।

यह हिन्दी भाषा राज्यों के लिए कुछ सबक है । विशेषकर दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों के लिए । दिल्ली में लगभग 4000 स्कूल हैं । 2000 सरकारी और 2000 निजी । निजी स्कूलों में हिन्दी सिर्फ आठवीं तक मुश्किल से पढ़ाई जाती है । आठवीं तक भी अंग्रेजी विदेशी भाषा तो होती ही है, चीनी, जापानी, फ्रेंच, जर्मन आदि भी पढ़ाई जा रही है और यही कारण है कि 9वीं में अंग्रेजी तो अनिवार्य रहती है इन निजी स्कूलों में, हिन्दी नहीं । हिन्दी का इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा और वह भी देश की राजधानी दिल्ली में जहाँ साहित्य अकादमी है, हिन्दी अकादमी है, भारत सरकार का गृह मंत्रालय है, राजभाषा विभाग है और सबसे ज्यादा हिन्दी के 500 लेखक यहाँ रहते हैं । यदि हिन्दी दसवीं तक भी नहीं पढ़ाई जाएगी तो कौन उनकी किताबों को पढ़ेगा और खरीदेगा ? क्या यह सांस्कृतिक संकट को आमंत्रण देना नहीं है ? क्या भाषा के बिना कोई संस्कृति जीवित रह सकती है ? क्या सिर्फ अकादमी कुछ कुर्सी और कुछ बजट को खपाने के लिए बनी है ? हाल ही में राष्ट्रीय भाषा संगम की बड़ौदा में हुई गोष्ठी में गुजरात का अनुभव याद आता है । गुजरात साहित्य अकादमी के अध्यक्ष ने बताया कि यहाँ भी स्कूलों में अंग्रेजी पैर पसार रही थी । गुजराती समाज इसके विरोध में उठ खड़ा हुआ । हर हफ्ते गुजरात साहित्य अकादमी के भवन से वहाँ के शिक्षा मंत्री और मुख्यमंत्री के पास जुलूस जाता रहा और 3 महीने में उन्हें यह मानना पड़ा कि गुजराती न केवल दसवीं बल्कि 12वीं तक पढ़ाई जाएगी । दिल्ली के लिए तो यह उदाहरण और भी प्रासंगिक है । हिन्दी भाषी क्षेत्र की राजधानी में दसवीं तक हिन्दी पढ़ना हिन्दी थोपना नहीं होगा, बल्कि इससे पूरे देश में अपनी भाषाओं के पक्ष में एक अच्छा संदेश जाएगा । उसके बाद आप दूसरी भाषाएँ पढ़ें, या कितनी भी विदेशी भाषाएँ पढ़ें उस पर कोई रोक नहीं है । इसलिए यहाँ के सभी सरकारी और निजी स्कूलों में कम-से-कम दसवीं तक तो हिन्दी तुरंत अनिवार्य की जाए और जरूरत हो तो हिन्दी के लेखक, बुद्धिजीवी, पत्रकार बिना किसी राजनीतिक मतभेद के सामने आए और सरकार को मजबूर करें । दक्षिण राज्यों के 11वीं-12वीं के बच्चे भले ही इंजीनियरिंग की तरफ जा रहे हों या मेडिकल परीक्षा की तरफ, ज्यादातर मामलों में उनके पास उनकी अपनी भाषा भी होती है और यही कारण है कि उनकी क्षमता अपनी भाषा में भी होती है और अंग्रेजी में भी । ज्यादातर समाज शास्त्रियों का आंकलन है कि समझ के लिए अपनी भाषा बहुत जरूरी होती है और यही समझ उन्हें अपने समाज, उसकी समस्याओं को हल करने के काम आती है । यह अचानक नहीं है कि दक्षिण के राज्य उत्तर के मुकाबले में ज्यादा तार्किक और बेहतर विकास की तरफ अग्रसर हैं । जनसंख्या नियंत्रण का मामला हो, स्त्री शिक्षा का हो, शिक्षा की बेहतरीनी का हो या कानून व्यवस्था का । व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में भी उत्तर भारत के मुकाबले वे कहीं बेहतर हैं । हिन्दी भाषा के उत्सव को मनाते वक्त हम सबका यह दायित्व है कि हम अपने चारों तरफ शिक्षा का ऐसा वातावरण तैयार करें जिसमें बच्चे विदेशी भाषा के दबाव में किताबें और शिक्षा से दूर ना हो । गाँधी जी को भी याद करते हुए कृपया सोचें कि सौ वर्ष पहले उन्होंने कितने जोर से अपनी भाषा में पढ़ने की वकालत की थी । अपनी भाषा में पढ़ेंगे-सोचेंगे तो रचनात्मकता कई गुना बेहतर होगी । हम वैज्ञानिक उपलब्धियों में आगे बढ़ेंगे । उद्योग और व्यापार में सफलता पाएंगे। इन्हीं सबसे सांस्कृतिक और सामाजिक विकास होता है । शिक्षा और वह भी अपनी मातृभाषाओं में, पूरे परिदृश्य को बदल सकती है और किसी भी देश का उद्देश्य देश का समग्र विकास होता है ।

-प्रेमपाल शर्मा
कथाकार और पूर्व संयुक्त सचिव,
रेल मंत्रालय, भारत सरकार

भाषा आक्रमण आपत्ति और इष्टापत्ती

विजय प्रभाकर नगरकर

आज किराना दुकान गया था।वहां एक पांच साल का आकर्षक,चुलबुला बच्चा दुकानदार से पतंग मांग रहा था।

'मुझे पतंग चाहिए'
'जा दादा जी के साथ जाकर खरीद लेना'
मैंने दुकानदार से मराठी में पूछा 'क्या यह आपका बेटा है?'
'जी, इंग्लिश मीडियम स्कूल में पढ़ रहा है'

मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने उस बच्चे को अपने पिताजी और दादाजी के साथ हिन्दी में बातचीत करते हुए देखा।

'क्या आपका बेटा मराठी में बात नहीं करता?

'कभी-कभी करता है, लेकिन स्कूल के मित्रों के साथ हिन्दी में बात करता है, उसे अब हिन्दी की आदत हो गई है'

मैंने मराठी परिवार के अनेक बच्चों को देखा है जो आमतौर पर हिन्दी में बात करते है । पुणे स्थित मेरे एक रिश्तेदार के तेलुगु परिवार में सभी बच्चे तेलुगु की बजाय हिन्दी में बात करते है ।

मेरा यह निरीक्षण है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्र हिन्दी बोलने में ज्यादा रुचि लेते है। हम भले अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा पर कटाक्ष करें। लेकिन अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में विभिन्न भाषिक परिवार के बच्चे अंग्रेजी से ज्यादा हिन्दी में बात करना अधिक सुविधाजनक पाते है। भारत में भाषा का मामला अधिक संवेदनशील है। हर एक भाषा वर्ग की अपनी अस्मिता है। मातृभाषा पर हिन्दी के आक्रमण को लेकर सबसे ज्यादा राजनीति की जाती है। हिन्दी विरोधी लोगों के परिवार के बच्चे हिन्दी का सबसे ज्यादा प्रयोग करते है। नौकरी के लिए अंग्रेजी माध्यम को चुनते है। अंग्रेजी प्रमाणपत्रों से उनकी झोली भरी रहती है। संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग पग-पग पर करते है लेकिन जब भाषिक अस्मिता की बात आती है तो हिन्दी पर दोषारोपण किया जाता है। क्या हिन्दी किसी एक विशेष क्षेत्र की भाषा है? बिलकुल नहीं, हिन्दी का राष्ट्रीय स्वरूप स्थापित करने में जितना हिन्दी भाषिक लोगों का योगदान है,उससे ज्यादा हिन्दीतर लोगों ने हिन्दी को विकसित किया है । भारत का संविधान भी कहता है कि भारतीय संविधान अनुच्छेद 351 हिन्दी भाषा के विकास के लिए निदेश

'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'

हिन्दीतर परिवार की नई पीढ़ी हिन्दी को अपना रही है, भले उनका कार्यक्षेत्र, पढ़ाई अंग्रेजी है। क्या यह मातृभाषा के लिए संकट की निशानी है? क्या मातृभाषा के विकास का हमारा दृष्टिकोण इतना संकोचित हुआ है कि मातृभाषा बचाव के नारे अंग्रेजी में लिखे जाएंगे और हिन्दी विरोधी बातें होगी। यह हमारा राजनीतिक, भाषिक ढोंग होगा। हिन्दी का सबसे ज्यादा समर्थन अल्पसंख्यक, आदिवासी, कामकाजी गरीब लोगों ने किया है। देश के अनेक प्रांतों के मुसलमानों की भाषा देखिए। ना उन्हें अच्छी उर्दू,अरबी,फारसी आती है।लेकिन इन लोगों ने 'हिन्दुस्तानी' शैली को अपनाकर वहाँ की प्रांतीय भाषाओं के साथ एक अलग हिन्दी प्रचारित की है। दक्षिण, पूर्वोत्तर राज्य, असम, बंगाल क्षेत्र के मुस्लिम लोगों की संमिश्र उर्दू, हिन्दुस्तानी भाषा को '' या '' कहा जाता है। यह भाषा उर्दू और बंगाली की एक संकर भाषा है, जिसमें कुछ अरबी, फारसी और अंग्रेजी शब्द भी शामिल हैं। चटगांविया भाषा मुख्य रूप से बांग्लादेश के चटगांव क्षेत्र में बोली जाती है, लेकिन यह भारत के असम, पश्चिम बंगाल और मेघालय राज्यों में भी बोली जाती है। दक्षिण भारत में मुसलमानों की प्रमुख भाषा 'दख्खनी' रही है। 15वीं-16वीं सदी में फौज, फकीरों तथा दरवेशों के साथ यह भाषा दक्षिण भारत में पहुँची और वहाँ प्रमुखत: मुसलमानों में, तथा कुछ हिन्दुओं में जो उत्तर भारत के थे, प्रचलित हो गई। कहते है कि कभी कभी आपत्ति भी इष्टापत्ति साबित होती है। आम धारणा है कि विदेशी भाषाओं के आक्रमण से मातृभाषा कमजोर होती है,नष्ट हो जाती है। लेकिन भाषा विज्ञान के अनुसार विदेशी भाषा के संक्रमण से भारतीय भाषाओं में कई विदेशी भाषाओं के शब्द समाहित हो चुके हैं। किसी भी भाषा को उत्कृष्ट तब ही माना जाएगा जब वह कई भाषाई आक्रमणों से नष्ट न हो कर उलट वह नया रूप, नया अवतार, नया वेग लेकर आगे बढ़ती रहे।

भाषा अस्पृश्य नहीं होती। भाषा यह एक मानवीय घटना है जो भाषिक संक्रमण के फलस्वरूप तेजी से आगे बढ़ती है। भाषा का अस्तित्व किसी भी आक्रमण या विदेशी भाषा के कारण संकट में नहीं आता। यदि भाषा का उपयोग करने वाली समाज रचना सजग रहेगी तो भाषा का विकास निश्चित रूप से होता है। मराठी भाषी श्रीमती राज्येश्री जयराम ने धारावी झोपड़पट्टी स्थित बहु भाषिक समुदाय की संपर्क भाषा हिन्दी का सर्वे किया था। केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर ने प्रकाशित किया है।

(An Ethno&linguistic survey of Dharavi 1986 published by CIIL Mysore)

भाषा आक्रमण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक भाषा को दूसरी भाषा से प्रभावित किया जाता है। यह प्रभाव किसी भी रूप में हो सकता है, जैसे कि शब्दों और वाक्यांशों का उधार लेना, भाषा की

शेष पृष्ठ संख्या 43 पर

पूर्वोत्तर राज्यों का भाषा संसार और हिन्दी

संगीता कुमारी सहाय

भारत विविधताओं का देश है। इस विशाल भू-आकृति वाले देश के भौगोलिक और सांस्कृतिक परिवेश में लगभग पूरे विश्व की झलक मिलती है। और इन्हीं विविधाओं के समेकन का दृश्य देश के उत्तर-पूर्वी हिस्से में भी देखने को मिलता है। पूर्वोत्तर भारत का नाम आते ही हमारी आंखों के सामने देश के उत्तर-पूर्व दिशा में बसे 'सेवन सिस्टर्स' यानी असम, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय, नागालैंड और सिक्किम का नाम सामने आ जाता है। इनमें से सिक्किम पूर्वोत्तर भारत का हिस्सा तो है, परन्तु वह सेवन सिस्टर्स में शामिल नहीं है। देश का यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक बनावट, नैसर्गिक सुषमा, अनूठी सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना, भाषा, खान-पान, रहन-सहन, हस्तशिल्प, कला आदि के कारण शेष अन्य भागों से अलग पहचान कायम करता है। इसे भारत के सांस्कृतिक संग्रहालय की उपमा दी जाती है।

इस क्षेत्र की भिन्नताओं की यही झलक वहां के भाषा और बोलियों में भी स्पष्टता से देखने के मिलती है। विश्व के 196 देशों में कुल 6900 भाषाएँ बोली जाई है। इनमें से अकेले भारत में लगभग 1652 भाषाएँ बोली जाती हैं। यानी पूरे विश्व की एक चौथाई भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं। भारत में विश्व के चार प्रमुख भाषा परिवारों की बोलियाँ बोली जाती हैं। उत्तर भारत में बोली जाने वाली भारोपीय भाषा परिवार की भाषाओं को आर्य भाषा समूह, दक्षिण भारत की भाषाओं को द्रविड़ भाषा समूह, ऑस्ट्रो-एशियाटिक परिवार की मुंडारी भाषा समूह तथा पूर्वोत्तर में बोली जाने वाली चीनी-तिब्बती भाषा समूह। जिसे तिब्बती-बर्मी, नृजातीय भाषा समूह के नाम से भी जाना जाता है।

चीनी-तिब्बती भाषा परिवार की ज्यादातर भाषाएँ भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में बोली जाती हैं। इस परिवार पर चीनी और आर्य परिवार का प्रभाव पाया जाता है और सबसे छोटा भाषा परिवार होने के बावजूद इसके सदस्य भाषाओं की संख्या में सबसे ज्यादा हैं। इस परिवार की मुख्य भाषाओं में, नागा, मिजो, म्हार, मणिपुरी, तोगाखुल, खासी, दफला, चंबा, तिब्बती, लद्दाखी, लेज्या तथा आओ इत्यादी भाषाएँ शामिल हैं। यहाँ बोली जाने वाली चार भाषाएं भारतीय संविधान द्वारा स्वीकृत हैं। ये हैं - बोड़ो, असमिया, मणिपुरी तथा बांग्ला भाषा। इनमें असमिया तथा बोड़ो भाषा-भाषी समाज मुख्य रूप से असम में निवास करता है। मणिपुरी भाषा का प्रयोग मणिपुर में होता है। असम और त्रिपुरा में भी इस भाषा को बोलने वाले बड़ी संख्या में हैं। असम और त्रिपुरा की बराक घाटी में बांग्ला भाषा का प्रयोग होता है। बांग्ला भाषी समाज पूर्वोत्तर के सभी राज्यों में निवास करता है। इसी वजह से इस क्षेत्र के सभी मुख्य भाषाएं बांग्ला से प्रभावित रहीं हैं। बहुत लंबे समय तक पूर्वोत्तर की कई जनजातीय भाषाएँ जैसे गारो, खासी आदि को बांग्ला लिपि में ही लिखा जाता था। 1971 के जनगणना के अनुसार इस क्षेत्र में बोली जाने वाली 130 भाषाएँ भोटी-चीनी-परिवार की हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद राज्यों के गठन में भाषा तथा संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका रही। पूर्वोत्तर राज्यों के गठन में भी इस विषय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परंतु किसी भाषा विशेष की प्रधानता होने के साथ साथ हिन्दी सहित अन्य भाषाएं भी बोली जाती रही हैं। पूर्वोत्तर के आठों राज्यों में उपयोग होने वाली भाषाओं और वहाँ राष्ट्रभाषा हिन्दी की अहमियत का अध्ययन और विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है-

असम की भाषा को असमी, असमिया अथवा आसामी कहा जाता है। यह यहाँ की अधिकारिक भाषा है। असमी भाषा का बांग्ला, मैथिली और उड़िया से निकट का संबंध है। इसकी उत्पत्ति प्राकृत तथा अपभ्रंश से हुई है। यह भाषा अहोम जाति की भाषा से प्रभावित रही है। असम में इसके अलावा बोड़ो-कछारी और सोनोवाल-कछारी जनजातीय भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। बोड़ो भाषा का प्रयोग कोकराझार, कामरूप, शोणितपुर, उदालागुड़ी, दरंग तथा नालवाड़ी कसेरों में किया जाता है। सोनोवाल कछारी का प्रयोग दीमारपुर क्षेत्र के अतिरिक्त नार्थ लखीमपुर, धेमाजी, दिफू और हाफलांग में भी किया जाता है। यद्यपि गारो, खासी, जयंतियां मेघालय की मुख्य जनजातीय भाषा है, परंतु इसके बोलने वाले असम में भी बड़ी तादात में है। यहाँ संथाली भाषा- भाषी भी बड़ी संख्या में रहते हैं। देउरी कारबी, लालुंग(तिवा), मिसींग(मिरी), रेगमा, हाजोंग, कुकी, मार, राभा आदि असम की अन्य बोलियाँ हैं। राभा ने बड़ी मात्रा में असमिया शब्दों को ग्रहण किया है।

मेघालय की मुख्य जनजातीय भाषाएँ हैं- गारो, खासी और जयंतियां। खासी ऑस्ट्रो-एशियाई भाषाओं के मोन-ख्मेर परिवार की एक शाखा है। इसे खासी, खसिया या क्यी भी कहते हैं। इस भाषा को चेरापूंजी में काख्रक्रिटियन-सोरा कहा गया है। सोरा चेरापूंजी का मूल नाम है। जीवन राय खासी भाषा के पहले विद्वान थे। इन्होंने 'रामायण' और 'बुद्धचरित' का खासी भाषा में अनुवाद किया। गारो भाषा का प्रयोग 'गारो हिल्स' में किया जाता है। यह तिब्बती-वर्मा परिवार की भाषा है। जयंतियाँ मन-खामेर समूह की भाषा है। यह खासी के काफी निकट है। इसका प्रयोग जीवाई क्षेत्र में किया जाता है। जिसे जयंतियाँ हिल्स के नाम से जानते हैं।

मणिपुर की मुख्य भाषा मणिपुरी है। राज्य की 65% आबादी मणिपुरी भाषा का प्रयोग करती है। यह मेइतेइ मायेक लिपि तथा पूर्वी लिपि में लिखी जाती है। मणिपुरी के अलावा यहाँ 29 अन्य जनजातीय भाषाओं के प्रयोग का पता सर्वेक्षण में चला है। परंतु मुख्य जनजातीय भाषा सात ही हैं। मणिपुरी भाषा की कई बोलियाँ हैं, जैसे- फ्येंग, सेकमई, अन्द्रो, ककचिंग क्षेत्र में चकमा तथा जिरीबा में जिरी घाट और कछार क्षेत्र में कछारी मणिपुरी। मणिपुर में

प्रचलित जनजातीय भाषाओं को दो वर्गों में विभक्त किया जाता है ख्र

(क) नागा समूह की भाषाएँ

(ख) मिजो समूह या कुकी वर्ग की भाषाएँ।

मणिपुरी भाषा के विद्वान कलाचन्द्र शास्त्री ने 'महाभारत' का मणिपुरी में अनुवाद किया। इसी प्रकार पंडित राधामोहन शर्मा ने 'उपनिषदों' का मणिपुरी में अनुवाद किया।

अरूणाचल प्रदेश में कुल 25 बोलियां बोली जाती हैं- खामती, खोवा, खामबा, हिलमिरी, देवरी, अपातानी, आका, अदी, मिजीथा, धम्मई, मिशिंग, मोपा और उसकी बोलियाँ, मिशमी डिगारू, मिशमी ईदू, मिशमी मीजू, बैंगनी, निशी, नोक्टे, शेरदुक्पेन, सिंहको, सोलुंग, ताशीन, वाचू, तांगासा और थोबिन। अरूणाचल प्रदेश में जेमी भाषा को लिखने के लिए देवनागरी लिपी को अपनाया गया है। यहाँ चकमा भाषी लोग भी रहते हैं। प्रदेश के समस्त जनजातीय लोगों के मध्य संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग होता है। तवांग और कामेंग जिले के निवासी मोन्ना भाषा बोलते हैं।

नागालैंड में नागामीज मुख्य संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो रही है। दीमापुर और कोहिमा में हिन्दी संपर्क भाषा के रूप मे स्थापित हो गई है। नागालैंड की राजधानी कोहिमा में 'तेनेदिए' अकादमी की स्थापना की गई है। यह अकादमी कोहिमा औए उसके आसपास प्रचलित पाँच नगा भाषाओं- अंगामी, सेमा, लोथा, आओ आदि को मिलाकर 'तेनेदिए' नामक नई भाषा विकसित कर रही है। इसके कोश का निर्माण हो चुका है। साथ ही व्याकरण भी देवनागरी लिपि में छप चुकी है। जनजातीय भाषाओं की संरक्षण की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है।

त्रिपुरा में काकराबक प्रमुख जनजातीय भाषा है। यहाँ इसके अध्ययन-अध्यापन का काम रवीन्द्र परिषद, अगरतल्ला में प्रारम्भ हो चुका है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा द्वारा इसका शब्दकोश प्रकाशित किया गया है। विष्णुप्रिया भी त्रिपुरा की सुव्यवस्थित भाषा के रूप में विकसित हो रही है। इस पर बांग्ला और असमिया का व्यापक असर है। अभी तक इसे स्वतंत्र भाषा का दर्जा नहीं मिला है। यहाँ चकमा और संथाली भाषा-भाषी लोग भी बड़ी संख्या में रहते हैं।

मिजोरम की प्रमुख भाषा मिजो है। इसे 'लुशाई' भी कहते हैं। मिजोरम को 1954 तक 'लुशाई पर्वतीय जिले' के नाम से जाना जाता था। मिजोरम के अतिरिक्त यह भाषा मिजोरम से सटे मणिपुर, त्रिपुरा, चटगांव हिल और चीन हिल्स के आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। यह भाषा तिब्बती-बर्मन की कुकी-चीन शाखा के अंतर्गत आती है। ईसाई धर्म प्रचारकों ने मिजो भाषा को लिखने के लिए रोमन लिपि पर आधारित एक लिपि विकसित की। यही लिपि आज भी वहाँ उपयोग की जाती है।

सिक्किम की प्रमुख भाषा नेपाली है। यहाँ हिन्दी और अंग्रेजी भी बोली और समझी जाती है। इसके अलावा भोटिया, जोंखा, ग्रोमा, गुरूंग, मगर, मांझी, मझवार लेप्चा, तमोग, लिम्बू, दनुयार, शेर्पा, सुनवार आदि भाषाएँ भी बोली जाती हैं।

पूर्वोत्तर की भाषाओं के इस व्यापक संसार का संबंध देश के अन्य भाषाओं से भी काफी है। बांग्ला भाषा का गहरा प्रभाव ऊपर उल्लिखित है। लेपचा, भड़वाली, मोनपा, बोड़ो, मिजी, मिरी, सेमा, लोथा, रेगमा, गंगफोम जैसी पचासों पूर्वोत्तरीय भाषाओं की लिपि देवनागरी है। जिसके कारण राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए भी यह क्षेत्र सहज एवं सुगम हो गया। इस क्षेत्र में हिन्दी का प्रवेश स्वतन्त्रता आंदोलन के दौरान हुआ। जब 1934 में 'अखिल भारतीय हरिजन सेवा संघ' की ओर से महात्मा गांधी असम आए तो उन्होंने जगह जगह अपने सम्बोधन में असमिया को हिन्दी से परिचित होने की बात कही थी। 'पूर्वोत्तर परिषद' के गठन के बाद से भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्र में हिन्दी के विकास के लिए प्रभावपूर्ण कार्य हो रहा है। इसमें 'केंद्रीय हिन्दी संस्थान' भी बड़ी भूमिका निभा रहा है। गोवाहाटी, शिलांग तथा दीमापुर में स्थित संस्थान के तीनों केंद्र हिन्दी के प्रचार-प्रसार और शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम चलाते हैं। पूर्वोत्तर राज्यों में सेना और सुरक्षा से जुड़े जवानों और रोजगार, पर्यटन, व्यापार, नौकरी, शिक्षण-प्रशिक्षण आदि के लिए लोगों के देश के विभिन्न हिस्सों में आवागमन ने हिन्दी की पहुँच यहाँ तक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। और आज पूर्वाञ्चल के लगभग सभी भागों में हिन्दी न सिर्फ बोली, समझी और लिखी जाती है, बल्कि मुख्य भाषा भी बनती जा रही है। हिन्दी पूर्वोत्तर राज्यों में अनुवाद की भाषा के रूप में महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। इस क्षेत्र के लेखक अपने-अपने क्षेत्र में प्रचलित लोककथाओं, लोकगीतों आदि का हिन्दी में अनुवाद करने के साथ-साथ मौलिक सृजन भी कर रहें हैं। फलस्वरूप पूरे भारत में यहाँ के साहित्य और संस्कृति और भाषा की पहुंच बन रही है।

देश के इस अति महत्वपूर्ण भाग की सुरभि और सुषमा बनी रहे और उनमें उतरोत्तर प्रगति हो, देश भर का जुड़ाव इस क्षेत्र से हो, इसके लिए आवश्यक है कि यहाँ की क्षेत्रीय भाषाओं के उत्थान और प्रसार के लिए काम हो। सभी प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं के विकास हेतु उनमें अनुवाद कार्य, कोश ग्रंथ निर्माण और व्याकरण निर्माण पर ज्यादा से ज्यादा काम की आवश्यकता है। इन भाषाओं में मौलिक साहित्य लेखन के साथ-साथ अब तक जो भी लिखा गया है उनके संग्रहण और समेकन की भी जरूरत है। साथ ही यहाँ के वाचिक साहित्य के संकलन, सम्पादन और प्रकाशन कार्य में भी बढ़ोत्तरी होनी चाहिए। और इसके साथ ही यह क्षेत्र पूर्णतया देश के अन्य क्षेत्रों से निकट रहे इसके लिए यहाँ हिन्दी के और व्यापक प्रचार-प्रसार, अध्ययन-अध्यापन पर काम की आवश्यकता है।

-संगीता कुमारी सहाय
पुलिस कॉलनी, रोड नंबर-2,
मकान नंबर-बी175, अनिसाबाद, पटना- 80002

पवारी बोली भाषा : इतिहास, वर्तमान तथा भविष्य

डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे

ऐतिहासिक तथ्य

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार अग्निकूलीन क्षत्रिय परमार (पंवार/पवार) वंश ने मालव प्रदेश पर ईसापूर्व 224-215 से ईस्वी 1306 तक अखंडित राज्य किया और उन्होंने भारत का सुवर्ण इतिहास रचा! इस राजवंश में महर्षि भर्तृहरि, सम्राट विक्रमादित्य, चक्रवर्ती राजा भोज, महावीर जगदेव जैसे युगपुरुष हुए (दशरथ शर्मा : पंवार वंश दर्पण, 1960) । पवार लोक मालवा से औरंगजेब के अंतिम काल (ईस्वी 1680-1700) में हिन्दू-मुस्लिम धर्मपरिवर्तन से बचने के लिए बैनगंगा-वर्धा घाटी क्षेत्र (विदर्भ-महाराष्ट्र तथा महाकौशल-मध्यप्रदेश) में आए एवम् गोंड तथा मराठा राजाओं की सेना में भर्ती हो गए, यह रेव्ह. एम. ए. शेरिंग (1879) ने अपनी जगविख्यात किताब 'हिंदू ट्राईब्स एंड कास्ट्स, भाग 2 तथा एंथ्रोपोलॉजी कमेटी रिपोर्ट ऑफ सी.पी.- सर अल्फ्रेड (1868) में विवरण किया है । कालांतर में वे इस क्षेत्र में प्रगतिशील सम्पन्न कृषक बन गये । उन्होने मालवा से अपने साथ अपनी मातृभाषा पवारी (पोवारी/भोयरी) बोली भी इस प्रदेश में लाई । भारत सरकार गृहमंत्रालय की जनगणना संलग्न भारतीय भाषा अहवाल वर्ष 1971, 1981, 1999, 2001 और 2011 में हमारी बोली का 'पवारी/पोवारी' नाम से उल्लेख किया गया है । बालाघाट जिला गजेटियर में भी पृष्ठ 72 पर 'पवारी' कही गयी हैं। भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रकाशित भारतीय भाषा विश्वकोश में ष्भारत की लघु एवं जनजातीय भाषांएं 2 (बी) आर्टिकल 391 अंतर्गत पवारी (पोवारी)-बुंदेली की उपभाषा का स्पष्ट उल्लेख हैं। विमलेश कांति वर्मा (1994) ने अपनी किताब 'हिन्दी की उपभाषाएं' में हमारी बोली 'पवारी/पोवारी' नाम से हिन्दी की एक उपभाषा के नाते उल्लेख किया है । बाद में गणेश देवी (2023, भारतीय लोकभाषा सर्वेक्षण), अनिक गंगोपाध्याय, 2020-ग्लिम्पसेस ऑफ इंडियन लैंग्वेजेस) आदि भाषाविदों ने भी हमारी बोली को 'पवारी/पोवारी' नाम से भाषाई जानकारी दी हैं । मराठी प्रदेश में शताब्दियों से रहने के कारण उसने भारी तादाद में मराठी शब्दों को आत्मसात किया हैं । पवारी/पोवारी बोली का 'अंतरर्राष्ट्रीय भाषा कोड'- pwr-ISO-639-3 तथा वर्तमान (ethnologic status) स्थिति- EGIDS 6&B& (endangered/असुरक्षित) दर्शाई गयी हैं ।

पवारी बोली : भाषा चरित्र

हमारी बोली का भाषा-चरित्र साधा भोला है। हमारी बोली गुड़-शक्कर जैसी मिठी है । माँ, पिता, भाई, बहन की ममता भरी है । उसमें माँ सरस्वती का निवास है । सरल शब्दों में पवारी बोली का भाषा-चरित्र निम्न प्रकार से परिचित कराया जा सकता है -

पवारी उच्चारण में 'ए' का 'ये' 'ऐ' 'अई', 'ओ' का 'वो', 'औ' का 'अव', 'अं' का 'अम' तथा 'अः' का 'अहा' अक्सर होता हैं। उसी तरह 'ण' का 'न', 'ळ' का 'र', या 'ड़', 'श' का स्य, 'ष' का 'स', 'क्ष' का 'अक्सऽ', 'ज्ञ' का 'अध्न' (मराठी भाषी) और 'ग्य' (हिन्दी भाषी), 'ऋ' का 'रु' और 'श्र' का स जैसा हैं। पवारी बोली में पुरुष तथा स्त्री लिंग ही है तथा नपुंसक लिंग नही हैं। पवारी क्रिया में आवो (आइए), जावो (जाइए), उठो (उठिए), बसो (बैठिए), खावो (खाइए), पिवो (पिजिए), बोलो (बोलिए), गावो (गाइए), लिखो (लिखिए) तो बस्या (बैठे), उठ्या (उठे), चल्या (चलें) जैसे बुंदेली क्रियापद हैं। पवारी में कुल 33 सर्वनाम हैं और मी, आम्ही, तु, तुम्ही जैसे सर्वनाम मराठी सर्वनामों से साम्य दर्शाते हैं। तृतीय पुरुष वाचक 'उ/वु' और स्त्री वाचक 'वा' तथा दोनो लिंगों के लिए 'वय' हैं। विशेषणों में पुल्लिंग ओकारांत (कारो, गोरो, थोड़ो, साजरो) तथा स्त्रीलिंगी इकारांत (कारी, गोरी, थोड़ी, साजरी) हो जाते हैं। 'है' के लिए 'से', 'आय' और इसी का बहुवचन 'सेत', 'सेती', 'आती' राजस्थानी लगते है। उपसर्ग तथा प्रत्येय बुंदेली, राजस्थानी से लगते हैं। पवारी में महाप्राण की जगह अल्पप्राण का उपयोग होता हैं, जैसे- 'दु:ख' को 'दुख', 'स्वत:' को 'सताहा', 'भूख' को 'भुक', 'हाथ' को 'हात' और दूध को 'दुद' आदि (ज्ञानेश्वर टेंभरे, पवारी ज्ञानदीप)।

निम्नांकित गीत में पवारी बोली का चरित्र चित्रण किया गया है-

पवारी बोली मा साख्खर घुली से
माय की माय अजी की छाया से
भाई- बहिन को पिरेम मिसरी से
वागदेवी सरसती शारदा बोलऽ से।

पवारी त साधी-सिधी बोली से
पवारी मा एकच नथनी श्नश से
गोशाला श्शश को श्स्यश बन जासे
पोटफोड्या श्षश, श्सश होय जासे।

श्ळश नही पवारी बोलीला मालुम से
बाळको बार, चाळको चार बनं से
तळा को तरा, गळु को गरु बोलसे
दिवाळी-होळी, दिवारी-होरी बनसे।

श्वश को श्बश बनकर बन-बन नाचऽ से
विहिर को बिहिर, वेसन को बेसन
वखर को बखर, वासरु को बासरु
वाघ को बाघ बनकर ऊ डखरऽ से।

श्री को सिरि, कृष्ण किसन होसे
प्रकार को परकार,ज्योत को जोत
विठ्ठल को इठ्ठल, रुक्मा रुकमा से
स्कुल को इसकुल जी होय जासे।

अनमोल पवारी लोकसाहित्य

1) पवारी लोक साहित्य में ष्गाव - संस्कृतिष् झलकती है -

कोष्टी घर को सूत बाई, कुंभार घर की कोरी मथनी
बारई घर का पान बाई, सोनार घर की सरी।
कामथ मा का धान बाई, बाप की लाडली ओ बहनाई।।
चलवो चलवो फुफा बाई, काकन बेरा भयी।।

2) पवारी लोक साहित्य में ष्मनोरंजनष् भी भरपुर है -

तेलसाई ओ तेलसाई, तेल मा पड़ी काई
हुकुमचंद की डंगो बाई, तेल चढावन गई।
तेली घर को तेल बाई, कोष्टी घर को सूत
कामत का धान बाई,दुकान पर को जिरो मिठ।

3) वैसे ही विवाह मे वर-वधू के गले में गोत (सुम की माला) डाली जाती थी, जिसे अंत में दुल्हन का भाई गाय दान देकर छुडाता था।इस अवसर का ष्अलंकारिकष् वर्णन इस गीत में हैं -

दादाजी को आंगन मा चंदन की डेर
चंदन की डेर ला बंधिसे रेशम की डोर,
रेशम की दोर ला लगिसे सोनो की खुर,
खुर ला बंधी से कपिला की दोर
रामू-सीता को गरो मा सोनो की मार।

4) कुछ लोकगीतों में ष्मायकाष् की याद मन को द्रवित कर देती है -

दरन मी दरसु गा बाई दरसु, दरुसु पाच दाना, मोरो माहेर को कारखाना।

दरन मी दरसु गा बाई दरसु सर दाना
जानु पयले माता पिता मंग जानु रामू सीता।।

5. विरह गीत - राखी के दिन पानी बरसता है और भाई बहिन को मिलनो असंभव होता हैं तब बहन की व्यथा निम्नप्रकार से व्यक्त होती हैं -

पानी बरसनो ओ ठहरऽ नही,
नदी नाला को वो पुर वसरऽ नहीं।

भाऊ मी गावं आऊ कसी-कसी , सडक से पुरो पानी मा गा डुबी।।
बस इस्टांड ठेसन जाऊ कसी, बारिश की लगी से गा लंबी झडी।
हायरे देवा मी का करु, का करु, भाई ला राखी बांधु रे कसी-कसी।

6) 'एक दो के पाढ़े' सिखाने वाला मंगलागौर पवारी लोकगीत भी अमर हो गया -

फू बाई फू फूगडी फू
एक दुय तीन चार पाच सय सात
खेलता खेलता दम भर्यो सोड मोरो हात।
फू बाई फू, फुगडी फू।

7) परहा (धान रोपनी) गीत भी मजेदार हैं -

झर झर पानी पडसे गा बाई पडसे
मोहन पटील को परहा गडसे-गडसे।
भरभर हवा चलसे गा बाई चलसे'
मोहन पटील को परहा गडसे-गडसे।
जसोदा दिवस बुडसे गा बाई बुडसे
मोहन पटील धाय धाय रोवसे गा बाई रोवसे।

8) कुछ गीत बड़े मार्मिक है -

औंदा काही पानी पड्यो नही, वार गयो उभो धान
भारी सुखा अकाल पड गयो, मर गयो गरीब किसान!

वर्तमान दयनीय अवस्था

जैसे-जैसे शिक्षा का हमारे समाज में प्रमाण बढ़ने लगा, वैसे-वैसे पवारी बोली हमसे दूर-दूर भागने लगी और वर्तमान स्थिति इतनी खराब है कि वह सिर्फ 10-20% ग्रामीण लोकों की मातृभाषा बन कर रह गयी हैं । ऐसा लगता है कि कहीं हमारी बोली पूरी तरह लुप्त नहीं होगी, दो -चार दशकों में! इसलिए पवारी साहित्य कला संस्कृति मंडल की मायबोली प्रेमीजनों ने 4-11-2018 को स्थापना की । सृजन संवर्धन का कार्य निरंतर चल रहा है । गद्य-पद्य साहित्य की 30-32 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं । काव्य, निबंध साप्ताहिक स्पर्धाएं चल रही हैं । यह अखिल भारतीय पवारी साहित्य सम्मेलन चौथा है । उसी तरह नूतन वार्षिक पवारी स्मारिका 'पवारी साहित्य सरिता' अंक पांचवाँ हैं । जनजागृती का कार्य चल रहा है । मायबोली बचेगी तो हमारी पैतृक वारसा बचेगा, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहर बचेगी, हमारी 'पवार' पहचान बनी रहेगी । अपनी बोली का सृजन संवर्धन करते समय सिर्फ पवारी तक ही अपने को बंदिस्त नही बनाना चाहिए । सिर्फ भूतकालीन जुनी-पुरानी संस्कृति से जुड़ी पवारी बोली, का जतन किया तो मात्र पैतृक संपत्ति संभालने जैसा होगा । तालाब का संचित पानी का संरक्षण! जिवाश्मों का जतन! आधुनिक युग परिवर्तन अनुसार बोली का आधुनिकीकरण करना जरुरी है । प्राचीन शब्द बोली भाषा त्यागती हैं और आधुनिक नये शब्द ग्रहण करती हैं, जैसे हम पुराने कपड़े त्यागते हैं और नये जमाने के, नई फैशन के लिबास अपनाते हैं । पवारी बोली के संग-संग दूसरी बोली तथा भाषाएँ चली तो शब्दों के आपसी लेनदेन से अपनी बोली का सर्वांगीण विकास अटल है। समृद्धि एक-दूसरी भाषा के सान्निध्य में बढती हैं । बोली का भाषाओं की ओर बहना प्रकृति का नियम है । अंत में, संदेश यही देना चाहूँगा कि आप जागतिक विकास युग में अपनी प्रतिभा प्रकाश पुंज करने तथा विकास की सीढ़ी चढ़ने के लिए देशी-विदेशी भाषाएँ सीखो, बोलो, लिखो, पढ़ो किन्तु अपनी मायबोली पवारी को ना भूलो-बिसरो। मातृभाषा (बोली) भी मुखमंडल में चलती फिरती रखो । कागज पर उतारो । डिजीटाइजेशन करो । अपनी मायबोली को जिती-जागती, बोलती-चलती रखो । उसे इतना विकसित करो कि वह शालेय तथा विश्वविद्यालयीन पाठ्यक्रमों की लोकभाषा के रुप में बनी रहें ।

-डॉ. ज्ञानेश्वर टेंभरे
4 विजयनगर दक्षिण अंबाझरी मार्ग
नागपुर -440022

बच्चों में मातृभाषाओं का हस्तांतरण

डॉ. दीनदयाल साहू

जैसाकि हम सभी जानते हैं भारत बहुभाषी राष्ट्र है। बच्चा जब जन्म लेता है उसी समय से मातृ भाषा माता-पिता के साथ भाई बहन और सगे संबंधियों से सीखता है। यह भाषा वाचिक और सांकेतिक रूप में होती है, जिससे बच्चा आसानी से अपने मन-मस्तिष्क के माध्यम से ग्रहण करता है। यह संकेत के रूप में जैसे बच्चे को चंदा को दिखाना है तो उसे हाथ से संकेत कर बताया जाता है कि देखो आसमान में चंदा मामा कितना प्यारा लग रहा है। रेलगाड़ी को दिखाकर बताया जाता है कि देखो रेलगाड़ी आ रही है। इस तरह हर खाने पीने की वस्तु, पहनने के कपड़े, बर्तन, मोटर, कार, साइकिल जैसे सभी वस्तुओं को संकेत के माध्यम से अवगत कराया जाता है।

बच्चे इस संकेत के माध्यम से सरलतापूर्वक अपनी मातृभाषा को जानता, समझता और सीखता है। यही से उनकी बुनियादी नींव मजबूत होती जाती है। यह मातृभाषा क्षेत्र विशेष पर निर्भर करता है। जैसे बंगाल में बंगाली, ओडिशा में उड़िया, पंजाब में पंजाबी, गुजरात में गुजराती और राजस्थान में राजस्थानी भाषा को बच्चे आसानी से सीख और समझ पाते हैं।

बच्चा जब स्कूल में पढ़ने जाता है तब क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और अन्य भाषाओं के संपर्क में आता है।

आजकल सबसे बड़ी समस्या यह देखी जा रही है कि वैश्विकीकरण का प्रभाव क्षेत्रीय भाषाओं पर पड़ने लगा है। इस प्रभाव के कारण ही मातृ भाषा पर संकट का बादल मंडराने लगा है। घर में पहले बड़े बुजुर्ग मातृभाषा का ही उपयोग करते थे, इससे उनके बच्चे भी मातृभाषा का उपयोग आसानी से कर लेते थे। आजकल इसके ठीक विपरीत घर में ही माता पिता मातृ भाषा का उपयोग नहीं करते, ऐसी स्थिति में बच्चों में मातृ भाषा का हस्तांतरण चुनौती बनता जा रहा है।

हमारी मातृ भाषा क्षेत्र विशेष के कारण निश्चित रूप से सहज और सरल होती है और बच्चों को सीखने में सहजता होती है। बच्चे आजकल मोबाइल का उपयोग बहुत ज्यादा करने लगे हैं जिसमें बच्चे मातृभाषा का उपयोग न कर हिन्दी या अंग्रेजी भाषा का उपयोग ज्यादा करते हैं।

जब तक मातृभाषा के प्रति स्वाभाविक रूप से आत्मसात करने के लिए प्रेरित हम नहीं होंगे तब तक बच्चों में हस्तांतरण संभव नहीं हो सकता है। आजकल गांव और शहरों के बीच की दूरी लगभग समाप्त सी हो गई है। शहरों में जो सुविधाएं उपलब्ध रहती थीं वह गांवों में दूर-दूर तक नसीब नहीं होती थी। इस कारण मातृभाषा का ही बोलचाल बड़े बुजुर्गो और बच्चों में देखा जाता था। अब समय इसके ठीक विपरीत हो गया है। जो भौतिक सुविधाएं शहरों में उपलब्ध हैं वही सुविधाएं गांवों में भी उपलब्ध होने लगी हैं। टी वी, मोबाइल, सड़क, जल, खेती के आधुनिक उपकरण, पक्के आधुनिक शैली के मकान, शादी-ब्याह में टेंट पंडाल, बफे व्यवस्था, अंग्रेजी माध्यम के स्कूल जैसी सुविधाएं होने के कारण इसका सीधा असर हमें मातृभाषा पर देखने को मिलता है।

यदि घर के बड़े बुजुर्ग अपनी मातृभाषा में बच्चों से बात करते हैं तो बच्चे हिन्दी में उत्तर देते हैं। यह बात अलग है कि हमारी राजभाषा हिन्दी सरल रूप में होने के कारण सभी आसानी से समझ जाते हैं।

वर्तमान समय में माता-पिता ही अंग्रेजी या हिन्दी में बात करते हैं तो स्वाभाविक है बच्चे भी अनुसरण करेंगे। शहर हो या गांव में निवास करने वाले सभी माता-पिता अपने बच्चों को हिन्दी और अंग्रेजी ही सीखाना चाहते हैं। इस स्थिति में हमारी मातृभाषा का हस्तांतरण संभव होना कठिन होता जा रहा है। यह बात अलग है कि अहिन्दी भाषी राज्यों में मातृभाषा हिन्दी के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है।

मातृभाषा का बच्चों में हस्तांतरण किसी एक राज्य या प्रदेश की समस्या नहीं है। प्राय: हर राज्यों की यही स्थिति बनती जा रही है। वैश्विकीकरण के प्रभाव को इसका मूल कारण माना जा सकता है।

बच्चे के जन्म के समय ही आजकल घरों में बच्चों के साथ मातृभाषा में संवाद नहीं किया जाता। बच्चों में नींव मातृभाषा में नहीं डाली जाती, इस कारण वह बड़ा होकर इसका उपयोग नहीं कर पाता। मातृभाषा के हस्तांतरण में बच्चों को कहीं भी दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

हर माता-पिता चाहता है कि वह सिर्फ अंग्रेजी और हिन्दी सीखेगा तभी उसे अच्छी नौकरी मिल सकती है। इस तरह की मानसिकता वाले भ्रम को तोड़ना भी असंभव सा होता जा रहा है। हिन्दी और अंग्रेजी की जड़े मजबूत होती जा रही हैं और मातृभाषा की जड़े कमजोर।

जिन्हें हम अशिक्षित कहते हैं वही हमारी मातृभाषा के संवाहक होते हैं जैसे घरों में काम करने वाले माली, घरों में काम करने वाली नौकरानी, बाजार में सब्जी विक्रेता, फेरी लगाकर सामान बेचने वाले लोग अधिकतर मातृभाषा का ही उपयोग करते हैं। कई राज्यों में स्कूलों में मातृभाषा को वैकल्पिक विषय के रूप में रखा जाता है, जिसमें बच्चे इस विकल्प को अनदेखी कर देते हैं।

यहां यह भी देखा जा रहा है कि कई राज्यों में मातृभाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया है। ऐसे राज्य अपनी मातृभाषा को अपनाने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल रही है। प्रयास यह भी होने चाहिए कि जो राज्य आठवीं

अनुसूची में शामिल नहीं है उन्हें जल्द से जल्द इस सूची में शामिल किया जाए ताकि वह राज्य अपनी मातृभाषा का उपयोग अनिवार्य रूप से कर सकें।

यह भी देखने में आ रहा है, कि प्राथमिक या नर्सरी के छात्र छात्राओं को गिनती में हिन्दी वर्णमाला एक,दो, तीन, चार तथा पांच के स्थान पर अंग्रेजी के वर्णमाला के अनुसार वन, टू, थ्री, फोर व फाइव पढ़ाया, लिखाया और समझाया जाता है। इस पर शिक्षा विभाग का ध्यान जाता है कि नहीं, यह प्रश्न चिन्ह होता जा रहा है।

बच्चे की नींव इससे मजबूत होने की बजाय कमजोर होती जा रही है। किसी भी विज्ञापन, होडिंग्स तथा प्रचार-प्रसार के माध्यमों में अंग्रेजी के वर्णमाला का समावेश अदृश्य सा हो गया है। अभी कम से कम यह देखने को मिल रहा है कि जो अभिभावक हिन्दी माध्यम से शिक्षा ग्रहण किए हैं वह अपने बच्चों को कुछ हद तक हिन्दी भाषा को किसी न किसी रूप में बच्चों में हस्तांतरण कर पा रहे हैं। आने वाले तीन से चार दशक में अभिभावक ही अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले होंगे वह अपने बच्चों को हिन्दी के प्रति कैसे जागरूक कर पाएंगे, यह चिंतन का विषय बनता जाएगा। अत: हिन्दी भाषा पर कार्य करने वाली शासकीय तथा अन्य संस्थाओं को गंभीरता से चिंतन मनन कर कोई हल निकाला जाना चाहिए।

हिन्दी दिवस पर बच्चों को स्कूलों में मातृभाषा से संबंधित प्रश्नोत्तरी, वाद-विवाद प्रतियोगिता, खेलकूद में हिन्दी शब्दों का उपयोग, लेखन प्रतियोगिता के साथ कहावत और मुहावरों के प्रयोग और उपयोग से संबंधित रोचक रूप से आयोजन किया जाना चाहिए। बच्चों की शिक्षा का आधार व्यवसायिक होने के साथ ही सांसारिक भी होने चाहिए, तभी मातृभाषा का हस्तांतरण बच्चों में हो पाएगा।

इस समय अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में भी हिन्दी का अच्छा प्रभाव देखने को मिल रहा है। इसका मूल कारण एक तरह से सोशल मीडिया में महत्वपूर्ण मोबाइल को माना जा सकता है। मोबाइल में ऐसी कोई भी क्षेत्र अनछुआ नहीं रह गया है, मोबाइल के माध्यम से हर जरूरत की सामग्री उपलब्ध मिनटों में हो जाती है। इससे बच्चे और सभी वर्ग के लोग आसानी से सभी समस्या का हल निकाल लेते हैं।

कोरोना काल के समय से सोशल मीडिया का प्रभाव बच्चे पर ज्यादा देखने को मिला। अब बच्चे ऑन लाइन किसी भी समस्या का हल आसानी से कर लेते हैं, उन्हें अभिभावक या शिक्षकों पर निर्भर रहना नहीं पड़ता। वर्तमान समय को बदलाव का दौर कहा जा सकता है, तेजी से हो रहे सांसारिक परिवर्तन को नकारा नहीं जा सकता। वर्तमान से समझौता करना मजबूरी भी हो गई है। हिन्दी माध्यम के स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम में परिवर्तित किया जा रहा है, अनपढ़ माता पिता भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में पढ़ा रहे हैं। शिक्षा का व्यवसायीकारण होता जा रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं में मातृभाषा में प्रश्न-पत्र हो। सामान्य ज्ञान के प्रश्न मातृ भाषा में होने चाहिए। स्कूलों में मातृभाषा के शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। घर में माता-पिता को अपनी मातृभाषा में ही बातचीत बच्चों से करनी चाहिए। इससे बच्चे भी अपनी मातृभाषा को आसानी से ग्रहण का बोलने लगेंगे। इस चुनौती से निपटने के लिए कार्य योजना बनानी चाहिए। यह सब व्यावहारिक रूप से सरल भी नहीं है। लेकिन यदि दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति हो तो निश्चित रूप से सफलता मिलेगी।हर राज्य में मातृभाषा में शिक्षा अनिवार्य की जानी चाहिए। यदि नियमावली बना कर मातृभाषा को बच्चों में हस्तांतरण किया जाए तो सफलता अवश्य मिलेगी।

-डॉ. दीनदयाल साहू
संपादक व साहित्यकार, भिलाई (छत्तीसगढ़)

विशेष सूचना

'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' त्रैमासिक पत्रिका के आगामी अंक हेतु लेख आमंत्रित हैं ।

'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' पत्रिका के आगामी अंक हेतु हिन्दी भाषा से सम्बंधित विविध विषयों पर लेख/आलेख, निबंध एवं शोध सामग्री भेजें। पत्रिका के स्थायी स्तम्भ 'साक्षात्कार' में वरिष्ठ साहित्यकारों, पत्रकारों, भाषाविदों, शिक्षाविदों, सरकारी कार्यालयों के उच्चाधिकारियों, प्रशासनिक सेवा अधिकारियों, विभिन्न देशों के राजनयिकों आदि के भाषा पर केंद्रित साक्षात्कारों को सम्मिलित किया जाता है । इसी तरह 'लोक भाषाओं का चमत्कार' स्तम्भ में किसी एक भारतीय भाषा/उपभाषा एवं बोलियों पर केंद्रित लेखों को सम्मिलित किया जाता है जिसे विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाता है । अब तक बुंदेली, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, कुमाऊंनी, भोजपुरी, पंजाबी, अवधि, नेपाली, मैथिली, डोगरी, संस्कृत, संथाली, तमिल, कश्मीरी, मालवी, बघेली, हरियाणवी, बंगाली एवं पूर्वोत्तर भारत के भाषाओं के विशेषांक प्रकाशित हो चुके हैं । 'युवा मत' स्तम्भ में देश के विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत शोधार्थियों एवं युवा लेखकों के भाषा पर केंद्रित शोधपरक लेखों को सम्मिलित किया जाता है । पत्रिका के आगामी अंक हेतु कृपया जौनसारी/कन्नड़/मलयालम भाषा और उसका साहित्य, गुजराती भाषा का इतिहास और विकास, हिन्दी और जौनसारी/कन्नड़/मलयालम भाषाओं के बीच तुलनात्मक अध्ययन, आधुनिक हिन्दी साहित्य में जौनसारी/कन्नड़/मलयालम भाषा की उपस्थिति, मातृभाषा शिक्षा और जौनसारी/कन्नड़/मलयालम की स्थिति, जौनसारी/कन्नड़/मलयालम भाषा के संरक्षण में सरकार एवं समुदाय की भूमिका आदि से सम्बंधित सारगर्भित लेख 20 अगस्त, 2023 तक नीचे दिए गए ई-मेल पर भेजें।

E-mail : hindustanibhashabharati@gmail.com

भारतीय अस्मिता की प्रतीक हिन्दी

माणक तुलसीराम गौड़

जिस तरह किसी देश का एक राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत होता है उसी प्रकार एक राष्ट्रीय भाषा भी होती है। राष्ट्रीय भाषा को वहाँ की सरकार और जनता से मान्यता मिल जाने पर वहाँ की एक मात्र सार्वभौमिक भाषा बन जाती है और कालान्तर में वह भाषा उस देश की तथा वह राष्ट्र उस भाषा के प्रतीक बन जाते हैं, एक दूसरे से ओत-प्रोत हो जाते हैं, दूसरे शब्दों में वह भाषा उस राष्ट्र की अस्मिता का प्रतीक बन जाती है। जैसे- चीन भाषा चीन की, जर्मन जर्मनी की, रूसी सोवियत संघ की और हिन्दी भारत वर्ष की अस्मिता की प्रतीक है।

हिन्दी जोड़ती है तोड़ती नहीं

अब ये शब्द एवं वाक्य एकदम घिसेपिटे, रटे रटाये, एक ही लकीर पर चलने वाले बन गए हैं कि राष्ट्रीय भाषा अपने देश को एक सूत्र में पिरोती है, राष्ट्रभाषा के बिना वह देश गूंगा है, इत्यादि। अब तो बात यहाँ तक पहुँच गई है कि केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु विश्व में प्रत्येक देश की निज भाषा उसके निज गौरव, स्वाभिमान की बात हो और वह भी राष्ट्र की गरिमा के साथ तो वहाँ पर तर्क वितर्क या वाद-विवाद का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

जहाँ तक हिन्दी भाषा को भारतीय अस्मिता का प्रतीक मानने की बात है, भारत के संविधाान ने इसे राजभाषा घोषित किया है। इसे व्यवहार में लागू करने हेतु विधान एवं नियम बने हैं। भारत वर्ष के अधिकांश भू-भाग में इसे मातृभाषा का रुतबा प्राप्त है तथा शेष भाग में जन संपर्क की एक मात्र भाषा हिन्दी ही है। अत: यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नहीं होगा कि जो शर्तें एवं दशाएँ एक राष्ट्रभाषा को अपना स्थान सिद्ध करने के लिए पूरी करनी होती है उन्हें हिन्दी भाषा पूरी करती है। अत: सैद्धान्तिक व व्यवहारिक तौर पर हिन्दी अपने देश की राष्ट्रभाषा है और जब राष्ट्रभाषा है तो अस्मिता का प्रतीक तो स्वाभावत: बन ही गई है। क्योंकि जननी जन्म भूमिश्च: स्वर्गादपिगरियसि। अर्थात् माँ व जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़ कर महान् है। हिन्दी भी हम करोड़ों भारतवासियों की माता है। अत: मैं तो इस वाक्य को इस तरह लिखना चाहूँगा- जननी राष्ट्रभाषा जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरियसि।

कुछ कठिनाइयाँ

हिन्दी भारतीय अस्मिता का प्रतीक होते हुए भी व्यवहार में उसे वह स्थान अभी तक नहीं मिल पाया है। उसमें गलती हिन्दी की नहीं है बल्कि हम सबकी है। हम हमेशा अपना स्वार्थ साधने के लिए किसी को भी बलि का बकरा बनाते आएँ हैं। हिन्दी भी उस स्वार्थपरता व हमारी गिरी हुई मानसिकता का शिकार हुई है। बहाना चाहे तो कुछ भी बनालें। जैसे-हिन्दी थोपी जा रही है, हिन्दी थोपने से देश टूट जाएगा, हिन्दी भाषा विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र में समर्थ नहीं है इत्यादि-इत्यादि। मेरी दृष्टि में ये सभी बहाने हैं और बहानों का कोई समाधान या दवा नहीं होती। सत्य को हमेशा स्वीकारा जाता है और स्वीकारा जाना भी चाहिए और यह सुकार्य जितना जल्दी हो सके उतना हमारे लिए, हमारे देश के लिए और हमारी भाषाओं के लिए हितकर होगा। क्योंकि यह एक सत्य है। सत्य परेशान हो कसता है, परंतु पराजित नहीं। यह अमर वाक्य यहाँ लागू होता है।

हिन्दी स्वयं सक्षम है

हिन्दी साहित्य का इतिहास बताता है कि विश्व में अनेक प्रकार की बोलियाँ एवं भाषाएँ थीं, परंतु वर्तमान वैज्ञानिक युग में केवल वे ही भाषाएँ जीवित रह पाती हैं जो स्वयं सक्षम, सरल एवं वैज्ञानिक आधाार पर खरी उतरी है। प्राचीन काल में संस्कृत व खड़ी बोली से मिलकर अपना अस्तित्व बनाकर ज्यों ही यह आगे बढ़ी, मुगलकालीन साम्राज्य में अटकी, फारसी व उर्दू भाषा ने इसका रास्ता रोका, परंतु हिन्दी की उदारता ने उर्दू शब्दों व भारतीय प्रादेज़िक भाषाओं के अनेक शब्दों को अपने में समाते हुए आगे का सफर जारी रखा। फिर आ गई इसकी होड़ में सौतेली भाषा अंग्रेजी। फिर भी यह सजीव व प्राणवान बनी रही। हिन्दी को जितना नुकसान अंग्रेजी भाषा ने नहीं पहुँचाया उतना हम लोगों की गुलामी, अंग्रेजियत व गिरी हुई मानसिकता ने पहुँचाया है। इतना भयंकर रास्ता काटकर जो भाषा आज राज सिंहासन पर विराजमान है, वह आज वास्तव में इस पद की दावेदार है तभी तो हम इसे भारतीय अस्मिता का प्रतीक मानकर इसके साथ न्याय ही कर रहे हैं। इसके साथ यह भी सत्य है कि हिन्दी भाषा पिछड़ी हुई नहीं है। उसने मीलों लम्बी यात्रा खुद पूरी की है और अनवरत रूप से आगे बढ़ती जा रही है। जो पिछड़ापन नजर आता है उसका कारण केवल राजनीतिक ही है। हिन्दी का उसमें तिलभर भी दोष नहीं है।

आनन्द और प्रेम की भाषा

'भारत की भाषाएँ और हिन्दी' नामक आलेख में लेखिका सुधा जी ने क्या सटीक लिखा है- ''खुले दिल से सबका स्वागत करनेवाली हिन्दी 'जयहिन्द' की भाषा है, 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' की भाषा है। 'जय जगदीश हरे' की यह भाषा व्यापार-वाणिज्य में भी निष्पात है, देश की रक्षा में तैनात वीर सैनिकों को एक सूत्र में बाँधाने वाली भाषा भी यही है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह संदेश कि 'स्वतंत्रा हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'- जन-जन तक पहुँचानेवाली भाषा यही थी। यह मनोरंजन की भाषा है। यह आनन्द और प्रेम की भाषा है।

सोने जैसी लिपि

''हिन्दी की एक प्राकृतिक शक्ति है उसकी लिपि देवनागरी। बिल गेट्स कहते हैं- ''बोलकर लिखाने की प्रविधि जब संसार में चलेगी तो केवल 'देव' नागरी ही ऐसी लिपि होगी, जिसमें सही भाषा

लिखी जा सकेगी।'' स्वयंसिद्ध लिपि देवनागरी को इस प्रमाणपत्र की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए थी। क्योंकि यह बात सब जानते हैं कि संसार में इसके समान वैज्ञानिक लिपि दूसरी नहीं है। ऐसे में इस प्रवृत्ति पर रोक लगानी चाहिए कि हिन्दी या कोई भी भारतीय भाषा रोमन या किसी अन्य लिपि में लिखी जाए। हमारे पास खरे सोने जैसी लिपि है, तब हम क्यों अपनी भाषा को किसी अन्य लिपि में धूल चटाएँ ?''

भाषा से कोई विरोध नहीं

भाषा विषयक भारतीय ऊर्जा न केवल अपनी भाषाओं की रक्षा करने में सक्षम है, बल्कि इसमें अन्य भाषाओं को पचा लेने की तगड़ी पाचनशक्ति है।

इन्हीं समृद्ध और सशक्त भाषाओं में एक है हमारी लोकप्रिय भाषा हिन्दी। हिन्दी का किसी भी भाषा से कोई विरोध नहीं। कवि स्वर्गीय वीरेन्द्र मिश्र ने हिन्दी के प्रति जो उद्‌गार प्रकट किए थे, वे पूरी तरह सटीक हैं-

इसका स्वाद प्रसाद बहुत है, जन भाषा रसवंती,
ऋतुओं में वसंती है यह, रागों में मधुवंती।
भाषाएँ हों चाहें जितनी, यह सबकी हमजोली।
स्वागत करती हिन्दी सबका, बिखरा कुंकुंम रोली।

राष्ट्र भावना जाग्रत हो

राष्ट्र का गौरव, राष्ट्र का स्वाभिमान, राष्ट्र की इज्जत, राष्ट्र की आजादी ये सभी भावनात्मक चीजें हैं। इन्हें प्रत्येक्ष देखा नहीं जा सकता, केवल अनुभव किया जा सकता है। ठीक उसी तरह हिन्दी की अस्मिता जन-जन से जुड़ी हुई है जिसे केवल अनुभव ही किया जा सकता है। ज्ञान-विज्ञान के लिए कोई दूसरी भाषा पढ़ने की जरूरत नहीं है। अपनी भाषा ही हर क्षेत्र के शब्द, अर्थ एवं भाव संजोने में सक्षम है। हम अपनी भाषा पर पूर्ण विश्वास, निष्ठा एवं श्रद्धा उडेल कर दुनिया को दिखा दें ताकि ज्ञान-विज्ञान सीखने के लिए दुनिया हमारी भाषा सीखेगी।

आज की स्थिति

हिन्दी की वर्तमान में जो स्थिति है उसके लिए चार पंक्तियाँ प्रस्तुत है:

राष्ट्र भाषा का रूतबा पाकर,
फिर भी उपयोग में हिन्दी नहीं है।
अरे! यह कैसी सुहागिन नारी,
जिसके भाल पर बिंदी नहीं है।

माँ के भाल पर बिंदी लगाने का कार्य हम सभी का है। क्योंकि हिन्दी हमारी संस्कृति का प्रतीक है। यदि हमारी संस्कृति को जीवित रखना है तो हिन्दी के रास्ते में हम जो स्वयं रोड़े बनकर खड़े हैं, स्वयं हट जाना चाहिए ताकि उसका निर्मल प्रवाह शीतल मन्द व सुगन्धित पवन की तरह चलता रहे और उसकी सुगंध से हम अपने आपको सुगंधित व उत्साहित महसूस करते रहें। देखिए गोपाल सिंह नेपाली की तर्ज पर-

भाषा बहता नीर, इसे बहने दीजिए,
यह बहती सुगंध बयार, झूमके साँसें लीजिए।

आशा एवं उत्साह से भरा भविष्य

हिन्दी का भविष्य उज्जवल है इसमें कोई संदेह नहीं। हमें चाहिए कि जो भूलें भूतकाल में हो चुकी हैं, उन्हें भूलें। वर्तमान में हम अपना आत्मावलोकन करें। गलतियों का परिमार्जन करें। कहीं गलतियाँ पुन: दोहराई न जाएँ इसका ख्याल रखें। नए तरीके से सोचें, नई योजनाएँ बनाएँ, आत्मपरीक्षण करें और हिन्दी तथा हिन्द के हित की व इनके उज्ज्वल भविष्य की बात करें और तदनुरूप वर्तमान को बनाने का सुप्रयास करें। सफलता हमें अवश्य मिलेगी और हमारा सपना साकार होगा। जन-जन मुक्त कंठ से कह उठेंगे कि हिन्दी भारतीय अस्मिता का प्रतीक है। और यही युग की मांग है।

अंत में, हिन्दी साहित्य के सूरज भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में-

निज भाषा उक्ति अहै,
सब उक्ति को मूल।
निज भाषा उक्ति बिना,
मिटे हिय को शूल।

-माणक तुलसीराम गौड़
द्वितीय तल, नं. 247, 9वीं मैन
शान्ति निकेतन लेआउट, अरेकेरे
बंगलूरू-560076

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

'भाषा-विमर्श : माटी के शब्द बचें तो बचें कैसे !'

पाँच वर्षीया चम्पी उछल-कूद रही थी।सहसा अपने बाबा के पास पहुंच गई। "हां-हां- हां, दूरै रहेव ।" बाबा ने लपक कर चेताया । 'बरधा' बहुत झौंकावत है।" चम्पी ठिठककर खड़ी हो गयी। कभी बाबा को सुनती, कभी बैलों को निहारती। कभी बैलों पर बाबा के अनुशासन का अवलोकन करती। बाबा ने 'चन्नी' पर लगे बैलों का 'नादा' देखा। नादा सफाचट हो चुका था। बैलों का पेट भी भरा हुआ दिखा। बाबा ने बैलों का मस्तक सहलाया। बैलों ने भी उनके आगे माथा टेक दिया। प्यार और भरोसे की परस्पर पराकाष्ठा दिखी । बाबा ने बैलों का पगहा चन्नी से खोला। बाएँ बैल का पगहा उसकी पीठ पर ही डाल दिया। दाहिने बैल को पकड़े-पकड़े बाहर आ गए। बायाँ बैल अपने आप पीछे-पीछे आ गया। महुआ पेड़ के किनारे जुआठा रखा था। बैल वहाँ आकर रुक गए । बाबा ने जुआठा उठाया। उसे दाहिने बैल के गले के पास ले जाकर बोले- "जुट-जुट।" उसने अपनी गर्दन डाल दी। बाबा ने जुआठे में दाईं तरफ वाली सइल पहना दी। अब जुआठे का दूसरा सिरा बाएं बैल की तरफ कर दिया। गजब! "जुट-जुट" सुनकर उसने भी गर्दन जुआठे में डाल दी। बाबा ने सइल पहना दी। अब दोनों बैल सधकर, सीधे समानांतर खड़े हो गये। बाबा ने जुआठे में लगी डोरी थामी। बैलों की नाथ पकड़ी, बगहा भी पकड़ा।

"हाँउ" सुनते ही बैल आगे बढ़ चले। सिर हिलाते, पूँछ हिलाते, गर्दन तानते शान से चले। दुआरे से चलकर रास्ते पर आये। बैलों की युगल जोड़ी आगे-आगे, पगहा थामे बाबा पीछे-पीछे! गांव की आबादी पार की। कुँए की नाली पार की। बिना आदेश पाये ही वे बाईं तरफ मुड़ गये। उनको पता था कि खेत किधर, कहां है। फिर, कटहल वाले खेत में उतर गए। खेत में रखे 'हर' (हल) के पास जाकर रुके। बाबा ने पेड़ की डाल में टँगा झोला उतारा। उसमें रखी 'खोंपी', 'अगवासी' और 'फार' निकाला । खोंपी नीचे, अगवासी ऊपर और फार बीच में रखकर हल में लगाया। पास की ईंट से ठोंक कर बैठा दिया। बाबा अपनी इंजीनियरिंग से संतुष्ट हुए। हल की मुठिया पर हाथ रख बैलों को हाँकने चले। तभी देखा कि चम्पी मेड़ पर खड़ी है। विस्मित-सी सारी प्रक्रिया देख रही है।

"अरे तू यहां तक चली आयी! देख कितना घाम है ! लौट जा घर।" बाबा ने प्यार से समझाया। चम्पी न लौटी, न मुड़ी ही! वहीं खड़ी रही। इच्छा थी कि बाबा के काम का तरीका देखे । बाबा ने उसकी भावना को ताड़ लिया । उन्होंने पेड़ की छांव में गमछा बिछाया। चम्पी को प्यार से बैठाया और पुचकारा । चम्पी का चेहरा अम्लान हो गया। इस दरमियान, जुआठा में नधे दोनों बैल शांत खड़े रहे। बाबा ने हल की मुठिया फिर से थामी। पैना झटका, "हांउ" कहा। बैल सधी चाल से चल पड़े। सीधी लाइन में कूंड़ बनाते हुए चले। बाबा की गति से चले । मेड के किनारे- किनारे चले। कूंड़ में जरा मोड़ आते ही बाबा बोले- "हांउवाउवा" बैल बाएँ मुड़ते हुए सीधे हो गए। किन्तु मेड़ का किनारा ना छोड़ा। कूंड़ खींचते हुए एक सीधी लाइन पूरी की। मोड आने पर बाबा बोले, "हां.उ वा.नउ, उवा.नउ, ठउरैनउ।" बैलों की जोड़ी मेड़ के सहारे बाएं मुड़ गई। फिर भी मेड के किनारे-किनारे ही चली। दूसरा मोड़ आया तो फिर "हां..उ वा.नउ, उवा.नउ।" और बैल फिर मुड़ गए, मेड़ के सहारे । इसी तरह तीसरे और चौथे मोड़ पर भी वे मुड़ते गये। खेत की जुताई का एक कूंड़ पूरा हुआ। इसी तरह दूसरा, तीसरा, चौथा, दसवां, बीसवां, सौवां, आखिरी कूँड़ भी पूरा हुआ।

आधे खेत की जुताई पूरी हुई। दुपहरिया का समय हो गया। लेकिन, चंपी को भूख नहीं लगी। वह तो बाबा और उनके बैलों पर नजर गड़ाये हुए थी। ''थम'' कहते हुए बाबा ने बैलों का पगहा खींचा। बैल यथास्थान रुक गए। बाबा ने जुआठा से हल को अलग किया। बैलों को 'पइना' छुआया। बैल चल दिये।खेत पार करते हुए बैल जरा ठिठके। बाबा ने कह दिया, "तक्क-तक्क. तकित-तकित।" बैलों ने मुड़कर घर का रास्ता पकड़ लिया। स्वत: निर्देशित थे दोनों बैल। आगे-आगे बैल, पीछे-पीछे बाबा । बाबा के पीछे चम्पी। चम्पी के हाथ में बाबा का 'अँगौछा'। दुआरे पहुंच गयी बैलों की जोड़ी। यह जोड़ी बड़े खूँटे के बगल रुकी। "खुट" बाबा जुआठे से दाहिनी सइल निकालते हुए बोले। दाएँ बैल ने जुआठे से गर्दन निकाल ली।इसी तरीके से बायाँ बैल भी जुआठे से खुट हो गया। बाबा ने एक-एक कर दोनों को खूंटे से बांध दिया। दोनों बैलों ने अगले पैरों की 'खुर' से जमीन खुरचालनी शुरु की। मानो, अपनी उपलब्धि पर संतुष्टि व्यक्त कर रहे हों। बाबा ने बैलों की पीठ पर थपकी दी। वे शान्त हो गये। आहिस्ते से बैठ गये। खेत में कई घंटे चले थे। बिना रुके चलते रहे थे। थक भी गए होंगे। पहुंचे कहीं नहीं, फिर भी संतुष्ट थे। बैल भी और बाबा भी! चंपी अब भी नहीं बैठी । बाबा के पीछे ही लगी रही। बाबा ने बाल्टी उठाई। चोंड़ा तक गये। ढेंकुल चलाई। पानी भरा। बाल्टी में उड़ेला। चम्पी का हाथ-पैर धोने लगे। "बाबा पहले बरधवन का पनिहावौ।" चम्पी ने भोलेपन से कहा। बल्कि आग्रह किया। "ठीक" बाबा ने यही किया। बाल्टी का पानी बैलों के आगे रखा, पिलाया। इसके बाद बाबा ने हाथ-पैर धुला। पहले चम्पी का, फिर अपना। अंत में, पकड़िया के पेड़-तले पड़ी बँसखट्टी पर बैठ गए। समथाने लगे। चम्पी भी बाबा के बगल ही बैठी ।

चम्पी समथाते समय भी निष्क्रिय नहीं थी!। वह सोच रही थी कि अनपढ़ बाबा बैलों के मास्टर कैसे बने हुए हैं! कैसे उनके एक अनुदेश पर बैल सक्रिय हो जाते हैं! कैसे बैल बाबा की निपट गँवई अवधी समझ ले रहे हैं! बाबा अपनी पारिभाषिक शब्दावलियों का कैसे निस्तूक प्रयोग करते हैं! कैसे बाबा ने हल में फार, खोंपी, अगवासी लगा लिये! बिना किसी मैकेनिक के, बिना किसी इंजीनियर के।

चम्पी के मन में अकुलाहट थी, इठलाहट भी । वह अपनी सारी जिज्ञासाओं को उड़ेल देना चाहती थी। वह बाबा से और सट गई। बाबा ने इसे उसका दुलार माना। वे उसे दुलराने लगे। अब तो खुल ही गई चम्पी।

''बाबा! एक बात पूछूँ?"
"हाँ-हाँ, पूछौ धेरिया, पूछौ।
"बाबा! आप बैलों को इतना क्यों मोहाते है?"
"काहे से कि ओनहीं के बल पै तो रोटी मिलति है।"
"वे कैसे आपकी हर बात समझ जाते हैं? हर बात मान लेते हैं?" चम्पी ने प्रश्न किया। फिर लगातार कई तीर दाग डाली।
"उवावा, नउ.नउ, ठउरैनउ, तक्क- तक्क तकित-तकित क्यों बोल रहे थे आप ?" "जुट और खुट का मतलब ?"
" आपने यह भाषा कहाँ पढ़ी? कब पढ़ी? किससे पढ़ी? जुताई कैसे सीखी? इसका प्रैक्टिकल कहाँ किया ? यह भाषा बैलों को किसने सिखायी? एक ही खेत में घूमते-घूमते थक नहीं जाते होंगे? अपनी थकावट वे कैसे बताते होंगे?"

उत्तर देना कठिन था।बाबा जवाब सोचने लगते, तब तक अगला प्रश्न आ जाता। तभी, सहसा दादी आ गयीं।

"खेलै-कूदै के उमर मा एतनी परवाह ? चलौ दुपहरिया कइ लेव।" वे चम्पी को गोदी उठा ले गयीं।

बाबा को थोड़ा सावकाश मिल गया। अब सोचकर उत्तर देंगे। शाम को बैठकी तो होनी ही है! चम्पी पीछा नहीं छोड़ेगी। वह अपनी उत्कण्ठा शांत कराकर ही मानेगी कि आखिर बाबा बैलों से ऐसी मास्टरी कैसे कर लेते हैं!

चम्पी ने बाबा की दिनचर्या देखी। गौर से देखी। आधे दिन की दिनचर्या, पूरी चेतना का उद्वेलन! उसने 'बरधा', 'चन्नी', 'नादा' शब्दों के अर्थ का तो अनुमान कर लिया। अवधी में बरध या बरधा बैल को कहते हैं। 'झौंकावत' शब्द को लेकर देर तक सोचती रही। अब गाँव मे भी बैल नदारद हैं, सो वह नाथि, गटहिला, मोहरी, जाबा को नहीं जानती। जुआठा, सइल, खोंपी, अगवासी, हर, फार, मुठिया, कुन्दा से नहीं परिचित। उसने बैलों की 'गोई' का जुआठा में जुट होना या उससे खुट होना भी नहीं देखा है।, खूँटा, खटिया, घरे, दुआरे शब्दों से कुछ-कुछ परिचित है, किंतु अँगौछा, नदोला, कूँड़, खुर, पइना, ढेंकुली, बँसखट्टी शब्दों से दूर का भी नाता नहीं है। उसे क्या पता कि 'बरधवन' शब्द में कौन सा प्रत्यय लगा है! 'पनिहावइ' भला क्या बला है। उसे अनुमान भी नहीं है कि हांउ, उवा-वा, तक्क, तकित कब बोला जाता है। अथवा 'ठउरै नउ' बोलने पर क्या होगा! या फिर 'हांउ-थम' ना कहते बाबा, तो क्या होता।

चम्पी कस्बाई लड़की है।अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में पढ़ रही है। गांव का परिवेश छूट गया है। गांव की भाषा से परिचय ही नहीं हो पाया, क्योंकि जिस उम्र में भाषा-विकास प्रबल होता है, उस उम्र में उसका गांव से नाता शून्य हो गया । जमीन में खुदे जिस गड्ढे के पानी से उसके अग्रज खेलते थे, सिंचाई होती थी, उस 'चोंड़ा' शब्द से वह अपरिचित रह गई। पालतू पशुओं को पानी पिलाने को 'पनिहावइ' कहा था बाबा ने, किंतु चंपी समझ नहीं पाई। सागवन की मसहरी पर लेटने वाली चम्पी 'बँसखट्टी' को क्या जाने? वह इस तथ्य से भी अनभिज्ञ है कि बाबा हों या बैल, किस दशा में 'समथाय' चले जाते हैं ! दो बैलों की जोड़ी को गांव में 'गोई' कहा जाता है, यह उसे नहीं पता। गँवई लोग अपने साझेदार मित्र को 'गुइयां' कहते हैं। कोरोना काल में चेहरे पर फेसमास्क तो उसने देखा था, खुद लगाया भी था, किंतु जाबा नहीं देखा था, जो गेहूँ की पयारी पर दँवरी घूमते हुए बैलों के मुंह पर लगा रहता है। मोटे श्रीअन्न ज्वार का प्रचलन बढ़ रहा है, फिर भी नयी पीढ़ी इसके अवधी नाम 'लहड़रा' से अनभिज्ञ है। जोंधरी, मसुढ़ी, खबहा, कोंहड़ा, पेंहटा, होरहा, घुघुरी, दुग्धी, चबइना जैसे रोजमर्रा के शब्द भी इस नयी जमात के पाले नहीं पड़ते होंगे! बनियान को गंजी कहते होंगे, मुला अवधी भाषा-क्षेत्र में शीत ऋतु की एक भूमिगत फसल है 'गंजी', यह आंग्ल माध्यम वाले कैसे जान पायेंगे!

खेती के प्रति जनरुचि क्षीण हो रही है । ऐसे में गांव में भी न परम्परागत कृषि-यन्त्र रह गये, न उनके नाम। रोटावेटर ने 'हेंगा' की जरूरत खत्म कर दी। 'चखुरी' की बिनाई अब नहीं होती। बाँस के 'ढरका' के सहारे पशुओं को पौष्टिक या औषधीय पेय पिलाने का उपक्रम भी नहीं रह गया। बहारने के लिए झाड़ू तो घर-घर में मिलेगा, किन्तु जब दुआरा ही नहीं रह गया तो 'खरहरा' का क्या काम ! संध्या बेला में गांव के चौडगरा पर 'ढरकौना' अब बिरले ही चढ़ाया हुआ मिलता है। दूधमुँहे बच्चे से देर तक दूर रही मां का कलेजा जब अपने पाल्य के लिए 'चोकरता' है, तब उसका मर्म दुनिया का कोई शब्दकोश नहीं बता सकता। इसी तरह अवधी के चिहुँकत, कुहुकत, पिंहकत और कुकुआत, शब्दों का सटीक अर्थ बिना संदर्भ निकाल पाना जरा मुश्किल है।

चम्पी अकेली ऐसी बालिका नहीं, जो परम्परागत ग्राम्य शब्दों से अब अपरिचित हो गई है, नयी पीढ़ी के लगभग शत-प्रतिशत बच्चे अपनी मातृबोली से कट-से गए हैं । गाँव में भी काफी परिवार खेती से किनारा कर चुके हैं। कंक्रीट के फैलते साम्राज्य में उनके बच्चों का साबका अब मिट्टी के काम वाले फरुहा, कुदार बेलचक, गँइती, खैंची, झउआ, रसरी से नहीं पड़ता। फसल की सँभाल से दूर होते जा रहे परिवारों के परिवेश से दँवरी, पयारी, लेहना, खरिहान, कँदई, ओइरावै, नरई, अउसा, बखार, हरवत, बिरवाही, मजूर, उतेर, पलिहर जैसे सैकड़ों शब्द बहिर्गत होते जा रहे हैं।

गांवों का आजकल तेजी से शहरीकरण हो रहा है।ऐसे में जनजीवन के बीच से नरिया, खपड़ा, कण्डा, भुसइला, गटहिला, चूनी, चोकर, छाँद, गड़रा, ओइरावै, पाथै शब्द उठते जा रहे हैं। कस्बाई आमजन भी अब 'चिरुवा' पानी नहीं पीता। मुहल्ले के कुँए पर 'उबहन' नहीं रहती। गोवंश तेजी से घटते जा रहे, ऐसे में अब गउढ़ी कहाँ, अउढ़ी कहाँ, गोइंती कहाँ, गोइंठी कहाँ ? नादा में 'सानी' का चलन खत्म हो रहा। अपनी अवधी भाषा में गोंइड़े का महत्व भी उसे नामालूम। टीन एजर बच्चे अब छपरा की 'ओर उवनी' चूते हुए नहीं देखते । लगभग सबके घर पक्के हो गए हैं, तो ना अब थाम, थमड़ा,

पृष्ठ संख्या 32 का शेष

थूनी, बड़ेर, मुड़ेर, थुनिया, टटिया, मड़ई, मड़ही, मड़हा, छपरा, परछती, ओसारी उनके घर का हिस्सा नही रह गये, ना इन शब्दों का आम इस्तेमाल ही हो रहा! फिर तो ये शब्द उनकी भाषा का हिस्सा कैसे रह पायेंगे? धीरे-धीरे मिट ही तो जाना है! किशोरवय बच्चे अब 'आइसु' खाने नहीं, पार्टी अटेंड करने जाते हैं। माण्टेसरी स्कूल में पढ़ रहे नौनिहाल को छड़ी उठाने को कहो, तो स्टिक उठा लेगा, लेकिन डण्डा का समानार्थी गोदा, गोदहरा, गोदाहा, सोंटा, लुकाठी, लबदा या छपकी, छपका तो उसने सुना ही नहीं, पहचानेगा कैसे ? पैर का दूसरा नाम वह 'फुट' या 'लेग' भले ही बता दे, गोड़, गोड़हरी, गोड़हरा, पाँव, टाँग, टँगरी, टंगड़ी, पद, पाद, पँइया, पँउवा तो कतई नही बता पायेगा, क्योकि इनका उच्चारण करना घर मे मनाही है, तो स्कूल में दण्डनीय!

यह हिन्दी की एक उपभाषा अवधी कई समस्या नहीं है। बघेली, छत्तीसगढी, मैथिली, मगही, भोजपुरी, बज्जिका, ब्रज, बुन्देली, कौरवी की भी समस्या है कि इनके बहुतेरे शब्द हिन्दी शब्दकोश का भी हिस्सा नहीं बन पाये। गढ़वाली, कुमाउंनी, हरियाणवी, मारवाड़ी, मेवाड़ी, मालवी, संथाली, थारू बोलियों के शब्द तीव्रता से प्रचलन से बाहर होते जा रहे हैं। यही नहीं, गारो, खासी, जयन्तिया, असमिया, नेपाली, सिलहटी, मणिपुरी, मिजो, न्यीशी, नगामी, ककबराक, उड़िया की लोकबोली के शब्द भी मृत्युपथ की ओर ढकेले जा रहे हैं। ऐसे में नई पीढ़ी के शब्दकोश में ये शब्द बचे कैसे रह पायेंगे! युवावर्ग का हिंग्लिश के आगोश में जाना चिंतन और चिंता का विषय बन गया है। मुद्दा अति सोचनीय है। कुछ सोचना होगा! कुछ करना होगा!

-डॉ. रघुनाथ पाण्डेय
सलाहकार/सम्पादक
पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, शिलांग
मूलवास-753, सिविल लाइन्स, गोण्डा-271001 (उ.प्र.)

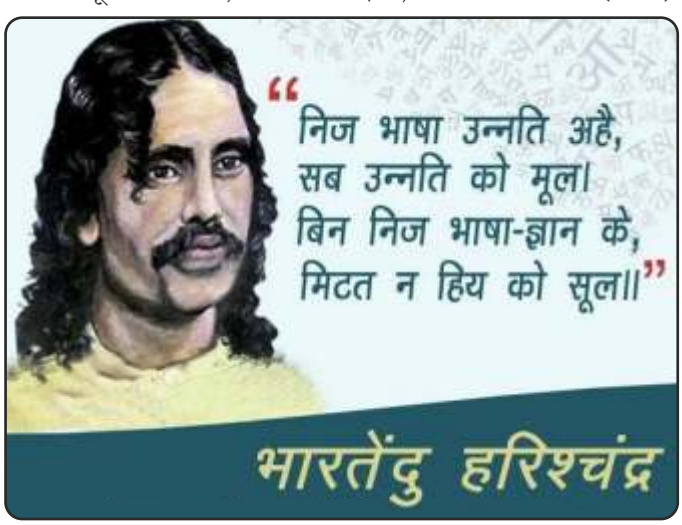

संरचना या शैली में बदलाव करना, या भाषा की उपयोगिता या अर्थ में बदलाव करना। भाषा आक्रमण के सकारात्मक परिणाम कई तरह से हो सकते हैं। सबसे पहले, यह भाषाओं के बीच बातचीत और समझ को बढ़ावा दे सकता है। जब एक भाषा दूसरी भाषा से प्रभावित होती है, तो यह दोनों भाषाओं के वक्ताओं को एक-दूसरे की भाषा को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकता है। दूसरे, भाषा आक्रमण भाषाओं की विविधता को बढ़ावा दे सकता है। जब एक भाषा दूसरी भाषा से प्रभावित होती है, तो यह नई शब्दावली, वाक्यांश, और वाक्य रचना का परिचय दे सकती है। यह भाषा को अधिक जीवंत और आकर्षक बना सकता है। तीसरे, भाषा आक्रमण भाषाओं के विकास को बढ़ावा दे सकता है। जब एक भाषा दूसरी भाषा से प्रभावित होती है, तो यह भाषा में नए रूपों और कार्यों का विकास कर सकती है। यह भाषा को अधिक कुशल और प्रभावी बना सकता है।

कुछ विशिष्ट उदाहरणों में शामिल हैं:

अंग्रेजी भाषा पर लैटिन और फ्रेंच भाषाओं का प्रभाव। अंग्रेजी भाषा में लैटिन और फ्रेंच से कई शब्द और वाक्यांश उधार लिए गए हैं, और इन भाषाओं ने अंग्रेजी की संरचना और शैली को भी प्रभावित किया है।

हिन्दी भाषा पर उर्दू भाषा का प्रभाव। हिन्दी भाषा में उर्दू से कई शब्द और वाक्यांश उधार लिए गए हैं, और इन भाषाओं ने हिन्दी की संरचना और शैली को भी प्रभावित किया है।

चीनी भाषा पर जापानी भाषा का प्रभाव। चीनी भाषा में जापानी से कई शब्द और वाक्यांश उधार लिए गए हैं, और इन भाषाओं ने चीनी की संरचना और शैली को भी प्रभावित किया है।

बेशक, भाषा आक्रमण के नकारात्मक परिणाम भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, भाषा आक्रमण एक भाषा के मूल रूप को बदल सकता है, या यह एक भाषा के विलुप्त होने का कारण बन सकता है। हालांकि, कुल मिलाकर, भाषा आक्रमण एक शक्तिशाली प्रक्रिया है जो भाषाओं के विकास और विविधता को बढ़ावा दे सकती है। विदेशी सत्ता के कारण भारतीय भाषाओं पर विदेशी भाषाओं का प्रभाव रहा है। भारत की लंबी और समृद्ध इतिहास और संस्कृति रही है। इस दौरान, भारत पर कई विदेशी शक्तियों का शासन रहा है। इन शक्तियों ने अपनी संस्कृति और भाषा को भारत में पेश किया। इससे भारतीय भाषाओं पर उनके प्रभाव पड़ा। विदेशी सत्ता के कारण भारतीय भाषाओं पर विदेशी भाषाओं का प्रभाव रहा है, यह एक दोहरी बात है। इससे एक ओर भारतीय भाषाओं की समृद्धि और विविधता बढ़ी, दूसरी ओर उनकी अस्वीकृति और अपमान भी हुआ। इसलिए, हमें अपनी भाषाओं का सम्मान करना और उन्हें संरक्षित रखना चाहिए ।

-विजय प्रभाकर नगरकर
सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी
बीएसएनएल, अहमदनगर (महाराष्ट्र)

युवाओं में पनपती हिंगलिश की मानसिकता

अमित कुमार कौशल

मनुष्य को अपने भावों को व्यक्त करने के लिए जिस सम्प्रेषण माध्यम की आवश्यकता होती है उसे ही हम भाषा के रूप में जानते हैं । भाषा के द्वारा ही मनुष्य सभ्य और विद्वान बनता है और अपने जीवन में सफलता प्राप्त करता है । केवल भाषा ही एकमात्र साधन है जहाँ एक साधारण सा व्यक्ति शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत अपने मौखिक विचारों, लेखन और मानसिक सोच को उच्च कोटि का होने का प्रमाण देता है चाहे वह समाज में एक उच्च कोटि वर्ग से हो या फिर सामान्य वर्ग से हो । हिन्दी भाषा संपूर्ण भारतवर्ष में गर्व से प्रयोग में लाई जाती है । शिक्षित व अशिक्षित की पहचान उस व्यक्ति के मुख की वाणी, मौखिक व मानसिक विचारों से आसानी से की जा सकती है । हमारे भारतवर्ष की शिक्षा प्रणाली इतिहास से लेकर वर्तमान काल तक सर्वोत्तम हिन्दी भाषा में पहचानी जाती है । यहाँ गुरुओं का सम्मान, वेदों का ज्ञान, संस्कृति पर अभिमान, विद्यार्थियों का ध्यान शिक्षा के रूप में दर्शाता है । हमारे भारत की शिक्षा प्रणाली पर आज भी हर कोई गर्व करता है जिसमें कोई संदेह नहीं है । किन्तु जिस तरह से समय अग्रसर हो रहा है हमारी शिक्षा प्रणाली में कई बदलाव देखने को मिले हैं ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे हम भारत के शिक्षा प्रणाली में हिन्दी भाषा से पाश्चात्य भाषा को अधिक महत्त्व देने की ओर अग्रसर हो चलें है । यह मेरे अपने व्यक्तिगत विचार नहीं है अगर आज की तारीख में हम देखें तो मूलत: हमारी शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजी भाषा का बोलबाला साफ दिख रहा है, प्राइवेट स्कूल के अध्यापक-अध्यापिका, प्रधानाचार्य व विद्यार्थी एवं उनके अभिभावक स्कूल के दाखिले के समय अंग्रेजी भाषा का उपयोग कर अपने आप को अत्यधिक गर्व का एहसास करते हैं ।

स्कूल के दाखिले के समय विद्यार्थी हिन्दी में अधिक वार्तालाप करें तो वह विद्यार्थी व उस विद्यार्थी के अभिभावक को वह स्तर नहीं मिल पाता है जिस स्तर का वह अधिकार रखता है । दाखिले के समय भरे जाने वाला फॉर्म भी अंग्रेजी भाषा में छापे जाते है जिसे अभिभावक का स्तर नापा जा सके उसकी आर्थिक स्थिति को जांचा जा सके, उसकी मानसिक दृष्टि को देखा जा सके, उसकी अंग्रेजी भाषा को समझने की काबिलियत को परखा जा सके जो कि फलस्वरुप आज की तारीख में यह एक सच्चाई है । प्राथमिक शिक्षा की शुरुआत से ही विद्यार्थी को अंग्रेजी भाषा की तरफ न जाने क्यों झुकाया जाता है? कारणवश प्राथमिक शिक्षा की शुरुआत में ही विद्यार्थी को अंग्रेजी भाषा से अधिक लगाव होने लगता है वह हमारी हिन्दी भाषा को धीरे-धीरे पीछे छोड़ता चला जाता है । जैसे-जैसे वे अपनी शिक्षा प्राप्त करता जाता है वैसे-वैसे हिंगलिश में विद्यार्थी की पकड़ मजबूत होती जाती हैं चाहे वह मौखिक हो या लिखित हो । शुरुआती दौर में ही हिन्दी की मात्राओं को वह समझ नहीं पाने के कारण अंग्रेजी भाषा का प्रशंसक बन जाता है । अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने में विद्यार्थी को उच्च स्तरीय स्वाभिमान का एहसास अपने आप हो जाता है, विद्यार्थी का अंग्रेजी विषय में जरूरत से अधिक झुकाव का मूल कारण विद्यार्थी के अभिभावक, शिक्षक व शिक्षा प्रणाली को दिया जाए तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी ।

हम हिन्दी भाषा को किसी भी मापदंड में कम नहीं समझ सकते क्योंकि यही एक भाषा है जिसका प्रयोग कर हर भारतीय शिशु अपनी मां को संबोधित करता हैद्य अपने हर भाव की व्याख्या को समझाने में हिन्दी भाषा का ही प्रयोग करता है । यही एक भाषण जिसमें अपने से बड़ों का आदर सत्कार, छोटों के लिए प्रेम भाव तथा बराबर के लिए सद्भावना पाई जाती है । भारत के समस्त ग्रंथ भी संस्कृत व हिन्दी भाषा में ही लिखे गए हैं जिसे हम आज के दौर में आसानी से समझ सकते हैं हिन्दी भाषा का इतिहास काल से वर्तमान काल तक अनंत महत्व है । आज के दौर की बात करें तो युवा पीढ़ी में हिन्दी व अंग्रेजी शब्दों का संधि कर एक अलग सी भाषा का ही प्रयोग किया जा रहा है जैसे हम 'हिंगलिश' भाषा के नाम से जानने लगे हैं । एक ऐसी भाषा जिसमें हिन्दी भाषा की शुद्धता की पवित्रता को नकारा गया है । आज के समय में पढ़ा लिखा इंसान कुछ हद तक इस भाषा के प्रकोप से प्रभावित नजर आया है । देखा जाए तो वह ना उच्च स्तरीय हिन्दी भाषा का प्रयोग करने में समर्थ है व ना ही व उच्च स्तरीय अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते हैं सक्षम है । कुछ ही ऐसे कार्यालय हैं जहाँ पर हिन्दी भाषा में आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र लिखने के लिए प्रोत्साहन दिया गया है इन्हीं कार्यालयों में से एक कार्यालय 'पुलिस' का भी है। जहां अगर हम बात करें तो संपूर्ण रुप से हिन्दी में काम होता है । प्राइवेट स्कूलों में भी प्रार्थनाएं हिन्दी भाषा की जगह अंग्रेजी भाषाओं में परिवर्तित की जा रही है फलस्वरूप अंग्रेजी भाषा को अपने आप प्राथमिकता मिलती जा रही है ।

हिन्दी भाषा के महत्व को समझने के लिए हम सभी को चाहिए कि हम उसे आने वाली पीढ़ियों को हिन्दी भाषा की अहमियत को समझाएं, उनके साथ बैठकर हिन्दी भाषा में ही वार्तालाप करें, उन्हें राष्ट्रीय भाषा से अवगत कराएं, अपने घर में गीता सार करें तथा नियम अनुसार अपने बच्चों को साथ बिठाकर गीता का ज्ञान उनके साथ बांटें । जहां विदेशी हिन्दुस्तान में आकर हिन्दी संस्कृति वह हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमारी मातृभूमि में आते हैं वही दुखद बात यह है हम अपनी हिन्दी भाषा को धीरे-धीरे नजरअंदाज करते जा रहे हैं हमें चाहिए कि हम वापस अपनी प्रिय हिन्दी भाषा में अपना झुकाव बनाए रखें तथा अपनी हिन्दी संस्कृति को मिटने ना दें । जिस देश में बड़ों का आदर सम्मान हो, जहां बराबर के लिए सद्भावना की सकारात्मक सोच एवं जहां छोटो के लिए प्यार की भावनाएं हो बस वही हिन्दुस्तानी विद्यमान है जहाँ हिन्दी भाषा पर अभिमान है वही ऊंच-नीच एक समान हैं ।

हमारे देश के प्रसिद्ध लेखकों के लेख आज के दौर में हमें फिर से खोलकर पुनः खुद से अवगत कराने चाहिए । श्री मुंशी प्रेमचंद, श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री रविंद्र टैगोर,श्री रामधारी सिंह दिनकर, श्री हरीश राय बच्चन, श्री अटल बिहारी वाजपेई जैसे प्रसिद्ध उपन्यासकार व साहित्यकारों का हिन्दी योगदान को किसी भी कीमत पर कम नहीं होने देना चाहिए यह योगदान सदैव अमर रहेगा यद्यपि हम उनके द्वारा लिखें गए लेखन को निमित्त अनुसार पढ़ते रहे तथा पढ़ाते रहें द्य हिन्दी भाषा की पवित्रता वह अंग्रेजी भाषा की शुद्धता तभी तक कायम है जब तक हम हिन्दी भाषा की गहराइयों तक ज्ञान प्राप्त ना कर ले । अपने मित्र समूह में किसी एक व्यक्ति के साथ आप अधिक से अधिक वार्तालाप करें जिन्हें हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान हो फलस्वरूप आपकी बोली वह हिन्दी भाषा में सुधार अपने आप प्रतीक हो जाएगा तथा 'हिंगलिश' जैसी भाषा की जकड़न से आप खुद-ब-खुद बाहर हो जाएंगे । मन में संकल्प लें कि हमें अधिक से अधिक अपनी राष्ट्रीय भाषा का ही प्रयोग वार्तालाप में करना है या अपनी घरेलू भाषा में वार्तालाप करें जिससे हम अपनी संस्कृति व सभ्यता के साथ सदैव जुड़े रहेंगे ।

आजाद रहिए विचारों से
परंतु, बंधे रहिए संस्कारों से !!

-अमित कुमार कौशल
'विजय कुंज' 49-ए, अमर नगर, महेश नगर
अंबाला कैंट, हरियाणा-133001

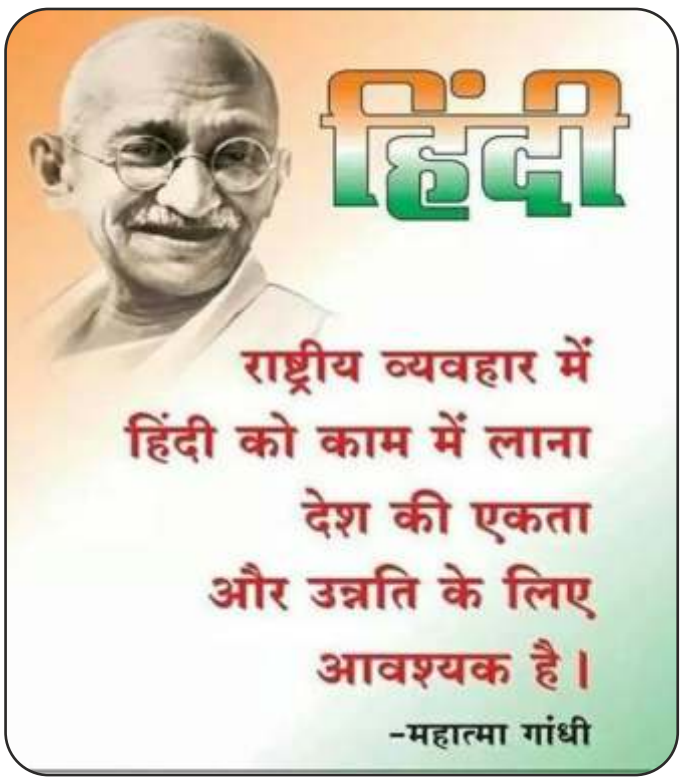

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की नि: शुल्क सभाकक्ष योजना

साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन हेतु नि:शुल्क 'सभाकक्ष' उपलब्धता संबंधी महत्त्वपूर्ण सूचना :-

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा लेखकों, साहित्यकारों, शिक्षाविदों, साहित्यिक/सांस्कृतिक संस्थाओं के लिए साहित्यिक कार्यक्रमों जैसे पुस्तक लोकार्पण, पुस्तक परिचर्चा, काव्य गोष्ठी, विमर्श, संगोष्ठी, सम्मान समारोह आदि के लिए अकादमी का 'सभाकक्ष' नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाएगा।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी एक स्व-वित्तपोषित संस्था है जो अपने सीमित संसाधनों से विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन करती है। अपने कार्यों को विस्तार देते हुए अकादमी ने रोहिणी, दिल्ली में एक कार्यालय बनाया है, जिसमें अन्य सुविधाओं के साथ ही 65-70 व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था वाला सुसज्जित वातानुकूलित सभाकक्ष भी बनाया गया है। इस हॉल में मंच, पोडियम, माइक आदि की व्यवस्था है। अकादमी की केंद्रीय समिति ने निर्णय लिया है कि अकादमी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति संवर्धन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता एवं नैतिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए कार्यालय स्थित सभागार को साहित्यिक आयोजनों हेतु नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाएगा।

सभाकक्ष में कार्यक्रम आयोजन हेतु सामान्य नियमावली-

1. सभाकक्ष सीमित समयावधि के लिए पूर्णतया नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाएगा ।

2. सभाकक्ष की नि:शुल्क बुकिंग 'पहले आओ-पहले पाओ' और उपलब्धता के आधार पर की जाएगी।

3. आयोजन के लिए लिखित रूप/ईमेल द्वारा, कार्यक्रम के विवरण सहित आवेदन करना होगा तथा आयोजन अवधि में पूर्ण अनुशासन बनाये रखने की सहमति देनी होगी।

4. सभाकक्ष में केवल साहित्यिक आयोजनों की ही अनुमति होगी और अकादमी की केंद्रीय समिति का निर्णय ही अंतिम माना जाएगा।

नोट : नि:शुल्क सभाकक्ष की बुकिंग के लिए संपर्क करें :-

सुधाकर पाठक

अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी
प्लॉट 19-20, पॉकेट बी-5, सेक्टर 7, रोहिणी,
(निकट रोहिणी पूर्व मेट्रो स्टेशन), दिल्ली-110085

ईमेल: hindustanibhashabharati@gmail.com
Info@hindustanibhadhaakadami.com
मोबाइल- 9873556781 / 9968097816

वेबसाइट : www.hindustanibhashaakadami.com

रिपोर्ट

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार पद्मश्री डॉ. शीला झुनझुनवाला की पुस्तक 'पतझड़ में बसंत' का हुआ भव्य लोकार्पण

सुषमा भण्डारी

नई दिल्ली, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र में स्थित उमंग सभागार में 23 फरवरी, 2024 को 'अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा उत्सव' का आयोजन किया गया । यह आयोजन हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी तथा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के कला निधि विभाग द्वारा संयुक्त रूप से किया गया । दो सत्रों में आयोजित किए गए इस भव्य कार्यक्रम में हिन्दी, बंगाली, पंजाबी तथा सिंधी आदि भारतीय भाषाओं में गीत-लोकगीत, कविता, माहिया और गजलों की प्रस्तुति की गई । इस सत्र का संचालन अकादमी के सलाहकार संपादक एवं वरिष्ठ कवि विनोद पाराशर ने किया ।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में पदम श्री से सम्मानित वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार शीला झुनझुनवाला की नवीनतम कृति 'पतझड़ में बसंत' का लोकार्पण किया गया । इस पुस्तक का प्रकाशन वाणी प्रकाशन द्वारा किया गया है । इस अवसर पर कला निधि विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के डीन प्रोफेसर (डॉ.) रमेश चंद्र गौड़, श्री अजीत कुमार, प्रभारी राजभाषा, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र तथा दिल्ली के कई वरिष्ठ साहित्यकार एवं लेखक उपस्थित थे ।

डॉ. शीला झुनझुनवाला ने अपने लेखकीय उद्‌बोधन में इस पुस्तक के लिखने की प्रेरणा एवं उद्देश्य पर विस्तार से वक्तव्य दिया । उपस्थित श्रोता उनके वक्तव्य से स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस कर रहे थे । हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने अपने स्वागत वक्तव्य में मातृभाषाओं के संरक्षण के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा भाषा, संस्कृति और साहित्य के विभिन्न पहलुओं को अपने वक्तव्य में सम्मिलित किया । डॉ. रमेश चंद्र गौड़ ने इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यूनेस्को की पहल पर अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला । इस सत्र का धन्यवाद ज्ञापन श्री अजीत कुमार द्वारा किया गया ।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र ही नहीं, बाहर के राज्यों के 35 से भी अधिक कवियों एवं गीतकारों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुतियां दी । काव्य सत्र में मंचासीन अतिथियों में श्री अतुल प्रभाकर, डॉ. संजीव कुमार, श्री किशोर श्रीवास्तव एवं श्री अनिल वर्मा 'मीत' की उपस्थिति में स्तरीय रचनाओं का पाठ हुआ । भारतीय भाषाओं के जिन कवि एवं कवियत्रियों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं उनमें शामिल थे- उषा रानी, बृज लाला कुमार, हरि नारायण जाट, डॉ. पराग शर्मा, आशीष कुमार, रंजना मजूमदार, उमंग सरीन, मीनाक्षी भसीन, अर्चना मेहता, चंचल हरेंद्र वशिष्ठ, अंजू मोटवानी, पूनम मटिया, राजव्रत कलमकार, अरविंद तिवारी, रविंद्र तिवारी, केशी गुप्ता, प्रीति गोयल, मीनू बाला मल्होत्रा, डॉ. पूजा भारद्वाज, इंदु मिश्रा 'किरण', पुनीता सिंह, मोहिनी पांडे, गोल्डी गीतकार, उमा शर्मा, प्रवीण व्यास, विजय, संजय श्रीवास्तव, तूलिका सेठ और दीपा शर्मा आदि । कार्यक्रम के अंत में हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की वरिष्ठ सदस्य डॉ. वनिता शर्मा ने सभी अतिथियों तथा आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। अकादमी के वरिष्ठतम सदस्य श्री विजय शर्मा एवं डॉ. सोनिया आरोड़ा ने भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

रिपोर्ट

यूँ ही साथ-साथ चलते, कविताओं पर आधारित श्रुति नाट्य शैली का सफल मंचन

विजय शर्मा

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की ओर से रविवार, 14 अप्रैल, 2024 को मुक्तधारा ऑडीटोरियम, गोल मार्केट, नई दिल्ली में डॉ. सच्चिदानंद जोशी एवं मालविका जोशी द्वारा अपनी कविताओं पर आधारित श्रुती नाट्य प्रस्तुति- 'यूँ ही साथ-साथ चलते' का एक अनूठा मंचन सम्पन्न हुआ । गीत-संगीत, कविता और नृत्य से सजी सुरम्य प्रस्तुति को तीन सत्रों में आयोजित किया गया । डॉ. सच्चिदानंद जोशी एक जाने माने पत्रकार, शिक्षाविद्, रंगकर्मी, लेखक, कुशल वक्ता एवं ओजस्वी कवि हैं । वे कुशाभाई ठाकरे विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके हैं । लम्बे समय से वे भारतीय शिक्षण मण्डल से जुड़े हुए हैं । भाषा, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सदस्य-सचिव जैसे गरिमामय पद पर सुशोभित हैं । नृत्य, रंगकर्म और संगीत में गहरी अभिरुचि रखने वाली श्रीमती मालविका जोशी, रचनात्मक व्यक्तित्व की धनी हैं । वे एक शिक्षिका, लेखिका, कथाकार, प्रेरक वक्ता और जानी मानी कथा वाचक हैं । विशेष रूप से कथा कहने की अपनी अद्‌भुत शैली के लिए वे जानी जाती हैं ।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के यशस्वी अध्यक्ष, श्री सुधाकर पाठक ने कहा कि साहित्यिक जगत में इस तरह का नाटक मंचन एक अनूठा प्रयोग है । किसी दम्पत्ति द्वारा अपनी ही रचनाओं पर आधारित होकर उसे नाटक का रूप देना और स्वयं अभिनय करना वास्तव में एक नया और रोमांचकारी अनुभव रहा । इससे पहले केवल काव्यपाठ हुआ करते थे या फिर किसी कहानी या उपन्यास का ही नाट्य मंचन हुआ करता था । आज की प्रस्तुति में जिस तरह से कविता को रंगमंच के साथ जोड़कर संगीतबद्ध जीवंत अभिनय के साँचे में गढ़ा गया है, इससे आने वाले साहित्यिक एवं रंगमंच की दुनिया में एक हलचल अवश्य जन्म लेगी ।

जोशी दम्पत्ति के अभिनय ने दर्शकों को बाँधे रखा । नाटक के कई दृश्यों ने लोगों को भावविभोर किया । प्रेम, उमंग, जिम्मेदारी, सपने, भविष्य, वास्तविकता, भावनात्मक सम्बन्ध और अपने व्यक्तित्व की खोज के आसपास घूमते चरित्र ने मनोरंजन के साथ-साथ कुछ जरूरी मुद्दे भी उठाएँ हैं । धन्यवाद ज्ञापन के अवसर पर डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि रंगमंच से कोई भी व्यक्ति एक बार जुड़ जाए तो वो जीवन भर उससे जुड़ा रहता है । रंगमंच व्यक्ति के सोचने और देखने की दृष्टि में व्यापक अंतर लाता है और साथ ही व्यक्तित्व के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है । रंगमंच के लिए अनुशासन और समर्पण का होना बहुत आवश्यक है। उन्होंने इस नाटक की परिकल्पना, इसकी तैयारी, इससे जुड़े कुछ अनुभव और अपनी टीम का परिचय देते हुए इसके पीछे जुड़े अनेक सहयोगी मित्रों के बारे में भी बताया । हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के पदाधिकारियों के हाथों से जोशी दम्पत्ति को अंगवस्त्र और राधाकृष्ण की प्रतिमा भेंट कर सम्मानित किया गया । अन्य कलाकारों को भी अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया ।

नाटक मंचन के अवसर पर केंद्रीय हिन्दी शिक्षण संस्थान के उपाध्यक्ष श्री अनिल शर्मा जोशी, श्री राम कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज के प्रो. रवि शर्मा 'मधुप', गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के सम्पादक, डॉ. धनेश द्विवेदी, लेखक एवं कवि पवन विजय आदि विशेष रूप से उपस्थित थे ।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में हंसराज कॉलेज की छात्राओं शार्वी शर्मा एवं अन्य साथियों ने विभिन्न शास्त्रीय ताल पर भाव-नृत्य, शिव-ताण्डव, होली एवं वर्षा ऋतु को लेकर मनमोहक शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुति से सभागार को शोभायमान बनाए रखा । ये वह छात्राएँ हैं जिन्होंने दिल्ली में हुए जी-20 सम्मेलन में अपनी प्रस्तुति से लोगों का दिल जीता था । रूस में आयोजित विश्व का सबसे बड़ा युवा कार्यक्रम 'विश्व युवा महोत्सव-2024' में इन छात्राओं ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था । दूसरे सत्र के समापन पर डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी के हाथों से बच्चों को सम्मानित किया गया । इस सत्र का संचालन हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी की उप सम्पादक डॉ. सोनिया अरोड़ा ने किया ।

कार्यक्रम के तीसरे सत्र पर काव्य-पाठ का आयोजन भी किया गया । इस अवसर पर दिल्ली, गुरुग्राम एवं नोएडा से बड़ी संख्या में कवि मित्रों की उपस्थिति थी । काव्य पाठ का संचालन श्री विनोद पाराशर ने किया । प्रो. रवि शर्मा 'मधुप', श्री किशोर श्रीवास्तव, डॉ. धनेश द्विवेदी, पवन विजय, संतोष सम्प्रिती सहित कई युवा कवियों द्वारा काव्यपाठ किया गया । हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक जी के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम का समापन किया गया ।

यूँ ही साथ-साथ चलते, कविताओं पर आधारित श्रुति नाट्य शैली के चित्र

रिपोर्ट

भारतीय परिवारों की चहेती लेखिका एवं कथाकार
श्रीमती मालती जोशी जी की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में बुधवार, 29 मई, 2024 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सम्वेत सभागार में हिन्दी एवं मराठी भाषी सुविख्यात लेखिका, कथाकार एवं पद्मश्री सम्मान सहित कई प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत श्रीमती मालती जोशी जी की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया ।

सायं 4 बजे से शुरू हुई इस श्रद्धांजलि सभा में डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेई, प्रो. जितेंद्र कुमार श्रीवास्तव, प्रो. (डॉ.) रमा शर्मा, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, प्रो. रमेश चंद्र गौड़, श्री सुधाकर पाठक एवं श्रीमती मीनू त्रिपाठी मंचासीन थीं । भारतीय परिवार की चहेती कथाकार मालती जोशी जी के जीवन-परिचय प्रस्तुति से श्रद्धांजलि सभा को प्रारम्भ किया गया । इस अवसर पर मालती जोशी जी के साहित्यिक योगदान पर केंद्रित एक लघु वृत्तचित्र को प्रस्तुत किया गया । सुश्री विनीता काम्बीरी ने उनका जीवन परिचय प्रस्तुत किया तथा श्रीमती मीनू त्रिपाठी ने उनकी एक कहानी 'खुबसूरत झूठ' का पाठ किया ।

अपने श्रद्धांजलि वक्तव्य में हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने कहा कि आधुनिक हिन्दी कहानी को सार्थक एवं नई दिशा देने वाली, बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न, हिन्दी और मराठी की सुविख्यात लेखिका एवं कथाकार मालती जोशी जी का नाम साहित्यिक जगत में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है । मालती जोशी जी को पढ़ते हुए पाठक कहानी के पात्रों में ऐसे समा जाता है कि वहाँ लेखक गौण हो जाता है और केवल पात्र और पाठक के बीच से होते हुए कहानी आगे बढ़ती चली जाती है । कथा-कहने का उनका एक अलग ही अंदाज था । केवल अपनी स्मृति से वे कहानी पाठ किया करती थीं । यदि उनकी किताब को आगे रखकर उन्हें सुना जाए, तो एक भी शब्द और वाक्य इधर से उधर नहीं होगा । यही गुण उन्हें अन्य साहित्यकारों से पृथक करता है । मालती जोशी जी के रचना संसार को लेकर हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी लम्बे समय से एक बड़ा कार्यक्रम करना चाहती थी, किन्तु कई बार उनके मुम्बई प्रवास और स्वास्थ्य समस्याओं के चलते इस योजना पर काम नहीं हो पाया । अपनी बात को समाप्त करते हुए उन्होंने आगे कहा कि आगामी आयोजनों में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर हम अवश्य कार्यक्रम करेंगे ।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेयी जी ने कहा कि जैसे गजल लिखी नहीं जाती, कही जाती है ठीक वैसे ही मालती जोशी ने कहानी लिखी नहीं, बल्कि कहानी कही है । अपने आसपास के चरित्रों, दृश्यों और घटनाओं में से अपने लिए उपयुक्त पात्रों को चुनकर वे अपनी कहानी में बुन लिया करती थीं और यही कारण है कि उनकी कहानी आम भारतीय परिवारों के बीच लोकप्रिय हुई । उन्होंने अपनी कहानी में पश्चिमी संस्कृति को पनपने नहीं दिया और भारतीय संस्कारों तथा भारतीयता को बचाए रखा । कवि एवं आलोचक प्रो. जितेन्द्र श्रीवास्तव जी ने कहा कि मालती जोशी जी की कहानियों में भारतीय परिवेश और भारतीय जीवन प्रतिबिम्बित होता है । उनकी कहानियों में स्त्री पात्र प्रमुखता से उभरकर आए हैं और स्त्री विमर्श के नाम पर वहाँ पुरुष को केवल खलपात्र के रूप में नहीं खड़ा किया गया है, बल्कि उनकी कहानियों में उदार और सहज-सरल पुरुष भी हैं । उनकी कहानियाँ भारतीय चिंतन को उद्घाटित करती हैं । लोग उनकी कहानियों से प्रेरणा लेते हैं कि कैसे दाम्पत्य जीवन को, सहचार्य को सुखद बनाया जाए, कैसे परिवारों को जोड़ा जाए, कैसे संस्कारों को आगे बढ़ाया जाए, कैसे सम्बन्धों को सहेजा जाए । हंसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रो.(डॉ.) रमा शर्मा ने कहा कि मालती जोशी जी की कहानियाँ परिवारों और संस्कारों की कहानियाँ है । भारतीय जीवन में परिवार से बड़ा कुछ भी नहीं है और भारतीय नारी परिवार जोड़ती है, तोड़ती नहीं । वे झूठ को भी खूबसूरत झूठ बना देती है । उनकी कहानियों में जीवन जीने की कला है । इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की निदेशक (प्रशासन) सुश्री प्रियंका मिश्रा, मालती जोशी जी के भाई श्री चंद्रशेखर दिघे और आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने भी अपने संस्मरण साझा किए ।

डॉ. वनीता शर्मा

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव एवं श्रीमती मालती जोशी जी के सुपुत्र डॉ. सच्चिदानन्द जोशी जी ने बचपन के दिनों को याद करते हुए कहा कि इंदौर के घर में उनके साथ खेलने वाले मित्र, जीवन के इस पड़ाव पर आकर कहते हैं कि उन्होंने कभी भी उस घर में किसी लेखक को देखा ही नहीं । उन्होंने केवल नन्दू की आई को देखा । अपने लेखन को उन्होंने कभी भी परिवार से ज्यादा महत्त्व नहीं दिया । उन्होंने कभी नहीं कहा कि मुझे लिखना है, घर में शोर मत करो । उन्होंने कभी नहीं कहा कि मुझे बाहर जाना है, तो कल की बनी सब्जी गर्म करके खा लेना । उन्होंने कभी नहीं कहा कि मुझे लिखने के लिए एक अलग कमरा चाहिए । एक प्रतिष्ठित लेखिका होने के बावजूद उन्होंने अपने लेखकीय व्यक्तित्व को कभी परिवार पर लदने नहीं दिया । वे साहित्यिक सम्मेलनों और निमंत्रणों से दूर ही रहा करती थीं । भाषा और साहित्य की जो समझ और संस्कार हमें मिले, वो आई ने ही दिए हैं । 'आई' कहा करती थी कि तुम्हारे बगल में बैठी स्त्री को या

तुम्हारे ऑफिस में तुम्हारे साथ काम करने वाली स्त्री को कभी भी तुमसे असहज और असुरक्षा का भाव नहीं आना चाहिए । अपने भावों को व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि मुझे सात जन्मों तक केवल आई ही चाहिए । यदि इसके लिए कोई ऐसा व्रत हो, तो मैं इसके लिए भी बिना अन्न-जल के नागा रहने को तैयार हूँ ।

श्रद्धांजलि सभा के समापन पर बोलते हुए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कला निधि विभाग के प्रभारी, डीन (अकादमिक) प्रो. रमेश चन्द्र गौड़ ने मालती जोशी जी की सुखद स्मृतियों को याद करते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की । दो मिनट के मौन धारण के साथ उपस्थित सभी अतिथियों द्वारा उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किए गए । इस अवसर पर जोशी जी के पारिवारिक सदस्य और कला केंद्र के स्टाफ सहित कई साहित्यकार और पत्रकार एवं हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के सदस्य श्री विजय शर्मा, विनोद पाराशर, राजकुमार श्रेष्ठ, डॉ. विनीता शर्मा उपस्थित थे ।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी – एक परिचय

एक नदी के निर्माण में अथाह जल का योगदान होता है । जल के निर्माण में करोड़ों बूंदों का समिश्रण जुड़ा होता है । कोई भी कार्य पर्दे के सामने जितना रोमांचक, आकर्षक और प्रभावकारी लगता है, उसके पीछे अनेक छोटे-छोटे प्रयासों का योगदान होता है । कोई भी बड़ा कार्य बड़ी सोच से ही सम्भव हो पाता है । अपने उद्देश्यों, गतिविधियों एवं योजनाओं को बृहत रूप में विस्तार देने के क्रम में 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' के गिलहरी प्रयासों को जब सहेजने का विचार आया तो अनेक पटकथाएँ सामने आने लगीं । इस लम्बी यात्रा में 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र', संस्कृति मंत्रालय जैसे प्रतिष्ठित संस्था का सहयोग और विशेष रूप से डॉ. सच्चिदानन्द जोशी जी जैसे कर्मठ, जुझारू, गम्भीर और संवेदनशील व्यक्तित्व का मार्गदर्शन और साथ मिलना हमारे लिए सौभाग्य की बात है । इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र और हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में कला केन्द्र के विशाल प्रांगण और सभागार में कई भव्य और महत्त्वपूर्ण आयोजन सम्पन्न हुए हैं ।

20 मई, 2018 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सभागार में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'राष्ट्र निर्माण में हिन्दी की भूमिका' का आयोजन किया गया था । हिन्दी के विविध आयामों को समेटे हुए इस संगोष्ठी को चार सत्रों में विभाजित किया गया था जिसमें देश के ख्यातिलब्ध वरिष्ठ साहित्यकार उपस्थित थे । विशिष्ट अतिथि एवं वक्ता के रूप में प्रो. गिरीश्वर मिश्र, कुलपति, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, श्री अतुल कोठारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, दिल्ली, श्री राहुल देव, वरिष्ठ पत्रकार, सुश्री निधि कुलपति, एन. डी. टी. वी., प्रो. अवनीश कुमार, निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं अध्यक्ष वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, श्री सुधीश पचौरी, सुविख्यात पत्रकार, डॉ प्रमोद तिवारी, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, प्रो. नंद किशोर पांडेय, निदेशक, केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, प्रो. राम मोहन पाठक, हिन्दी सेवी, डॉ. अशोक चक्रधर, हिन्दी के विद्वान, कवि, लेखक, निर्देशक, अभिनेता, नाटककर्मी, डॉ. वेद प्रताप वैदिक, वरिष्ठ पत्रकार और हिन्दी सेवी, श्री अच्युतानंद मिश्र, पत्रकार एवं पूर्व कुलपति, माखन लाल चतुर्वेदी पत्रिकारिता विश्वविद्यालय, श्रीमती चित्रा मुदगल, वरिष्ठ साहित्यकार, पद्मश्री डॉ. नरेंद्र कोहली, सुविख्यात लेखक, श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, साहित्यकार एवं पूर्व अध्यक्ष, साहित्य अकादमी की गरिमामयी उपस्थिति थी । समारोह का स्वागत वक्तव्य डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य-सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के द्वारा दिया गया था । इस अवसर पर हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के शिक्षक प्रकोष्ठ की स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया था । इस समय शिक्षक प्रकोष्ठ में 9 भारतीय भाषाओं के 800 से भी अधिक शिक्षक जुड़े हुए हैं । संगोष्ठी में प्रस्तुत वक्ताओं के वक्तव्यों को बाद में पुस्तक रूप में 'राष्ट्र निर्माण में हिन्दी की भूमिका' के नाम से प्रकाशित भी किया गया, जिसका लोकार्पण 3 फरवरी, 2019 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के प्रांगण में आयोजित हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के महत्त्वपूर्ण वार्षिक आयोजन 'मेधावी छात्र एवं शिक्षक सम्मान समारोह' में किया गया ।

राजकुमार श्रेष्ठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से इस अदभुत और अद्वितीय आयोजन में दिल्ली प्रदेश के लगभग 150 विद्यालयों के 1725 छात्रों सहित उनके हिन्दी शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया । 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में हिन्दी विषय में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले 32 मेधावी छात्रों को 'भाषा प्रहरी सम्मान-2018' से अलंकृत किया गया । जिन बच्चों ने 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक प्राप्त किये थे उन्हें 'भाषा दूत सम्मान -2018' से नवाजा गया साथ ही उनके हिन्दी शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया । 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में किसी एक विद्यालय के सर्वाधिक (109) विद्यार्थियों द्वारा हिन्दी भाषा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर 'बाल भारती पब्लिक स्कूल', पीतमपुरा दिल्ली को 'भाषा रत्न सम्मान-2018' से सम्मानित किया गया था ।

इस भव्य सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि फिजी गणराज्य के राजदूत महामहिम योगेश पुंजा जी थे । वहीं विशिष्ट अतिथियों में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य-सचिव, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के निदेशक, श्री अवनीश कुमार, श्री शरत चंद्र अग्रवाल, सदस्य केंद्रीय समिति, भारतीय योग संस्थान हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष, डॉ. कमल किशोर गोयनका, विख्यात साहित्यकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक, विख्यात कवि डॉ. अशोक चक्रधर, वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार बी. एल. गौड़, राजभाषा विभाग के डॉ. धनेश द्विवेदी, डॉ मुक्ता, पूर्व निदेशक, हरियाणा साहित्य अकादमी, हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के कार्यकारी सम्पादक, डॉ. रमेश तिवारी, इन्दिरा गाँधी कला केंद्र के निदेशक (प्रकाशन) श्री अनिल कुमार सिन्हा, सलाहकार श्री आर के द्विवेदी, मंचासीन थे । अपने-अपने विद्यालयों के वर्दी में उपस्थित छात्रों, उनके हिन्दी शिक्षकों, अभिभावकों, प्रबुद्ध साहित्यकारों, गणमान्य अतिथियों एवं अकादमी के पदाधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति से सु-सज्जित प्रांगण वास्तव में हिन्दी भाषा का कुम्भ ही था । मंचासीन अतिथियों ने इस अभूतपूर्व आयोजन की मुक्त कंठ से प्रसंशा की । बच्चों, अभिभावकों एवं शिक्षकों ने इसे खूब सराहा । इस अवसर पर सम्मानित होकर सभी छात्र एवं उनके शिक्षक स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे थे।

भारतीय भाषाओं की नई पौध को सींचने की कड़ी में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से हिन्दुस्तानी भाषा

अकादमी द्वारा बुधवार, 4 मार्च 2020 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विशाल प्रांगण में दिल्ली प्रदेश के भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्रों एवं उनके भाषा शिक्षकों के सम्मान में 'मेधावी छात्र एवं शिक्षक सम्मान समारोह' का आयोजन सम्पन्न किया गया । समारोह में दिल्ली प्रदेश के 115 विद्यालयों के 3500 छात्र, 350 भाषा शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों, साहित्यकारों, विद्वत जनों एवं पत्रकारों की गरिमामयी उपस्थिति रही । समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य-सचिव, डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी उपस्थित थे । दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित हँसराज कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की । विशिष्ट अतिथि के रूप में हिन्दी अकादमी, दिल्ली के सचिव डॉ. जीतराम भट्ट, फिजी दूतावास के परामर्शदाता श्री नीलेश रोनिल कुमार तथा हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष, श्री सुधाकर पाठक जी मंचासीन थे । दीप प्रज्ज्वलन एवं सामूहिक राष्ट्रगान से कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ हुआ ।

अपने स्वागत उद्बोधन में श्री सुधाकर पाठक ने विशाल जन समूह को संबोधित करते हुए कहा कि भाषिक विविधता और भाईचारा ही भारतीय संस्कृति की मूलभूत विशेषता है । निज भाषा के प्रति जिम्मेदारी का बोध होना ही हर भारतीय नागरिक का कर्तव्य है । भारतीय भाषाओं के इन्हीं नवांकुरों को संरक्षित करने के उद्देश्य से अकादमी प्रत्येक वर्ष इस तरह का आयोजन करती है जो भाषाओं की नींव को और भी मजबूत करता है । दिल्ली में तीसरी बार इस तरह का आयोजन सम्पन्न किया जा रहा है और इसके सकारात्मक और सुखद परिणाम देखने को मिल रहे हैं । इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य-सचिव, डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी ने समारोह में उपस्थित विविध भाषाओं के छात्रों, शिक्षकों एवं अभिभावकों को एक ही प्रांगण में किसी सुंदर पुष्प माला की तरह एकत्रित होते हुए देख अपने उद्बोधन में कहा कि भाषाओं के संवर्धन के लिए यह एक बहुत महत्त्वपूर्ण आयोजन है जहाँ दिल्ली प्रदेश के 3500 मेधावी छात्रों का विशाल समागम, जिन्होंने अपनी भाषा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत किया है कि अपनी भाषाओं को लेकर वे और उनके शिक्षक तथा उनके विद्यालय कितने चिंतित हैं । वहीं, अपनी भाषा में शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करना अपने आप में पूरे विश्व के लिए एक मिशाल है । यह केवल दिल्ली प्रदेश का ही नहीं, पूरे भारत का ही नहीं बल्कि वैश्विक चमत्कार है । अकादमी के कार्यों की सराहना करते हुए उन्होंनें कहा कि जब हम अपनी मातृभाषा के लिए इतने सजग होकर काम करते हैं तभी देश की उन्नति होती है और यदि हमें भारत को विश्व के श्रेष्ठतम स्थान पर पहुंचाना है तो भारतीय भाषाओं का सम्मान करना होगा । आने वाले वर्षों में हमारे भाषा के प्रति गौरव और सम्मान प्राप्त करना हो तो हमें हमारे विद्यालयों में इसी तरह उत्साहवर्धक कार्य करने होंगे । मंचासीन अतिथियों द्वारा 10 वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में हिन्दी एवं संस्कृत विषय में शत प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले 49 मेधावी छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' से विभूषित किया गया, शेष छात्रों को जिन्होंने भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, उर्दू, गुजराती आदि) में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किये थे उन्हें 'भाषा दूत सम्मान' से सम्मानित किया गया । सर्वाधिक प्रविष्टियाँ भेजने पर कुलाची हँसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली को 'भाषा प्रहरी सम्मान' से सम्मानित किया गया । इस अवसर पर अकादमी द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'हिन्दुस्तानी भाषा भारती' एवं अकादमी की अब तक की यात्रा को समेटे 'यात्रा अनवरत...' पुस्तिका का लोकार्पण भी किया गया ।

विद्यालय स्तर पर छात्रों एवं शिक्षकों को अपनी भाषा से जोड़ने के उपक्रम में अकादमी द्वारा एक तरह का भाषाई वातावरण बनाया जा रहा है, जिससे भारतीय भाषाओं के शिक्षकों का डगमगाया हुआ सम्मान उन्हें दोबारा मिल सके । जहाँ पहले भारतीय भाषाओं के प्रति छात्रों, अभिभावकों, विद्यालय प्रबन्धन समिति एवं अन्य शिक्षकों की सोच दोयम दर्जे की थी, अब उसमें धीरे-धीरे सही, एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है । इसी तरह युवा पीढ़ी को अपनी भाषा से जोड़ने और राजभाषा हिन्दी के प्रति उनके चिंतन और विचारों को जानने के उद्देश्य से हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर एक दिवसीय अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था । इस प्रतियोगिता को प्राथमिक चरण और निर्णायक चरण करके दो खंडों में विभाजित किया गया था । प्राथमिक चरण के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय के तीन अलग-अलग केन्द्रों में अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता के लिए श्याम लाल कॉलेज, श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स और श्री वेंकटेश्वर कॉलेज को केन्द्र बनाया गया था । इस योजना के अंतर्गत प्रथम आयोजन शुक्रवार, 9 सितम्बर, 2022 को श्याम लाल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ । इसी तरह द्वितीय आयोजन शनिवार, 10 सितम्बर, 2022 को श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ । 'अंतर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता' का तृतीय (अंतिम) आयोजन शनिवार, 17 सितम्बर, 2022 को श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के सभागार में सम्पन्न हुआ । इस पूरी प्रक्रिया में विभिन्न कॉलेजों से आए हुए पंजीकृत प्रतिभागियों ने बड़े अनुशासन के साथ अपने-अपने चयनित विषयों पर ओजपूर्ण भाषण प्रस्तुत किए। तीनों केन्द्रों से निर्णायक मण्डल द्वारा कुल 30 (10+10+10) श्रेष्ठ वक्ताओं को निर्णायक चरण (फाइनल राउंड) के लिए चयनित किया गया । चयनित वक्ताओं को निर्णायक चरण के लिए शनिवार, 24 सितम्बर, 2022 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सम्वेत सभागार में आमंत्रित किया गया । चार सत्रों में आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन एवं परिचर्चा सत्र में डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी, सदस्य सचिव, श्री आनंद कुमार मिश्रा, उपायुक्त, दिल्ली पुलिस, श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक, माइक्रोसॉफ्ट, डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेई,

वरिष्ठ साहित्यकार, श्री अजीत कुमार, निदेशक एवं प्रभारी, राजभाषा, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष सुधाकर पाठक मंचासीन थे । अपने स्वागत वक्तव्य में श्री सुधाकर पाठक ने 'भाषा महोत्सव' की परिकल्पना, उद्देश्य और इसकी पूरी प्रक्रिया की विवेचना की । उन्होंने कहा कि साहित्यिक एवं शैक्षिक जगत में यह एक अनूठा प्रयोग है, जिसके माध्यम से हम विश्वविद्यालय स्तर पर नई पीढ़ी को अपनी भाषा से जोड़ने का बाल प्रयास कर पा रहे हैं । अपने आधार वक्तव्य में डॉ. सच्चिदानंद जोशी जी ने कहा कि युवाओं के बीच भाषा महोत्सव जैसे आयोजन का होना भविष्य की संभावनाओं की खोज है । डॉ. लक्ष्मीशंकर बाजपेई ने 'भाषा, साहित्य, संस्कृति और युवा' विषय पर, बालेंदु शर्मा दाधीच ने 'प्रौद्योगिकी के मोर्चे पर हिंदी' तथा आनंद कुमार मिश्रा ने 'युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण और रोजगार में हिन्दी की भूमिका' विषय पर अपने सारगर्भित उद्‌बोधन से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई ।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र (भाषण प्रतियोगिता एवं पुरस्कार वितरण सत्र) में मंचासीन विशिष्ट अतिथियों के रूप में श्री दीपक दुबे, अध्यक्ष यू.पी.कल्चरल फोरम, डॉ. धनेश द्विवेदी, उप संपादक, राजभाषा, गृह मंत्रालय, डॉ. जीतराम भट्ट, सचिव, हिंदी अकादमी, दिल्ली, श्री सुधाकर पाठक, अध्यक्ष, हिंदुस्तानी भाषा अकादमी उपस्थित थे । निर्णायक मण्डल के रूप में डॉ. ज्योत्सना शर्मा, संपादक, राज्यसभा सचिवालय, डॉ. हेमा द्विवेदी, शिक्षाविद्, डॉ. रामकिशोर यादव, एसोसिएट प्रोफेसर, श्री वेंकटेश्वर महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय उपस्थित थे । अन्तर-महाविद्यालय भाषण प्रतियोगिता के प्राथमिक चरण के अंतर्गत चयनित 30 श्रेष्ठ वक्ताओं के बीच हुए अन्तिम चरण की भाषण प्रतियोगित में सुश्री विशाखा, कालिंदी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय को प्रथम स्थान, श्री अभ्युदय कुमार मिश्र, आत्म राम सनातन धर्म महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय को द्वितीय स्थान और श्री मनीष कुमार झा, आई. एम. एस. लॉ कॉलेज, नोएडा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ । विजेताओं को क्रमशः नकद पुरस्कार राशि 3100/-, 2100/-, 1100/- के साथ प्रमाण-पत्र, स्मृति चिन्ह और पुष्प गुच्छ भेंट किए गए । 4 से 10 श्रेणी में आने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र और स्मृति चिन्ह तथा शेष 20 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं मैडल देकर सम्मानित किया गया । प्राथमिक चरण की प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करने वाले छात्रों को सहभागिता प्रमाण-पत्र भेंट किए गए ।

इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए बुधवार, 28 सितम्बर, 2022 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा सम्वेत सभागार में हिन्दी पखवाड़े के समापन के अवसर पर सांस्कृतिक समारोह का भव्य आयोजन किया गया था । समारोह में लोकनृत्य, भाव नृत्य, काव्य-वाचन, सामूहिक गीत प्रस्तुति, सामूहिक नृत्य नाटिका, नुक्कड़ नाटक आदि जनचेतनामूलक कार्यक्रम सम्मिलित थे । एक्टर, मॉडल, नृत्यांगना, सामाजिक कार्यकर्ता जिन्होंने कई टीवी चैनलों में काम किया है, 15 शॉर्ट फिल्म, 600 से ज्यादा स्टेज शो, IFTV की ब्रांड एंबेसडर सहित 350 से ज्यादा अवार्ड जीतने वाली 12वीं कक्षा की छात्रा सुश्री वान्या सिंह ने बिरजू महाराज के गायन पर नृत्य प्रस्तुत कर सबको मंत्रमुग्ध किया । अर्वाचीन इंटरनेशनल स्कूल, दिलशाद गार्डन, दिल्ली के छात्रों द्वारा प्लास्टिक के दुष्परिणाम पर केंद्रित लघु नाटिका का मंचन किया गया तथा छात्र अंशुल शर्मा द्वारा 'रश्मिरथी' का स-स्वर पाठ किया गया । इसी तरह ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल, नारायणा विहार, दिल्ली द्वारा हिन्दी की दुर्दशा पर नुक्कड़ नाटक एवं सामूहिक गान प्रस्तुत किया गया । विभिन्न विद्यालयों से सु-सज्जित परिधानों में आए हुए नाटक मण्डली में बच्चों का जोश और उत्साह देखते ही बनता था । बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए पर्यावरण संरक्षण पर लघु नाटिका ने दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचा । समारोह में गीत एवं नाटक विभाग, भारत सरकार के कलाकारों द्वारा भारतवर्ष के विभिन्न लोकनृत्य प्रस्तुति ने सभागार में चार चाँद लगा दिया । विभिन्न समुदायों की वेश-भूषा में सु-सज्जित कलाकारों की मनमोहक प्रस्तुति भारतीय लोक संस्कृति, सभ्यता, लोक कला और राष्ट्रप्रेम का अद्‌भुत संगम था । इस अवसर पर हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक द्वारा बच्चों एवं शिक्षक प्रतिनिधियों को प्रमाण-पत्र, स्मृति चिन्ह एवं मेडल्स भेंट कर सम्मानित किया गया ।

हिन्दी पखवाड़े को निरंतरता देते हुए दो दिवसीय (26-27 सितम्बर, 2023) सांस्कृतिक समारोह सफलतापूर्वक आयोजित किया गया । कार्यक्रम का उद्‌घाटन 26 सितम्बर, 2023 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की ओर से श्री अजीत कुमार, निदेशक एवं प्रभारी (राजभाषा) तथा हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । सांस्कृतिक कार्यक्रम के पहले दिन संगीत एवं नाटक विभाग के कलाकारों द्वारा देश के विभिन्न प्रांतों के लोक नृत्यों को प्रस्तुत किया गया । पारम्परिक वेशभूषा में सजे-धजे कलाकारों ने पंजाबी, हरियाणी, गुजराती, मराठी, हिमांचली आदि राज्यों की सांस्कृतिक संवृद्धि को प्रस्तुत किया । इस बहुभाषी लोक नृत्य को दर्शकों ने खूब सराहा । इस अवसर पर श्री अजीत कुमार ने उपस्थित दर्शकों को हिन्दी दिवस की शुभकामना देते हुए कहा, कि हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी भाषा के प्रोत्साहन एवं राष्ट्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है । सांस्कृतिक समारोह के दूसरे दिन का शुभारम्भ भी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया । विशिष्ट अतिथि के रूप में जेल सुधारक एवं मीडियाकर्मी डॉ. वर्तिका नंदा, डॉ. जीतराम भट्ट एवं सुधीर लाल, प्रभारी, कलानिधि, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र मंचासीन थे । कार्यक्रम में दिल्ली प्रदेश के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों की उपस्थिति शोभायमान थी ।

हंसराज महाविद्यालय की छात्रा सुश्री शार्वी शर्मा द्वारा सरस्वती वंदना नृत्य से सांस्कृतिक कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। लखनऊ से पधारे बाँसुरी वादक श्री मुकेश कुमार 'मधुर' की बाँसुरी वादन ने सभागार में उपस्थित सभी को मंत्रमुग्ध किया। बालकवि जश्न महाला और अंशुल शर्मा ने भी अपनी बेजोड़ प्रस्तुति से सभी का ध्यान आकृष्ट किया। डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, जसोला विहार के छात्रों ने देशभक्तिपूर्ण सामूहिक गीत प्रस्तुत किया तो अर्वाचीन इंटरनेशनल स्कूल, दिलशाद गार्डन के छात्रों ने साइबर क्राइम पर केंद्रित नुक्कड़ नाटक और माउंट कार्मेल स्कूल, द्वारका के छात्रों ने पर्यावरण पर केन्द्रित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। हंसराज महाविद्यालय के छात्रों ने विभिन्न शास्त्रीय नृत्यों की प्रस्तुति से सभी को मोहित किया। संगीत एवं नाटक विभाग के कलाकारों ने भी विभिन्न लोक नृत्यों से समारोह में चार चाँद लगाये। इस अवसर पर काव्य पाठ का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का समापन श्री अजीत कुमार, श्री जीतराम भट्ट एवं सुधाकर पाठक के हाथों से सहभागिता करने वाले विद्यालयों, छात्रों, शिक्षकों एवं कवियों को पुरस्कार वितरण एवं सम्मान अर्पण करके किया गया। छात्रों को सम्मानस्वरूप नकद पुरस्कार राशि, सम्मान-पत्र, स्मृति-चिन्ह एवं मेडल्स भेंट किए गए।

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी अपने सीमित संसाधनों के द्वारा भाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के साथ-साथ स्तरीय साहित्य के प्रकाशन, अनुवाद और संवर्धन के क्षेत्र में भी कार्य कर रही है। नए लेखकों और युवा पीढ़ी के साहित्यकारों को मंच प्रदान करने और उनके साहित्यिक चिंतन को मुख्यधारा के साहित्य से जोड़ने का उपक्रम भी कर रही है। इसी योजना के अंतर्गत युवा कवि, लेखक और अनुवादक श्री राजकुमार श्रेष्ठ द्वारा सुधाकर पाठक जी की पुस्तक 'जिन्दगी कुछ यूँ ही' का नेपाली अनुवाद 'जिन्दगी केही यस्तै' और वरिष्ठ कथाकार सुरेखा जी की गद्य प्रकाशित 'प्रतिनिधि कहानियाँ' का लोकार्पण 8 दिसम्बर, 2018 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, कलानिधि विभाग में किया गया जहाँ भारत और नेपाल का सुन्दर मैत्री सम्मेलन देखने को मिला। इस भव्य आयोजन में हिन्दुस्तानी भाषा भारती पत्रिका के नवीनतम नेपाली विशेषांक का विमोचन भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मॉरीशस गणराज्य के राजदूत श्री जगदीश्वर गोवर्धन थे, किन्तु मॉरीशस सरकार के मंत्री समूह के आगमन के कारण समारोह में उपस्थित नहीं हो सके। उनके प्रतिनिधि के रूप में दूतावास के प्रथम सचिव श्री उमेश सुखमनी जी उपस्थित हुए। विशिष्ट अतिथियों में डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, श्री होम प्रसाद लुइटेल, सांस्कृतिक सलाहकार, नेपाल दूतावास, दिल्ली और उमाकांत आचार्य थे। स्वागत वक्तव्य डॉ रमेश चन्द्र गौड़, विभागाध्यक्ष, कलानिधि ने दिया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. धनेश द्विवेदी ने किया। श्री राजकुमार श्रेष्ठ ने बड़े प्रभावशाली अंदाज में अनुवादक की भूमिका पर सारगर्भित विचार रखते हुए खास मोहक अंदाज में पुस्तक की एक कविता का दोनों भाषाओं में काव्यपाठ किया।

अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं को सीखने के लिए अनुकूल वातारण बनाने और भाषाई सौहार्द विकसित करने के उद्देश्य से 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार' एवं 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, दिल्ली' के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में बुधवार, 6 दिसम्बर, 2023 को तालकटोरा स्टेडियम में 'भारतीय भाषा उत्सव' के अंतर्गत भारतीय भाषाओं के 'मेधावी छात्र एवं भाषा गौरव शिक्षक सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन किया गया। इस विहंगम सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राष्ट्रपति माननीय राम नाथ कोविन्द जी तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री माननीया श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी की गरिमामयी उपस्थित थीं। अन्य विशिष्ट अतिथियों के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानन्द जोशी, डॉ. अजीत कुमार, निदेशक (रा.भा.) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के अध्यक्ष श्री सुधाकर पाठक मंचासीन थे। मंचासीन अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं सामूहिक राष्ट्रगान द्वारा कार्यक्रम का विधिवत रूप से शुभारम्भ किया गया।

चार सत्रों में विभाजित कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में अपने स्वागत वक्तव्य में सुधाकर पाठक जी ने कहा कि छात्रों को भारतीय भाषाओं की जानकारी देने, अन्य भारतीय भाषाएँ सीखने के लिए प्रोत्साहित करने और भारतीय भाषाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को मजबूती देने के उद्देश्य से शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने पिछले वर्ष 2022 में भारतीय भाषाओं के महत्त्व पर जोर देने के लिए गठित भारतीय भाषा समिति की सिफारिशों के बाद प्रत्येक वर्ष 11 दिसम्बर को 'भारतीय भाषा दिवस' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की थी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने देश के सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को चिठ्ठी लिखकर निर्देश दिया था कि उत्तर-दक्षिण के सेतु के नाम से प्रसिद्ध महाकवि सुब्रह्मण्यम भारती की जयंती के अवसर पर स्कूलों और कॉलेजों में 11 दिसम्बर को भारतीय भाषा दिवस मनाया जाएगा। सरकार द्वारा घोषित 'भारतीय भाषा दिवस' का यह दूसरा संस्करण है और इस दिवस की महत्ता और उदेश्यों को देखते हुए संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी के कार्यों को रेखांकित किया है, साथ ही इस भव्य आयोजन में अकादमी को विशेष योगदान के रूप में जोड़ा है। हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी पिछले सात वर्षों से बोर्ड परीक्षा में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी छात्रों और उनके भाषा शिक्षकों को सम्मानित करती आ रही है। अकादमी के इस महत्त्वपूर्ण वार्षिक आयोजन का उद्देश्य सभी भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार और उन्नयन करना है। प्रत्येक आयोजन में भारतीय भाषाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों की संख्या में गुणात्मक

परिवर्तन देखने को मिला है । अब तक के आयोजन में इस सम्मान समारोह ने शैक्षिक, साहित्यिक एवं अकादमिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है । अपनी मातृभाषा को लेकर समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है । जिस तरह से छात्रों, शिक्षकों, विद्यालयों, अभिभावकों ने इस तरह के आयोजन को सराह है उससे हमारा हौसला और बुलन्द हुआ है ।

इ.गाँ.रा. कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने अपने आधार वक्तव्य में कहा कि भारतीय भाषाओं को लेकर यह अब तक का सबसे महत्त्वपूर्ण आयोजन है । आज इस सभागार में वे सभी विद्यार्थी उपस्थित हैं, जिन्होंने भारतीय भाषाओं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं । इनमें से बहुत से विद्यार्थी ऐसे भी हैं, जिन्होंने 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि जब भी भाषा की बात आती है, भाषा के सम्मान की बात आती है, तो अक्सर ऐसे लोगों का सम्मान किया जाता है, जो कॉलेजों में पढ़ाते है, विश्वविद्यालयों में पढ़ाते हैं या भाषा पर किताब लिखते हैं । यह संभवत अपने आप में अनूठा उदाहरण है, जिसमें हम उन शिक्षकों को सम्मानित कर रहे हैं, जिन्होंने विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों को प्रेरित कर भाषा की ओर काम करने के लिए अग्रसर किया है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में संस्कृति एवं विदेश राज्य मंत्री श्रीमती मीनाक्षी लेखी ने कहा कि जब कोई बच्चा जन्म लेता है, तो वह कोई भाषा नहीं जानता । वह सबसे पहली भाषा वही सीखता है, जो उसकी माँ उसे सिखाती हैं । इसीलिए उसे मातृभाषा की संज्ञा दी गई है । उन्होंने कहा कि विदेशों में भारतीय भाषाओं को सिखाया जा रहा है । सबसे अनूठी बात यह है कि देश-दुनिया में भारतीय भाषाओं के प्रति रूझान बढ़ा है । हमारी भाषाएँ बहुत प्राचीन हैं, जिन्होंने हमारी युवा पीढ़ी को जोड़ने का काम किया है । हमें अपनी भाषा को बढ़ावा देना होगा, तभी भाषायी गुलामी की जंजीरे टूटेंगी । भाषा वह माध्यम है जिससे कोई भी समाज अपना ज्ञान, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुँचाता है ।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में भारतीय भाषाओं के मेधावी छात्रों और भाषा शिक्षकों को देखकर मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हो रही है । इतना विराट, विशाल और वैभवशाली भारत आज मेरे सामने है। इस विहंगम दृश्य को देखकर कौन मुग्ध और मोहित नहीं होगा । मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आज माली और फूल एक साथ बैठे हैं । शिक्षक के रूप में आप सभी गुरूजन माली और शिष्यों के रूप में उपस्थित सभी फूल हैं । मैं इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र एवं हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी द्वारा देश के भविष्य और देश के भावी निर्माताओं को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित करने हेतु भारतीय भाषा उत्सव आयोजित करने के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ । हमारे व्यक्तित्व के निर्माण में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है । सचमुच भाषा हमें गढ़ती हैं और अपनी मिट्टी से जोड़ने का काम भी करती है । भारत केवल प्राचीन सभ्यता के लिए ही नहीं, अपितु अपनी संस्कृति और भाषाई संस्कृति के लिए भी जाना जाता है । भाषा ही हमारे भीतर आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन का विकास करती है । हमें संस्कारित करने के साथ मानवीय मूल्यों और मान्यताओं से भी जोड़ती है ।

इस वर्ष सम्मान समारोह में दिल्ली एवं गुरुग्राम के प्रतिष्ठित 268 विद्यालयों 8166 मेधावी छात्रों को 'भाषा दूत सम्मान', शत प्रतिशत (100%) अंक प्राप्त करने वाले 145 मेधावी छात्रों को 'भाषा रत्न सम्मान' एवं 9 भारतीय भाषाओं (हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, तमिल, गुजराती, सिन्धी और उर्दू) के 742 भाषा शिक्षकों को 'भाषा गौरव शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया । अपने-अपने विद्यालयों की बर्दी में सु-सज्जित छात्रों और शिक्षकों की उपस्थिति से ऑडिटोरियम शोभायमान था और लगभग 10,000 लोगों से भरा हुआ ऑडिटोरियम का यह दृश्य अपने आप में बहुत अद्‌भुत और अप्रतिम था ।

भारतीय भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन और प्रचार-प्रसार करने को संकल्पित और प्रतिबद्ध 'हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी' की 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र' के साथ अब तक की सहयात्रा सुखद और उद्देश्यपरक रही है । इतने वर्षों के लम्बे अनुभव को एक आवरण कथा में सहेजते हुए कुछ जरूरी सूचनाएँ और घटनाएँ अवश्य छूटे होंगे । इस अनवरत यात्रा में हमें अनेक लोगों का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, उनके प्रति हम आभारी हैं । आगामी दिनों में भी भारतीय भाषाओं के उन्नयन की दिशा में कुछ महत्त्वपूर्ण और गम्भीर कार्यों को करने का संकल्प लेते हुए हम इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के साथ अब तक किए गए आयोजनों की मधुरिम स्मृति को सहेजते हुए भविष्य के साथ सहयोग, समभाव और मार्गदर्शन के लिए पूर्ण आशावादी हैं ।

-राजकुमार श्रेष्ठ
संयुक्त सम्पादक
हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

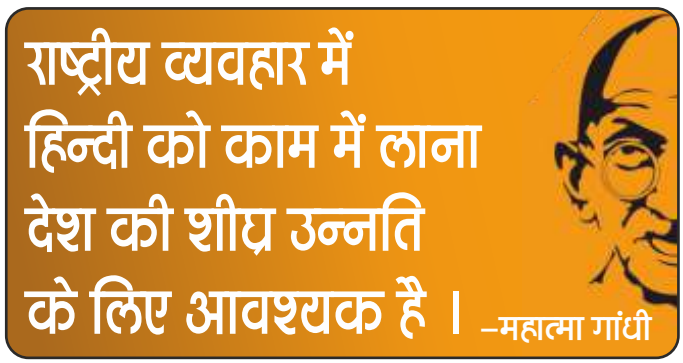

वयोधर्म

मारकण्डेय शारदेय

परिभाषाएँ बदलती रही हैं। पहले देश का अर्थ एक महानदी से दूसरी महानदी के भीतर का ही क्षेत्र विशेष था।मान लिया कि हम पटना में रहते हैं तो गंगा पार दूसरा देश और सोनपार दूसरा देश हुआ। परन्तु; आज एक शासन-संविधान एवं एक राष्ट्रीय ध्वज से सम्बन्धित है। अब इतना बड़ा बिहार भी एक देश नहीं; बल्कि केन्द्रीय सरकार के अधीनस्थ सारे प्रान्तों में से एक है। ऐसे सभी प्रान्तों तथा केन्द्र-शासित राज्यों को मिलाकर भारत एक देश है।पहले जिसे हम देश विशेष की भौगोलिक व सांस्कृतिक वैशिष्ट्य जानते थे, वह आज क्षेत्रविशेष के नाम से अभिज्ञेय है।

हमारा जीवन चांचल्यमान है। भारतीय जीवन-पद्धति बहुत स्वाभाविक है, पर समय तो सदा स्वाभाविक नहीं रहता है न! ऐसे में तालमेल की जरूरत होती है।पहले हम क्षेत्र विशेष से अधिक सम्बद्ध थे और अब विश्व के कोने-कोने तक को अपना बनाए हुए हैं।इस स्थिति में तकनीकों के जरिये भले प्रतिकूलताओं में अनुकूलताएँ बो रहे हों, पर भौगोलिक परिस्थितियों के साथ लड़कर जीत पाना कठिन होता है।

हमारी संस्कृति समन्वयी है। यह विकल्पों के दरवाजे सदा खुली रखती है। इस कारण रूढ़ियाँ गलती रहीं। कई प्राचीन मान्यताएँ कालकवलित होती गईं और नई-नई मान्यताएँ प्रतिष्ठित होती गईं। आज सामुद्रिक यात्रा, पर्वतों पर गमन दोष नहीं, विदेश जाना भी गौरव की बात है। इसलिए जिस देश-काल से सम्बद्ध रहे, वह स्थायी नहीं। ऐसे में मध्यम मार्ग से अपना सबकुछ बनाए, बचाए चलना होगा। अपने वेदों, स्मृतियों, ऋषि-मुनियों के जीवनोपयोगी मूल्यों को मूल्यवान बनाए रखना होगा।इससे हमें या किसी को हानि नहीं, बल्कि लाभ-ही-लाभ है।हम स्वस्थ, सानन्द, ऊर्जावान एवं उन्नतिमान हो मानवता के प्रेरक रहेंगे।

सौभाग्य है कि हम सबसे प्राचीन और अर्वाचीन संस्कारों की उपज हैं। ऋषिपुत्र होकर भी सुविधा-जन्य लिवासों में पूजा-पाठ कर असहज नहीं होते। यह हमारा गुण ही है।फिर भी; आज सबसे अधिक आवश्यक है, अपनी संस्कृतिक पहचान बचाना। इसके लिए नींव से मंजिल तक पर ध्यान केन्द्रित करना अत्यावश्यक है। हमारे यहाँ कहा गया है-

'कौमारं पंचमाब्दान्तं पौगण्ड्यं दशमावधि।
कैशोरम् आपंचदशात् यौवनं च ततः परम्'।।

पुनश्च,

'आषोडशाद् भवेद् बालः तरुणः तत उच्यते।
वृद्धः स्यात् सप्ततेः ऊर्द्धवं वर्षीयान् नवतेः परम्'।।

आशय यह कि बाल, पौगण्ड, किशोर, युवा एवं वृद्ध; ये ही हमारी पाँच प्रमुख अवस्थाएँ हैं और इन्हीं में अपने आचारों को पिरोते चलने से वेदरक्षा होगी। एतदर्थ अवस्था के अनुरूप मेरा कुछ सुझाव हैं। तद्यथा :

1. कौमार अवस्था (5 वर्ष तक)

यह प्रारम्भिक अवस्था है, यानी अबोध अवस्था है; अतः इस समय शिशु-संस्कार के लिए शिशुक्रीड़ा, शिशुकथा, शिशुगीत, शिशु-संस्कारक आचार (बड़ों का चरणस्पर्श, पूज्य प्रतिमाओं के समक्ष सिर झुकाकर हाथ जोड़ना आदि) एवं स्मरण कराने योग्य कुछ संस्कृत-श्लोक उपयुक्त हो सकते हैं। खासकर-

1. गायत्री मन्त्र (ऊँ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।धियो यो नः प्रचोदयात्।),

2. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।,

3. मा निषाद प्रतिष्ठां त्वम् अगमः शाश्वती समाः।
यत् क्रौंच-मिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम।

हाँ, योग में आनेवाले सिद्धासन, पद्मासन, सिंहासन तथा भद्रासन-जैसे मुख्य आसनों का अभ्यास भी कराया जा सकता है।

पुनः अपने सातों दिनों (रविवार, सोमवार....) तथा बारहों (चैत, वैशाख...) महीनों से परिचित कराना भी आवश्यक है।

2. पौगण्ड अवस्था (6 से 10 वर्ष तक)

इस समय हमारी समझ बहुत हो जाती है। पारिवारिक सम्बन्धों की अच्छी पकड़ हो जाती है। मुहल्ले-टोले, नगर-गाँव, जिला-प्रदेश, देश से भी कमोवेश परिचित होने लगते हैं। हम विद्यार्थी बन प्राथमिक विद्यालयों के छात्र रहते हैं। विविध पाठ्य-पुस्तकों में स्वयं को लगाना होता है। हमें परीक्षाओं में भी सम्मिलित होना पड़ता है। ऐसे में बाल कथाएँ (हितोपदेश की कहानियाँ भी), बालगीत, बालक्रीडा के साथ-साथ आचारों का विस्तार भी आवश्यक हो जाता है। सांस्कृतिक धरोहरों की पहचान रखना, जागरणोत्तर करदर्शन (कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती। करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम।।), पृथ्वी-वन्दन (समुद्र-वसने देवि पर्वत-स्तन-मंडिते। विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।), पंचदेवताओं (विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य, दुर्गा) का परिचय के साथ ही उनके वन्दन से सम्बन्धित प्रमुख श्लोकों का स्मरण करना है। चारों वेदों का नाम तो याद रखना ही है, एकश्लोकी रामायण भी याद रखना होगा-

'आदौ राम- तपोवनादि- गमनं हत्वा मृगं कांचनम्,
वैदेही- हरणं जटायु- मरणं सुग्रीव-सम्भाषणम्।

वाली-निर्दलनं समुद्र- तरणं लंकापुरी- दाहनम्,
पश्चाद् रावण- कुम्भकर्ण हननम् एतद् हि रामायणम्'।।

हाँ, इन पाँच वर्षों में धीरे-धीरे अपनी तिथियों और नक्षत्रों से परिचित भी हो जाना है।

सामान्य क्रीडा-व्यायाम के अतिरिक्त अष्टांग योग में प्राणायाम का अभ्यास आवश्यक है।

पंचदेवताओं की प्रमुख स्तुतियाँ-

सशंख-चक्रं सकिरीट-कुण्डलं सपीत-वस्त्रं सरसिरुहेक्षणम्।
सहार- वक्षःस्थ-कैस्तुभ-श्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।।

2. शिवस्तुति

कर्पूर-गौरं करुणावतारं संसार-सारं भुजगेन्द्र-हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी-सहितं नमामि।।

3. गणेश- स्तुति

गजाननं भूतगणादि-सेवितम् कपित्थ-जम्बूफल-चारु-भक्षणम्।
उमासुतं शोक-विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वर-पादपंकजम्।।

4. सूर्यस्तुति-

ध्येयः सदा सवितृ-मंडल-मध्यवर्ती, नारायणः सरसिजासन- सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकर-कुंडलवान् किरीटी हारी हिरण्यमय-वपुः धृत-शंखचक्रः।।

5. देवीस्तुति-

देवि प्रपन्नार्ति-हरे प्रसीद, प्रसीद मातः जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।

3. किशोर अवस्था (11 से 15 वर्ष तक)

इस समय शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास उत्थान पर रहता है। मन अधिक वेगवान रहता है।हम मध्य से उच्च विद्यालय के छात्र होते हैं। नाना मानसिकता एवं पारिवारिक परिवेश के हमउम्र दोस्त-दुश्मन होने लगते हैं।लैंगिक उद्दीप्ति भी आती है। बच्चियों में स्त्रीत्व तथा बच्चों पुंस्त्व उभरने लगता है। किंकर्तव्य-विमूढ़ होना स्वाभाविक है। ऐसे में ऐसे मार्गदर्शी की आवश्यकता होती है, जो बाहर से अंतरंग मित्र तथा भीतर से प्रवीण गुरु हो। प्रवाहमान नदी की धारा रोकने से जैसे बिजली पैदा होती है, वैसे ही इनपर दबाव क्षोभ पैदा करनेवाला होता है। फिर भी क्रमिक प्रशिक्षण चलता रहा और मनोविज्ञान के सहारे दिशा निर्देश होता रहा तो भटकाव की सम्भावना कम होती है।

पाँच वर्षों का यह भी कालखण्ड है। इस समय यम-मन, वाणी एवं कर्म से अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं करना), ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह (अनावश्यक वस्तुओं को बिटोरे रखने की अपेक्षा जरूरतमन्द को दे देना) का पालन, राष्ट्रप्रेम, प्रकृतिप्रेम से सम्बन्धित कविताएँ-गीत, कर्तव्य-पारायणता, परोपकार, मानवीय संवेदनाओं, सम्बन्धों की पवित्रता आदि से सम्बन्धित प्रेरक आख्यान, कहानियाँ (पंचतन्त्र की कहानियाँ भी), महापुरुषों की जीवनियाँ एवं वीरगाथाएँ उपयोगी होंगी।

अब प्रातःस्मरणीय श्लोक, ईश्वर की एकता में अनेकता, अवतारवाद, नवधा भक्ति, प्रमुख देवी-देवताओं की परिचय के साथ वन्दना, प्रमुख दस उपनिषदों के नाम के साथ यथासम्भव संक्षिप्त परिचय, वेदांगों (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष) का संक्षिप्त परिचय भी उपयुक्त होगा।

हाँ, इस समय अपने दिनों और महीनों के नाम का कारण जानना जरूरी है।

क्रीडा-व्यायामों में दौड़, कुश्ती, कबड्डी, लाठीबाजी, फुटबाल, क्रिकेट-जैसे सामूहिक-वैयक्तिक खेल भी उपयोगी हैं।

युवा अवस्था (16 वर्ष से)

यों तो 16 से 70 वर्ष तक युवा अवस्था ही मानी गई है। परन्तु; युवा के बाद प्रौढ़ (Matured) माना गया है।स्त्रियों को सोलह वर्ष तक बाला, तीस वर्षों तक तरुणी, पचपन वर्षों तक प्रौढ़ा एवं पचपन से ऊपर वृद्धा कहा गया है- 'आषोडशी भवेद्बाला तरुणी त्रिंशता मता। पंचपंचाशती प्रौढ़ा भवेद् वृद्धा ततः परम्'।। जहाँ सत्तर वर्षों तक पुरुष युवा ही माने गए, वहीं पचपन के बाद स्त्रियाँ वृद्धा। यह विभेद केवल सन्तानोत्पादकता के लिए ही मान्य है।हाँ, चरक-सुश्रुत के अध्ययन से उक्त युवावस्था को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है-

1. वर्द्धमान युवावस्था (16 से 20 वर्षों तक)

यह समय हमारे जीवन का सर्वोत्तम और आत्मविस्तार का सोपान ही नहीं शिखर भी है। 16 से 70 यानी 55 वर्षों की कालावधि को साधने का सबसे मूल्यवान समय होता है। इसे नींव की ईंट भी मान सकते हैं। इस समय हम उच्च शिक्षा की ओर अग्रसर होते हैं। तन-मन में अपर्याप्त स्फूर्ति रहती है। इस समय प्रातःस्मरणीय पुण्य श्लोक, ब्रह्मयज्ञ, शिवसंकल्पसूक्त, गणेशाथर्वशीर्ष, वाक्सूक्त, वैदिक ऋषियों के आख्यान, राष्ट्रीय महापुरुषों की जीवनी...। सप्तश्लोकी दुर्गा का पाठ भी उपयोगी होगा।

अष्टांग योग का दूसरा अंग यम के बाद नियम के अन्तर्गत आनेवाली बाहरी-भीतरी पवित्रता, सन्तोष (सुख-दुःख, लाभ-हानि में समभाव), तप (यथोपयुक्त व्रतोपवास से शरीर को सहनशील बनाना), स्वाध्याय (सत्साहित्य का अध्ययन, स्तुतिपाठ व मन्त्रजप) ईश्वर-प्रणिधान (इष्ट देवी-देवता पर अटूट विश्वास के साथ अपने कार्य को ईश्वरीय कृपा व आदेश मान करते जाना)-जैसे कृत्यों में भी प्रसन्न मन से करते जाना है।

हाँ, इस समय तिथियों एवं नक्षत्रों के नाम का कारण जान लेना चाहिए।

इस उम्र में खेले जानेवाले खेलों में भी आगे आना है और तन-मन को सुदृढ रखने के लिए उपयुक्त व्यायाम भी करते जाना है।

2. युवावस्था (21 से 30 वर्षों तक)

इस समय हम उच्चस्तरीय शिक्षा प्राप्त करते-करते घरेलू दायित्वों का निर्वाह भी करने योग्य हो जाते हैं। प्रायः जीविकोपार्जन के कार्यों में संलग्न एवं विवाहित होकर घर-बाहर से स्वयं को मजबूत करने लगते हैं। अब हम सक्षम पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय पहचान बनाने लगते हैं।

इस समय शारीरिक-मानसिक क्षमता का पूरा-पूरा उभार होता है। अत: सांस्कृतिक लगाव रहे, इसके लिए नीतिशास्त्रों का ज्ञान, रामायण, महाभारत के प्रमुख पात्रों का चारित्रिक मूल्यांकन, वेदों के स्वस्तिवाचन, अग्निसूक्त, हिरण्यगर्भसूक्त, पुरुषसूक्त, श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त, पृथिवीसूक्त, अक्षसूक्त; इन सूक्तों का अनुशीलन एवं स्मरण उपयुक्त हो सकता है। सप्तश्लोकी गीता तथा मूलरामायण का पाठ हितकर होगा। श्रीरामचरित-मानस का स्वयं शृंखलाबद्ध कर पाठ करते हैं एवं मेघदूत और ऋतुसंहार का भी आनन्द ले सकते हैं।

हाँ, इस समय सकारण ऋतुओं, ग्रहों और राशियों का सम्बन्ध जान लेना चाहिए।

सद्गुरु के निर्देशन में यम, नियम, आसन, प्राणायाम के बाद अब प्रत्याहार-सिद्धि की ओर बढ़ना है, ताकि इन्द्रियों के साथ चित्त का योग हो सके।

3. परिपक्व युवावस्था (31 से 40 वर्षों तक)

इस समय हम परिपक्व युवा होते हैं।हम किसी खास क्षेत्र के विशेषज्ञ भी हो जाते हैं। शरद् ऋतु के जलाशय-जैसा स्थिर व्यक्तित्व हो जाता है हमारा। घर-गृहस्थी सँभालना, समाज एवं राष्ट्रनिर्माण में योगदान करना, कुरीतियों-कुनीतियों को दूर करना; हमारा कर्तव्य हो जाता है।

अब हम सबल-सक्षम नागरिक हैं। संस्कृति के संवाहक भी हैं। प्रचीनता को नवीनता में ढालने योग्य हैं। इस कारण हम नित्य, नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को जानें, समझें और यथासम्भव आचरण करें। नित्य कर्मों में अभी सन्ध्योपासना, देवपूजा, प्रमुख व्रतोत्सव में तन, मन, धन से संलग्न हों। वैदिक सूक्तों में पृथिवीसूक्त, सौमनस्यसूक्त, धनान्नदानसूक्त, गृहसूक्त, कृषिसूक्त, गोसूक्त, दीर्घायुष्यसूक्त, नासदीयसूक्त का अध्ययन करें। साथ ही वात्स्यायन कृत कामसूत्र एवं चाणक्य कृत अर्थशास्त्र का अनुशीलन भी उपयुक्त रहेगा। अमरकोश से अपनी शब्द सम्पदा बढ़ाना उपयुक्त होगा। लघु सिद्धान्त-कौमुदी शब्द संस्कार में सहायक होगी।

उपयुक्त व्यायाम-क्रीडा के अतिरिक्त छठा योगांग 'धारणा' को अपनाना है, ताकि चित्त की चंचलता न बढ़े।

4. किंचित् क्षीयमाण युवावस्था (41 से 50 तक)

सन्तान के पालन-पोषण एवं शिक्षण-प्रशिक्षण के साथ-साथ जीवनमूल्यों के प्रसार का भी यह समय है।अब शारीरिक-मानसिक स्तर मध्याह्न के सूर्य की भाँति पूरी ऊर्जा बिखेरकर ढलान की ओर गतिमान होने लगता है। इस समय मुख्य उपलब्धि का संरक्षण और किसी कारणवश छूटे निर्धारित कार्यों की पूर्ति के साथ क्षेत्र विशेष में या उससे परे भी यशोवर्द्धक योगदान आवश्यक है।किशोरों, नवयुवकों को साथ ले सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना, ताकि वे भी अनुशासन एवं कार्य-संयोजन का प्रशिक्षण पा सकें।

अब नित्यकर्मों में देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ तथा अतिथियज्ञ, पूर्तकर्म (जलाशय, बाग, मन्दिर आदि से सम्बन्धित कार्य), कर्मसिद्धान्त का अनुशीलन, श्रीमद्भगवद्गीता का अनुशीलन उपयुक्त रहेंगे।

उपयुक्त क्रीडा-व्यायाम के अतिरिक्त अब ध्यान की ओर बढ़ना है।

5. क्षीयमाण युवावस्था (51 से 60 तक)

इस समय भी पारिवारिक बोझ कम नहीं होता। ऊर्जा रहती है, परन्तु तन-मन थके-थके-से रहते हैं।मन लगाने के लिए अनुकूल साहित्य का साहचर्य सुखद होगा। व्रत कथाएँ, नैमित्तिक एवं काम्य कर्मों को यथाशक्ति सम्पादन, ललित साहित्य (काव्य, नाट्य, कथा, उपन्यास आदि) का अध्ययन उपयोगी हो सकते हैं। उपयुक्त क्रीडा-व्यायाम के अतिरिक्त ध्यान का विस्तार उत्तम होगा।

6. अधिक्षीयमाण युवावस्था (61 से 70 तक)

यह समय अधिक विश्राम चाहने लगता है। पारिवारिक और आजीविका-परक जिम्मेदारियाँ कम होने लगती हैं। उपयुक्त योग साधन में समाधियोग अपनाना उत्तम रहेगा। हाँ, यथासमय भारतीय वाङ्मय के विविध पक्षों पर ऐतिहासिक अनुशीलन और विदेशी वाङ्मय के साथ तुलनात्मक दृष्टि हो तो व्यापक कार्य हो सकता है। इसमें जीवन-दर्शन मुख्य हो तो अत्युत्तम।

7. वृद्धावस्था (71 से यावज्जीवन)

यह हमारी शैथिल्यावस्था है। इस समय हम प्राय: तन-मन से कमजोर होने लगते हैं। स्मरण-शक्ति छीजती जाती है। ऐसे में यथाशक्ति मन्त्रजप, स्तुतिपाठ, आत्मचिन्तन, भक्तियोग एवं अनुभूति-प्रसार उपयुक्त होंगे। कहा भी गया है-

शैशवेभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्द्धक्ये मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।
(रघुवंश सर्ग-1)

अर्थात्, शैशवकाल में विद्या का अभ्यास, यौवन में सांसारिक सुखों का उपभोग, बढ़ापे में मुनियों का आचरण तथा अन्त्यावस्था में योगसाधना से देहत्याग। यही अवस्थाओं के अनुरूप जीवन का मूल उद्देश्य है।

पुनश्च,

प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति।। (चाणक्यशतकम्)

अर्थात्, जिसने प्रथम अवस्था में (ब्रह्मचर्य, आदि के 25 वर्षों तक) विद्योपार्जन नहीं किया, द्वितीयावस्था, यानी गृहस्थाश्रम में (25 से 50 की उम्र तक) धनार्जन नहीं किया तथा तृतीयावस्था, यानी वानप्रस्थ आश्रम में (50 से 75 की उम्र तक) पुण्य का अर्जन नहीं किया; वह चौथी अवस्था, यानी बाद के समय में क्या कर सकता है? मतलब, अब कुछ भी करना सम्भव नहीं।

अत: उपर्युक्त इन दोनों सद्वाक्यों को ध्यान में रखकर जीवन को मूल्यवान बनाना है। इससे हमें जो लाभ मिलेगा, वह तो मिलेगा ही; अगली पीढ़ी, समाज, राष्ट्र के साथ-साथ हमारी भारतीय संस्कृति को अपार लाभ होगा।' (तत्त्वचिन्तन)

-मार्कण्डेय शारदेय
(ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र विशेषज्ञ)

'भारतीय भाषा दिवस' के उपलक्ष्य में 'भारतीय भाषा उत्सव' का आयोजन के कुछ चित्र

RNI No. : DELHIN/2017/73904

हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी

(भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार और संवर्धन को समर्पित संस्था)

पंजीकृत कार्यालय : 3675, राजा पार्क, रानी बाग, दिल्ली-110034

दूरभाष : 09873556781, 09968097816

E-mail : info@hindustanibhashaakadami.com
hindustanibhashabharati@gmail.com
Website : www.hindustanibhashaakadami.com